आठवें दशक के लोग

कहानी पर केंद्रित एक चयन और

संपादक
बलराम
मनीषराय

आलेख प्रकाशन, दिल्ली

१९८५ मूल्य चालीस रुपये

रचनाधिकार सकलित लेखक
शेषाधिकार सपादक

प्रकाशक आलेख प्रकाशन
वी ८ नवीन शाहदरा
दिल्ली ११००३२

आवरण हरिप्रकाश त्यागी

मुद्रक सजय प्रिंटस
मानसरोवर पार्क
दिल्ली ११००३२

AATHAVEN DASHAK KE LOG (Short Stories)
Ed by Balram & Manish Rai

हिन्दुस्तानी चरित्रो का ससार

सवाल उठ सकता है कि इस सकलन का उद्देश्य क्या है ? उत्तर सीधा-सा है—आठवे दशक की युवा और युवतर पीढी की सही और जेनुइन रचनाशीलता की मुकम्मल तफसील और तस्वीर देने की एक विनम्र कोशिश। तब सवाल होगा कि इसकी जरूरत क्या है ? इसका उत्तर भी सीधा-सा ही है—आठवे दशक का कथाक्षितिज पिछले दशक से कही अधिक व्यापक और सघपधर्मी हुआ है जिसे सकलित कर जनमुक्ति अभियान मे साहित्य की सही भूमिका को रेखाकित करना जरूरी हो गया है। प्रस्तुत सकलन को इस जरूरत के रूप मे ही लिया जाना चाहिए। हर पीढी को सामूहिक रूप से पाठको के सामने अपना वशिष्ट्य उजागर करना पडता है, यह सकलन इसका भी एक विकल्प है।

सही और जेनुइन रचनाशीलता तथा गलत और फेक रचनाशीलता के लोग हर पीढी मे होते आये है और उन्हे हतोत्साहित और प्रोत्साहित करनेवाले लोग भी होते आये है पर समय ने हमेशा सही और जेनुइन रचनाशीलता का ही वरण किया है। युवा पीढी समय की इस निर्णायक शक्ति से वाकिफ है, उसे सिर्फ और सिर्फ उसी पर भरोसा है।

युवापीढी अपनी रचनाशीलता की खामियो और खूबियो से भी परिचित है। अपने अगले कदम के लिए वह आत्मालोचना और पुनर्परीक्षण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। सकलित रचनाकारो के यहा प्रस्तुत आलेख उस प्रक्रिया के सकेत बिंदु है।

बहरहाल, रचनाओ की चयन प्रक्रिया मे हमने खेमो, सघो और वादो के सीमित और सकुचित बाडो से मुक्त रहने की कोशिश की है। रचनाओ के बारे मे हम कुछ नही कहना चाहते क्योकि अपनी सार्थकता उन्हे खुद प्रमाणित करनी है। हमारी कोशिश तो सिर्फ यह रही है कि हिदुस्तान के आम चरित्रो का एक वैविध्यपूर्ण ससार आपके सामने रख दिया जाए बस।

पिछले चयन में

युवा कहानीकार सबधी असगर वजाहत (वेक), अमितेश्वर (हुक्का पानी), अनिल कौशिक (दरिंदो के बीच) अरुण वर्द्धन (उत्सव), उदय प्रकाश (टेपचू) चित्रा मुद्गल (केंचुल), धीरेंद्र अस्थाना (अपनी दुनिया) बलराम (पालनहारे) मनोवराय (श्मशान स लौटत हुए) मोहर्रसिह यादव (बसेरे की ओर), रघुनाथ प्यासा (पन्ना धाय का दूसरा बेटा), राज कुमार गौतम (रिश्ते) विनोद दास (चिंदिया) नागार्क, (भूमिका) शिवमूर्ति (कसाईबाडा), सुधाकर (बेघर), सुभाष पत (इवोल्यूशन) तथा सुरेश उनियाल (योद्धा) आदि की कहानिया तथा समकालीनयुवा। लेखन पर सजीव और अब्दुल बिस्मिल्लाह के आलेख।

आठवें दशक के लोग

शुभागमन

स्वागतम्

विचार-पक्ष

छोटा टेलीफोन बडा टेलीफोन

केशव



कमरा काफी बडा था। थाने की पुरानी, लेकिन पुख्ता इमारत का एक भूमिगत हिस्सा। टाचर नैबर जैसा। अलग-थलग। भीतर रोशनी जरूर थी, लेकिन कम। एकाएक किसी को पहचानने मे दिक्कत पेश आ सकती थी।

एक तार मे फुट फुट भर फासले पर तीन चारपाइया बिछी थी। बीचवाली चारपाई नगी थी। उसका बीच का हिस्सा फश के साथ भिडा हुआ था।

कोनेवाली चारपाई के पीछे आलमारी के सामने कोई उकडू बैठा था। उसका सिर खुली आलमारी के अदर था और धड बाहर। आलमारी मे रखा सामान बिना किसी शम लिहाज के गुत्थमगुत्था था। वह शायद कुछ ढूढ रहा था। उसके हाथ तेजी स आलमारी का टटोल रह थे। कभी-कभी उसकी बडबडाहट कमरे की खामोशी मे मटर की सूखी फली की तरह खडखडा उठती थी।

मैं और मेरा दोस्त काफी देर तक दरवाजे पर खडे उसकी हरकतो म डूबे रहे और अदर ही अदर उसकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन उसकी व्यस्तता मे दरार पडने का फिलहाल कोई चिह्न नजर नही आ रहा था।

उसकी बडबडाहट तेज होती जा रही थी। बडबडाहट का कोई टुकडा दराजो से टकराकर किसी चोट खाये बाज की तरह दरवाजे की ओर झपटने लगा था।

मैंने जोर से गला खखारा। वह एकदम मेढक की तरह उछला। ऐसा

करते हुए उसका सिर वही टकराया। अरनें भैंसे की तरह उसन पीछे मुड़कर चारपाई को लात जड़ दी।

मैंने उसे पहचान लिया था। वह थानदार ही था मात्र कच्छा और बनियान पहने। कमजोर रोशनी उसकी देह के कालेपन को और भी गाढ़ा कर रही थी। अपने चोट खाये हिस्से को सहलाता वह दो कदम सरक आया।

'आप?' खामोशी के कांच पर एक हथौड़ा गिरा।

"आपने बुलाया था।" दोस्त ने सभार लिया।

'हां-हां बैठिए।' शब्द चाकू की तरह हमारी ओर लपके। थानेदार ने पीछे खूटी पर लटके पायजामे को पहनने की चेष्टा नही की और ठसका मारकर खाट पर बैठ गया। 'स्साला पकड़ा तो गया है, लेकिन उसके खिलाफ सबूत नही मिल रहा कोई।' गुस्से और खीझ का गोला तो अब गलने लगा था, पर थानेदार की आवाज लड़खड़ा रही थी। रात के नौ बजे एक थानदार की आवाज को लड़खड़ाना ही चाहिए न लड़खड़ाय तो ताज्जुब हो।

"सुना है किसी बड़े अधिकारी का बेटा है।" मैंन पासा फेंका। थानदार सकपकाया। फिर न जान क्या सोचकर चारपाई को मुक्के स पीटन लगा।

"अफसर का बेटा अफसर का बेटा" थानेदार की आवाज हिचकोले लेने लगी।

"यही तो दिक्कत है।" थानेदार का चालू मुक्का चारपाई पर स्थिर हो गया। 'आप हमारी मदद कर सकते है?'

'कैसे? दोस्त न कहा।

"आपको कोई गवाह खड़ा करना होगा।' थानदार की मूछो पर एक भेदभरी मुस्कराहट कूदने फादन लगी। हमारे कान खड़े हो गये।

"उसी एरिये से जहा से स्कूटर बरामद हुआ था। फिर तो मैं उसकी मा '

'लेकिन उस इलाके मे मैं किसी को नही जानता। फिर थाना-कचहरी के चक्कर म कोई जानबूझकर फसना भी नही चाहता।" मैंने कहा।

"यही तो दिक्कत है। मैं भी यहा के लिए अभी नया हू। पुराना इलाका

होता तो आपको तकलीफ न देता। पट्ठा दम चोरिया करके भी साड की तरह घूम रहा था।" थानेदार का घूसा हवा मे लहराया।

'इतने वडे अधिकारी का बेटा और चोरी ! बात कुछ समझ म नही आयी।" दोस्त ने कहा।

"कहता है, रात को दारू पीकर जुनून सवार होता है। गाडी चलान का जुनून हुह तो मा बहन का कैसे याद रखता है !"

"सुना है, थाने की जीप भी वही उडा ले गया था।"

"हा, ले गया था।" थानेदार ने ऐसे कहा मानो कह रहा हो, 'ले गया था। आप कर लो, जो करना है।'

"पट्ठा करता भी कमाल है। गाडी ले जाकर कभी कही सडक के किनारे 'एवडन' कर दगा, कभी किसी ढलान पर लुढका देगा।' थानेदार को हरानी हो रही थी।

"थानेदार साहब, मैंने अभी 'लान' की मुश्किल से दस किस्तें भी अदा नही की हैं और स्कूटर के नाम पर मेरे हाथ लगा है उसका पिंजर।"

"सभी तो आपके केस मे 'होप' है, पर आप भी तो टरक रहे हैं मदद के नाम से।"

"हम अफसोस है कि "

मेरे दोस्त को बीच मे ही टोकते हुए थानेदार बोला, "सब चोरिया मार रहा है अगला धडल्ले से। उसकी इस वक्त नकेल जो हमारे हाथ म है, पर कोर्ट मे मुकर गया तो फिर क्या कर लेंगे हम उसका। जज को तो सबूत चाहिए।"

"मैंने अपनी मजबूरी बता दी है।"

"वो तो ठीक है, फिर भी खैर "

तभी कमरे मे एक आदमी दाखिल हुआ, मरियल-सा लडखडाता, झूमता, गुनगुनाता। हम पर नजर पडते ही उसकी जुबान को ब्रेक लग गया। वह सहम सा गया था। उसकी गढो म धसी आखें बेहद उदास और पनीली थी। उनमे चुटकीभर रोशनी भी नही थी, हा, निडरता थी। राख की पर्तों के नीचे सुलगते कायले-जमी। और थी तिरस्कार की एक पतली तीखी लकीर। वह मलखू था। थाने के बगल वाले चौक पर छाबडी लगाता है।

कभी फ्ला की, कभी मगफ्ली की। भाव पूछने पर या कभी कुछ खरीदन की गज स मैं भी रुक जाया करता हू उसके पास। वह थोडा ऊचा सुनता है। कभी मूड मे हो तो कुछ गुनगुनाता है। ये पल उसके नितान्त निजी पल होते है। समय के बहाव के बाहर। उस वक्त गाहक कोई मानी नही रखता उसके लिए।

"पागल है।' वे कहते हैं। एक बार लोकल बस के इतजार म मैंन उससे या ही पूछ लिया, किधर के हा भाई ?'

"बाबूजी नागपुरी है नागपुरी।" उसने समझा मैं सतरा के लिए पूछ रहा हू।

"मैंन पूछा था किधर के रहनवाले हा।'

अधेरा हो चला था। इसलिए वह छाबडी समटन की तैयारी म था। मेरा सवाल सुनते ही उसके हाथ के सतर जमीन पर बिखर गये। वह कापने लगा था। उसका चेहरा एकदम राख हो गया था। मैं घबरा गया। कहा कोई आफत न खडी हो जाये लेकिन यह सब पल भर को ही हुआ था। उसन खुद को सयत कर लिया था।

पिछल पद्रह साला म यह सवाल पूछनवाले आप पहले आदमी हैं, बाबूजी।' उसन मर्माहत स्वर म कहा था। मैंने शायद अनजाने ही उसकी किसी दुखती रग को छेड दिया था। तभी बस आ गयी और मुझे उसे छोडकर जाना पडा था। अगले दिन उसन खुद ही अपनी कहानी सुना दी थी।

पद्रह साल पहले वह इस शहर म आया था। बिहार के किसी गाव स यात्न म अपना सब कुछ गवाकर। रोजी रोटी की तलाश मे। जूठे बतन माजने स लेकर रोडी कूटन तक कितन ही काम किये। एक बार सडक पर काम करत हुए एक टाग पत्थर के नीचे आ गयी। महीना अस्पताल मे रहा। टाग तो ठीक हो गयी, लेकिन उसमे लगडाव पैदा हो गया। फिर भारी काम नही होता था। हारकर यह छाबडी लगाने का धधा शुरू किया। फिर काफी दिन बीमार रहा। धधा चौपट हो गया। खाने के लाले पड गये। आमदनी का जरिया थी सिफ छाबडी। सो बीवी बैठने लगी छाबडी पर।

एक दिन रात गये तक बीवी न लौटी। वह रात भर बिस्तर पर पडा पडा बेहाल होता रहा, उठने की हिम्मत तो थी नही, दूसर दिन वह गिरता-पडता बीवी के बारे मे पूछताछ करता रहा, पर कोई सुराग न मिला हार कर थाने की शरण लेनी पडी।

"साले, छावनी लगाने के बहान पेशा कराता है।" और थानेदार ने तडातड बेंत जड दिय। कमजोरी के कारण वह वही ढेर हो गया। फिर हफ्ताभर थाने की कोठरी मे पीटने के बाद एक दिन उसे कूडे की तरह उठाकर सडक पर पटक दिया गया। यह कहकर कि उसकी बीवी अपन किसी यार के साथ भाग गयी है। उसकी बीवी का सचमुच क्या हुआ, यह तो उसे कभी पता नही चल सका, अलबत्ता तब से उसका रोज रात को थान म हाजिरी देना लाजमी हो गया, कुछ न कुछ भट लेकर।

"क्या है ?" थानेदार गरजा।

"हुजूर, आलूबुखारे हैं।" कहकर भलख ने आधा लिफाफा थानदार की नगी जाघा पर उलट दिया।

'साहब को भी दे दे।" एक आलूबुखारा मुह म रखते हुए थानदार न रौब से कहा। हमारे साहब होन के पीछे भी एक छोटी मोटी दास्तान थी, वरन कहा थानेदार और कहा हम।

स्कूटर चोरी का पता चलते ही मैं रिपोट दज करवाने गया था। "तो आपका स्कूटर चोरी हो गया है!" थानेदार न उपहास सा किया था।

"अजी य सब अपनी लापरवाही से होता है!" मुशी भी फडफडाया था। फिर कुछ पल खामोशी रही थी। थानदार और मुशी तोलते रहे कि मुर्गा वजनी है या नही।

'पहले आप सरसरी तौर पर इधर उधर देख लें। रिपोट की भी देखी जायेगी।' थानेदार ने कहा और चला गया, रह गये मैं और मुशी। मुशीजी अपन जोड तोड म पहलू बदलत मुझे कुछ एहसास कराने क चक्कर म। और मैं सीग भिडाने की इच्छा का दिमाग से निकालकर बगल मे खडा था, उगलिया चटखाता।

'लेकिन मैं कहा ढूढता फिरूगा! फिर जो ले गया है, वह सडक पर तो छोडन से रहा।" मैंने तक पेश किया।

"होगा तो ऐसे ही, साहब का हुक्म है," मुंशी बोला।

अगले दिन हम साहब हो गये। देखते ही देखते रिपोर्ट भी दर्ज हो गयी और थानेदार साहब जीप में सवार हो निकल गये स्कूटर की तलाश में। मैं अचम्भित था, रातोरात होनेवाले इस परिवर्तन पर।

मैंने एक टेलीफोन जरूर करवाया था थानेदार को। सिर्फ उनकी उदासीनता को देखते हुए। और यह देखते हुए कि मेरे जैसे सामान्य आयवाले व्यक्ति के लिए इतनी बड़ी चपत बर्दाश्त करना नामुमकिन है। जिसके पास दोनों में से एक भी नहीं वह अकेला है। दर्शक भी और भोक्ता भी। मुजरिम भी और वकील भी।

इस वक्त आलूबुखारे पेश करना उस छोटे-से टेलीफोन की करामात थी, लेकिन तब क्या पता था कि इससे होने वाली तसल्ली में इतनी जल्दी सूराख हो सकता है।

भलखू बड़ी कठिनाई से अपनी टांगों पर खड़ा हो पा रहा था। कांपते हाथों से उसने लिफाफा हमारी ओर बढ़ा दिया। हमने एक एक लेकर मुंह के हवाले किया। मेरे दोस्त ने एकाएक बात का रूख पलटते हुए कहा, आप यहीं रहते हैं?"

दोस्त शायद उकता गया था। मैं भी उठना चाह रहा था। इस अंधे कुएं से क्या हासिल होने वाला था जहां फरियाद की रस्सी डाल बैठे रहो, उम्मीद की बदरिया की तरह मरे हुए बच्चे को छाती से लगाये।

'हुजूर और लो न!" भलखू ने कहा।

'जा बे, दफा हो जा अब। कल कोई दूसरी चीज लाना। ये तो एकदम बेकार हैं।" *कहकर थानेदार ने आखिरी आलूबुखारा भी मुंह में* ठूंस लिया। भलखू लड़खड़ाता हुआ पीछे हटने लगा। हटते-हटते अचानक उसका सिर दीवार से टकराया। एक घुटी घुटी सी चीख उसके कंठ से निकली और वह सिर पकड़कर वहीं धम्म से बैठ गया। उसने एक हाथ मुंह पर रख लिया था। शायद वह नहीं चाहता था कि चीख की आवाज हम तक पहुंचे। मुझे उठते देख थानेदार ने मेरा बाजू थाम लिया मरने दो। अपने आप ठीक हो जायगा। भैण का कितनी बार कहा है कि इतनी मत पिया

कर, लेकिन जव तक दारू न पहुच जाये तो इसे मजा ही नही आता।" कहकर थानेदार ने वडल से एक बीडी खीची और इत्मीनान से सुट्टे खीचने लगा।

"हा तो आप हमारी किसी तरह की मदद नही कर सकते। यही तो दिक्कत है। जनता सहयोग नही करेगी तो कल के लाडे भी हमारी हड्डिया मे थूकते फिरेंग।"

"कल फिर एस० पी० साहब का टेलीफोन आया था ऊपर स। ऐसे म हम अपनी मा " थानेदार कहने को तो कह गया, झाक म था शायद चेतना पर हावी होनी ऊब म। उसके चेहरे पर एकाएक मुदनी छा गयी। वह निढाल-सा हो गया।

मुझे अचानक लगा कि आजकल टेलीफोन, टेलीफोन म भी फक हो गया है, जैस छोटी मछली, बडी मछली म। जैसे छोटी मछली को बडी मछली निगल जाती है उसी तरह छोटे टेलीफोन को

"इनसे मिलिए।" थानेदार ने कुर्सी पर बैठे एक लबे तडग नौजवान की ओर सकेत किया। मैंने उसे ऊपर से नीचे तक निहारा। उसके गालो की हड्डिया उभरी हुई थी। नीचे वाला होठ लटका हुआ था। दरअसल, उसमे घाव का निशान था। होठ बद होने के बावजूद दो दात नीचेवाले होठ पर चढे हुए साफ दिखाई देते थे। सिर के बाल बडी बेहूदगी से माथे पर छितराये हुए थे, उसकी छोटी-छोटी बिल्लौरी आखो म चीत की आखो जैसी चमक थी।

कपडो के मामले म वह बेहद लापरवाह दिखता था, जैसे हडबडी मे पहने गये हो। कमीज का अगला हिस्सा पेट के बाहर था, और पिछला अदर खुसा हुआ था। कुल मिलाकर वह एक अजूबा ही था। उस देखकर न हसी आती थी न कोई कौतूहल। एक अजीब सी कुलबुलाहट होती उस देखकर। एक विचित्र-सी सनसनी पैदा हो जाती थी भीतर जैस किसी की दाढी पर मधुमक्खिया का छत्ता देखकर हो सकती है। न चाहते हुए भी बरबस ध्यान चला जाता था उसकी ओर। वह बडे इत्मीनान स टेबल पर हाथ रखे बैठा था, जैसे थाने म न होकर ससुराल मे हो। अनजाने ही मेरा हाथ उसकी

ओर बढ गया। उसने फुर्ती से मेरा हाथ थाम लिया। एकदम पत्थर की तरह ठंडी और सख्त पकड। मेरा हाथ चिचियाने लगा। उसके होठों पर मुस्कराहट गाढी हो गया।

'आपका स्कूटर इसने ही चुराया था।" एक विस्फोट हुआ कमरे में, और एक झनझनाहट हाथ से होती हुई मेरी समूची देह में व्याप गयी। मैंने अपना हाथ खीचना चाहा, लेकिन उसकी पकड सख्त पड गयी। मुझे कसमसाता देख वह हस पडा एक धीमी, किंतु जलती हुई हसी। उस हसी की लपट मुझे एकबारगी झुलसा गयी।

'मैं ही ले गया था आपका स्कूटर।" उसका एक एक शब्द खुभ गया मुझे। इस बार उसे हसी का दौरा सा पड गया।

'कैसे ? पैसा है। ताकत है। ज्यादा से ज्यादा दो-तीन साल चलेगा। फिर ? मिस्स ' वह पागलों की तरह प्रलाप करने लगा था "आप पंगा ले रहे हो।' कहकर उसने मेरा हाथ झटक दिया। फिर वही हसी, लपट की तरह झुलसाती।

उसका बाप होम मिनिस्ट्री का उच्च पदाधिकारी है। उसकी बहन आई०ए०एस० है। वह खुद यहा केंद्रीय सरकार के किसी दफ्तर में सहायक अधिकारी है। शहर भर में इसकी चर्चा है। उसकी हसी के पीछे कौन से मक' का पलीता, कौन सी माचिस की तीली ? इस पर सिर खपाने की गुजाइश नही बची थी। वह हस रहा था।

'प्लीज।' थानेदार की ओर से एक पत्थर उसके साथ आ टकराया। एकाएक कमरा सन्नाटे की दरार में सुढक गया। तभी सन्नाटे को चीरते हुए कदमो की आहट दरवाजे पर ठिठकी। कमरे की उखडी सासें नियमित हुइ। सबकी निगाहे एकसाथ दरवाजे की ओर उठी। सामने एक अधेड व्यक्ति खडा था। कनपटियो पर सफेद बाल, चेहरे पर आभिजात्य की पपडिया। होठो मे दबा सिगार। धुए विहीन। खट ! खट ! खट ! एडिया बज उठी।

'बैठिए सर।" सैल्यूट थानेदार के माथे से जा चिपका, अधेड व्यक्ति ने उचटती निगाहो से कमरे का मुआयना किया। एक एक चेहरे को खरोंचा। गहरी अनिच्छा से कुर्सी की ओर देखा। बैठना मुनासिब न समझ लाइटर निकाला और सिगार सुलगाने में तल्लीन हो गया।

"इनका स्कूटर चोरी हुआ था सर।" थानेदार ने मेरी ओर संकेत किया। अधेड़ व्यक्ति ने चोट खाये नाग की तरह फन उठाकर थानेदार को देखा। थानेदार सिकुड़ गया।

"कोई गलती हुई सर !" थानेदार बिछ गया।

"मैं लड़के को ले जा रहा हूं। अपनी जेब से एक कागज निकालकर मेज पर फेंक दिया। नौजवान के होठों पर कांटों की तरह मुस्कान उग आयी। उसने बारी-बारी से मुझे और थानेदार को देखा। और फर्श पर ठक्-ठक् जूते बजाता थाने से बाहर हो गया।

इस सारे के सारे नाटक के तेजी से बदलते दृश्यों ने मुझे संज्ञाहीन-सा कर दिया था। अधेड़ व्यक्ति ने मुझे साथ आने का इशारा किया। मैं मंत्रकीलित-सा उसके पीछे हो लिया। थानेदार भी मुस्तैद था। दो छलांगों में ही सड़क पर पहुंच गया और कार का दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया, गुलाम की मुद्रा में, "ठीक है। ठीक है। यू कैन गो नाऊ।" अधेड़ व्यक्ति झुंझलाया। थानेदार अड़ा रहा।

"आई से, यू कैन गो नाऊ।' इस दुत्कार ने थानेदार का चित कर दिया। सैल्यूट झाड़ने की कचकची इच्छा उसके अन्दर कांटेदार गोले की तरह घूमती रह गयी। वह चला गया।

"आई थिंक यू मुड वियड़ा दिस केस।' अधेड़ व्यक्ति ने सिगार का टोटा तले कुचलकर आसमान की ओर उछाल दिया। तभी कार की पिछली सीट से नौजवान का सिर बाहर निकला, "लीव इट डैड।" अधेड़ व्यक्ति ने कार का दरवाजा खोला। एक पांव कार के अंदर रखा। फिर अचानक पलटकर कहा, "बाई द वे कितना नुकसान हुआ है तुम्हारा।' और उसका एक हाथ जेब में लटक गया।

मेरे दिमाग में एक विस्फोट हुआ। और इसके साथ ही सारा तिलिस्म टुकड़े-टुकड़े हो गया। मुझे लगा, यह हाथ जेब में नहीं गया है, बल्कि इसकी उंगलियां छोटे-छोटे सांपों की तरह मेरे चेतना बिलों में उतर रही हैं। उतरती जा रही हैं।

कमीज

नरेंद्र मौर्य



पानी लगातार बरस रहा था। सामने जहा तक मैं देख सकता था, बस पानी ही पानी था। पानी के साथ चलने वाला अधड अदर हड्डिया तक को कपा रहा था। मैं स्वय को रजाई की तहो म दुबकाए खिडकी के शीशे से बाहर झाक रहा था। पानी म डूबे हुए खेत, उनम से झाकते हुए झाडियो के सिर, गाव की ओर लौटते हुए डूबते-तरते मवेशी आदि को भी देखते-देखते मैं ऊब चुका था। शाम हो चली थी। पीछे कुए पर पानी भरनेवाली महिलाए भीगे वस्त्रो म बडी भली लग रही थी। मेरी तात्कालिक सोच कुए के इद गिर्द ही घूम रही थी। उठकर मैंने खिडकी के शीशे को टॉवल से साफ किया और बाद मे थोडी सी खिडकी भी खोल ली। बस मेरे पास काम था। क्लास मे देने के लिए नोटस तैयार करने थे। कालेज की पत्रिका मे छपने के लिए समय का सदुपयोग शीर्षक से निबध लिखना था।

इस बार राखी की छुट्टिया कम ही थी पर मैं चार पाच सी०एल० भी जोड लाया था। पत्नी पहले ही अपने पिता के घर जा चुकी थी। फिर जमाने भर की कोशिशो के बाद अभी घर के नजदीक ट्रासफर हुआ था। पहले से पिताजी का आदेश भी प्राप्त हो चुका था कि तुम्हारी मा व्रत आदि उजा रही है। यह एक उत्सव जसा था। जिसम पूजा-पाठ, भोज आदि होने थे।

पिछले चार-पाच दिन से लगातार बारिश हो रही थी। आज दोपहर म तो नदी न अपनी सीमाए ही छोड दी। शाम पाच बजे से बाहर वाली झुग्गी झोपडी के बहने की खबर आ गई। किंतु हम आश्वस्त थे। हमारे भवन बहुत ऊचे पर बने हैं। फिर घर म पूजा-पाठ भी हो रहा था।

मैं अपने कमरे से निकलकर चौपाल मे आया। आस पास के इलाके मे बाढ से सभावित क्षति पर चर्चा हो रही थी। हाली सन कात रहे थे। सामने तख्त पर चौपड जमी थी। खिलाडी बडे जोश मे बारह छह-अठारह की अपेक्षा कर रहे थे। बेंच पर बैठे कुछ बुजुर्ग फसलो के सत्यानाश हो जाने का रोना रो रहे थे। साथ ही अदर पूजा के कमरे से आने वाली जय के साथ अपने हाथ ऊपर उठा देते। कोई कुछ और झुग्गी बह जाने की खबर लाया। मेरा छोटा भाई समाचार की सत्यता की जानकारी करने दौडकर छत पर पहुचा। उसने बडे उत्साह से चिल्लाकर कहा, "अहा, बडा मजा आ रहा है।" रामा भैंसें ले आया। भाई साहब भी उन्हे दाना-चारा करवाने के लिए बाहर निकले। मैं भी चौपाल से गौशाला की ओर आया। रामा भसो को बाध रहा था। भाई साहब ने टार्च से देखा, "क्यो, रे, छोटी नही आयी है?" रामा ने इधर उधर देखा, छोटी नही थी। छोटी एक भैंस है जो नदी के उस पार रह गयी थी। भाई साहब गरजे, "तेरी मा को उस पार ही छोड आया होगा। जा, अभी उसे लेकर आ नही तो आज तेरा दूध दुहूगा।"

रामा काप रहा था। इस जानलेवा झानटे मे भी उसके पास टाट की घुघटी भर थी। किंतु वह भाई साहब का स्वभाव जानता था। 'न' का तात्पय अपने हाथ पाव तुडवाना था वह चुपचाप वापस चल दिया। मैं भी दिन भर कमरे मे बठा बठा ऊब गया था। अत उसके पीछे-पीछे चुपचाप छाता लगाए चल दिया।

मैं किनारे तक आया। अब पानी के साथ आधी भी तज हो गयी थी। रामा ने भरपूर निगाह से उस अथाह जलराशि की ओर देखा और दूसरे ही क्षण मेरी ओर। मैं कहना चाहता था कि अब रहने भी दे काका पर मेरे मुह से शब्द नही निकले। दरअसल मैं उस समय सजीदगी से स्थिति पर सोच भी नही रहा था। मुझे लगा, शायद रामा आसानी से उस पार चला जाएगा। वसे उस पार के नाम पर बडी दूर झाडिया से सिर दिख रहे थे। कुछ देर पहले रामा भैंस की पूछ पकडकर उसके सहारे तैरता हुआ आया था पर इधर आने के लिए कोई सहारा नही था। उसने आसमान की ओर देखा और पानी मे छप-छप करता हुआ चल पडा।

थोडी देर मे उसकी प्रतिकार क्षमता घटने लगी। फिर भी वह हाथ मारता रहा। किन्तु वह नदी के बहाव की दिशा मे नीचे जा रहा था। किसी तरह मैं उसके समानान्तर बना रहा और इस प्रयास म लगभग आधा किलोमीटर नीचे तक नदी के बहाव की दिशा मे किनारे किनारे दौडता हुआ आ चुका था। अब उसके हाथ-परो का हिलना क्रमश मद होता जा रहा था। वह जोर से चिल्लाया "छोटे भैया!"

मेरा कलेजा मुह को आ गया। जान बचाने के लिए फडफडाते आदमी के अतिम प्रयास मेरे सामने थे। मुझे लगा कि रामा को सहायता की तुरन्त आवश्यकता है अन्यथा वह बच नही सकेगा मुझे अपने ऊपर भी खिझ आयी कि इतनी गभीर परिस्थिति मे भी मैं निर्विकार क्या बना रहा? भैंस नदी उतरने के बाद भी आ सकती थी। उसे नदी मे कूदने से रोकना चाहिए था किन्तु अब क्या करू? वह वापस आने के लिए मुडा। किन्तु मुझे लगा कि वह इधर आने की बजाय उधर आसानी से पहुच सकता है। मैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर चिल्लाया 'रामा उधर का किनारा पास है।' पता नही उसे मेरी बात समझ मे आयी या नही। किन्तु उसकी एक आखिरी चीख सुनाई दी और मेरी आखो के सामने धुध छा गइ। नदी का शाश्वत शोर यथावत चलता रहा। मैं किसी तरह भागकर घर आया। मैंने भाई साहब को हडबडाते हुए बताया कि रामा डूब गया है। वह मुझे खीचकर एक ओर ले गए "पढ लिख गए अक्ल जरा नही है। भीतर आरती हो रही है वह तो सब आ जाएगा।'

दो-तीन दिन बाद नदी अपनी सीमा म लौट गई। किसी ने रामा की लाश एक कहू के वक्ष पर अटकी देखी। उसके बिरादरी वाले लाश लाने जाने लगे। मैं भी उनके साथ हो लिया। रामा की पत्नी साथ थी। हमे बहुत दूर नही जाना पडा। हम सब चुप थे। सिर्फ उसकी पत्नी की चीखें सन्नाटे को भेद रही थी। दो आदमी ऊपर चढे। एक रस्से से बाधकर उन्होने लाश नीचे उतारी। मैंने देखा रामा का चेहरा क्षत विक्षत हो चुका था। जगह जगह से उसके शरीर का मास जल जीवो द्वारा नोचा जा चुका था। परजीवी परिंदे भी उस वक्ष का घेरा डाले बठे थे। जाहिर था उसकी आखें बाढ उतरने के बाद ही नोची गई थी। लाश हमारे सरक्षण मे आने के बाद

भी वे परिंदे वही फडफडाते रहे। रामा की पत्नी लाश से लिपटकर रोना चाहती थी किंतु लाश इस लायक भी नही बची थी। सिफ उस चियडा के सहारे पहचाना जा सकता था और चीथडा की हालत भी यह थी कि बिसाहू को अपना रूमाल उसकी कमर के आस-पास लिपटाना पडा।

लाश हमारी चौपाल म लायी गयी। मुझे उन लोगा के साथ देखकर पिता क्रुद्ध हो गए। पूरे घर मे भडक्म मच गया कि मैं 'बलइया' की लाश लेने गया था। दादी गगाजल ले आयी। भतीजा पडितजी को बुलाने पहुचा लाश को सब निर्विकार भाव से देख रहे थे। लाश के पास ही लकडी का एक लटठा पडा था। जिसे रामा न पिछली बाढ से पकडा था। भाई साहब उस लटठे पर गौर कर रहे थे। उनका अदाजा यह था कि इसम हल बनाया जा सकता है।

अब तक पडितजी मुझे पवित्र कर चुके थे। मै अदर आ गया। मरा विचार था कि महिलाए उदार प्रवत्ति की होती है, और व अवश्य रामा के परिवार के साथ सहानुभूति जता रही हागी। भाभी रसाई मे खाना बना रही थी। दो वष का पप्पू मचल रहा था। उ होने उसे मुनिया का देत हुए कहा, 'देखो तो राजा बाबू, बाहर तमाशा आया है।"

घरवाला का निर्विकार बना रहना रामा की पत्नी से छिप नही सका। वह और जोर से दहाड मार मारकर रोन लगी। वैसे उसकी आवाज बडी ही बेतुकी थी। कारण भी था—उसे चीखत हुए काफी समय हो गया था। लाश की स्थिति न हमे कुछ इस तरह भौचक्का कर दिया था कि रास्ते भर किसी को उसे सात्वना देने और चुप हो जान को कहन की भी याद नही आयी।

आखिर पिताजी बाहर आए 'देख रज्जो (रामा की पत्नी), जन्म-मरण भगवान के हाथ मे हैं। फिर भी अब तू आयी है तो दस पद्रह किलो गेहू ले जा।" उ होने मजदूर को एक टोकनी भर गेहू रज्जा को देन का आदेश दिया। एक टोकनी गेहू वह अपन पति के मुआवजे के रूप म लेकर जा न लगी। भाई साहब ने जात जात उसे टोका, "टोकनी वापस द जाना, आजकल महगी हो गई है।" वे लोग लाश उठाकर ले गए।

दूसरे दिन मैं रज्जो के घर पहुचा। उसकी तार-तार साड़ी और बच्चा के फटे सिले कपडे पिता द्वारा प्रदत्त मुआवजे के रूप म बेहद खल। मैंने घर आकर मा को उसकी स्थिति बताई। मा की पुरानी धोती और मुनिया के कुछ कपडे इकट्ठे कर उसके घर दे आया।

रामा का छोटा भाई आठवें म पढता था। अब वह रामा के स्थान पर हमारी भैंसें चराने लगा। रामा की इच्छा थी कि वह अपने भाइ का कम-से-कम मैट्रिक अवश्य करा दे। इसीलिए वह पिछले कुछ वर्षों स असुविधाआ के बावजूद उसे नजदीक के कस्बे के स्कूल म भेज रहा था। किंतु यहा प्रश्न रामा की इच्छा का नही, हमारी भैंसा को चराने का था रामा को दिये कज का था रामा के बच्चा की भूख का था।

मैं कुछ दिना बाद फिर गाव आया। मैंने मा से रामा के बच्चा के विषय मे पूछा। उन्हें इस सबध म कोई जानकारी नही थी। मैं स्वय ही टहलता हुआ रामा के घर पहुचा। रज्जो आगन मे बैठी थी। उसके इर्द-गिर्द बच्चे बैठे थे। मुझे देखकर श्याम (रामा का पुत्र) ने कहा 'मा, आज भी नदी मे पानी है। यदि काका आज वह जाएगा तो छोटे भया मुझ भी कमीज लाकर देंगे?'

मैं अवाक रह गया। पहले मैंने उसके लिए कमीज नही भेजी थी।

रज्जो की आख छलछला आयी। मैं चुपचाप लौट आया। देर तक बच्चे की बात मेरे काना म गूजती रही। उसके लिए एक कमीज कितनी महगी है?

सरहद के इस पार

नासिरा शर्मा



खपरैल तड़ातड़ कच्चे आंगन में गिरकर टूट रही थी। मगर किसी में हिम्मत नहीं थी कि आंगन में निकलकर या फिर दलान से ही रेहान को आवाज देकर मना करता। अम्मा को दौरा पड़ गया था। हाथ-पैर ऐंठ गये थे। मुंह से झाग निकल रहा था। उनके पास सिर्फ एक ही अभिव्यक्ति रह गई थी, वह थी गिरकर बेहोश हो जाना।

"मुसीबत जब आती है तो चारों तरफ से आती है।" दद्दा ने अम्मा का हाथ सहलाते हुए कहा।

"रोने से काम नहीं चलेगा लड़की! पीछे की खिड़की से किसी को पुकारो। शायद शकूर घर पर मिल जाय।" दद्दा ने नरगिस से कहा जो मां का चेहरा देख-देखकर रो रही थी। दादी की बात सुनकर भागी।

"शकूर चचा... शकूर चचा।" नरगिस की भर्राई आवाज गूंजी।

"क्या है बन्नो?" शकूर चचा शेव बनाते हुए सामने आये।

"भैया! आज फिर सारे खपरैल आंगन में फेंक रहे हैं।" नरगिस ने रोते हुए कहा।

"आ रहा हूं।" कहकर शकूर कमरे से लपके।

खपरैल के टूटने की आवाज के साथ एक और आवाज उभर रही थी।

"मैं बता दूंगा। गिन गिनकर बदला लूंगा। मुझसे बचकर कोई नहीं भाग सकता है मैं पूरी दुनिया जलाकर राखकर दूंगा।"

रेहान भाई को पीछे से पकड़कर शकूर चचा कमरे में ले आये थे। इस पकड़ा धकड़ी में उनके हाथ-पैर कई जगह से जख्मी हुए थे। नरगिस को

रेहान भाई की हालत देख-देखकर सुरैया आपा से नफरत हो गई थी। वह अगर ऐसा न करती तो क्या भैया की ऐसी हालत बनती ?

अम्मा को होश आ गया था। दद्दा उनको रूह अफज़ा पिला रही हैं। अब्बा का शकूर चचा ने फोन कर दिया है। भैया कमरे में बन्द हैं। खिड़की से उसने मारा। वह सुस्त बेदम फर्श पर पसीने से नहाए औंधे पड़े हैं।

सात साल की नरगिस सब कुछ देख रही है। दद्दा सुरैया आपा को दुपट्टा फैलाकर कोस रही हैं। अम्मा उन्हें मना कर रही हैं। ऊपर नीम पर बैठी चील चीख रही है।

इन्हीं चीलों को रेहान भाई कितना परेशान करते थे। जिस दिन बाजार से वह गोश्त लाते साथ में छिछड़े जरूर लाते ■। फिर आंगन के ऊंचे चबूतरे पर खड़े होकर छिछड़े उछालने का नाटक करते चीखते थे, "अंडे-बच्चे वाली चील चिलोरिया ।'

एक बार खिसियाई चील उनकी उंगली को जख्मी कर गई थी। कितना खून निकला था ! सुरैया आपा भी क्या चील है ? भैया को पागल बना दिया। दद्दा कहती हैं "नासपीटी जहन्नुमी है। जाने कितने घर उजाड़ेगी हराफा।

'नरगिस ! इधर आओ ! ' अम्मा की कमजोरी में डूबी आवाज उभरी।

आई अम्मा !" नरगिस दौड़ी हुई आई।

'मेरी तिलेदानी से जरा महीन वाली सुई निकाल लाना।"

नरगिस भागती हुई असबाब वाली कोठरी में घुसी। अन्दाजे से तिलेदानी टीन के बक्स से उठाई और कोठरी से बाहर भागी। इस अंधेरी कोठरी में नरगिस को बड़ा डर लगता है। जाने अम्मा इसमें कैसे सामान रखती उठाती है।

जाकर जरा खालिकुन को तो बुला लाओ। कहना नवाब दुल्हन की तबीयत ठीक नहीं है। दद्दा ने फौरन बुलाया है।'

नरगिस दरवाजे की तरफ बढ़ी।

'बेकार आप परेशान हो रही हैं। मैं ठीक हूं।' अम्मा ने रेहान भाई की बुश्शर्ट उठाते हुए कहा।

"मेरे जीते-जी सारे चोंचले हैं। मर गई तो कौन आयेगा यहां पर।'

दद्दा न रहा और मरतबान से कुछ मेवे, जडी-बूटी जैसी चीजे निकालकर पुडिया बाधने लगी थी।

गली मे सन्नाटा था। हिन्दू मुसलमान फसाद हुए अभी दो ही दिन गुजर थे। मगर अम्मा के लिए दो युग। छपरखट पर बैठकर रेहान के जो मुह मे आता, बकता था। मा-बाप को शर्मिन्दगी के सिवाय कुछ हाथ नही आ रहा था।

"मारो सार हिन्दुओ को, गले दबा दो इनके। साले कहते हैं कि तुम पाकिस्तानी हो, जाकर पूछो इनसे, तुम्हारे बाप-दादा कहा हैं? मेरे बाप-दादा इस धरती के आगोश म गडे है। सबूत चाहिए तो जाकर देखो हमारे कब्रिस्तान, सबके सब मौजूद है वहा—खुद गद्दार हैं और हम पर इल्जाम लगात हैं। नौकरी न दने का अच्छा बहाना ढूढा है, आखिर वह भी क्या? मारो सब कातिलो को, मारो, खून की नदिया बहा दो मार मारकर।"

सबको पता था रेहान क दिमाग पर असर है। पेट्रोलिंग पुलिस के सिपाही भी हसते गुजर जात थे। कुछ "पागल है!" कहकर थूकते और कुछ सिपाही जान क्या सोचकर सिर हिलाते जैसे व सब समझ रहे हो।

शकूर कई बार नीचे से समझा चुका था मगर कौन समझता है। पूरा मोहल्ला हिन्दुओ का है सिफ तीन चार घर मुसलमानो के हैं। गली के पार सारा-का-सारा मोहल्ला मुसलमानो का है। बात यही नही रुकी। जब कर्फ्यू खत्म हुआ तो जान-बूझकर रेहान शेरवानी पहनकर निकला।

'देखे किस माई के लाल मे ताकत है मुझे छूने की।"

दद्दा न सिर पीट लिया, "यह हमे रुस्वा कराके रहेगा। भुस मे चिंगी डाल रहा है। आग न लगती होगी तो लग जायगी।"

दोपहर मे वर्मा जी की पत्नी अम्मा से कह गई थी, "बहन जी! परेशान न हो, हम रेहान को हमेशा से जानत हैं, अपना लडका है। उसकी बातो को सब समझ रहे हे आप चिन्ता न करें।"

इस तरह से कई पडोसिनें अम्मा के शर्मिन्दा सरापे को सहारा देकर और दद्दा के हाथो का पान खाकर चली गई थीं। अम्मा सुता मुह लिए बैठी रही, क्या कहती?

रेहान ने फस्ट क्लास मे एम०ए० पास किया था। पाच साल मे नौकरी की तलाश थी। पी एच०डी० से मन उचटा हुआ था। सुरया स उसकी दास्ती बी० ए० मे हुई थी। दोस्ती इश्क म बदली और फिर शादी के वायदे मे। मगर जब घरवाला को पता चला तो उन्हाने सुरया से साफ कह दिया कि सयद की लडकी शेख मे नही जायगी। खानदान भी छाटा, औरत लोग हैं, फिर दो वप से बेकार लडका। लडकी का गला न घूट दें ऐसे घर म शादी करने से।

बहुत दिनो तक यह बात रेहान से छुपी रही मगर जब सुरैया की मगनी हो जाने की बात उसके कान मे पहुची तो उसे एकाएक यकीन ही नही आया। परसा ही तो सुरैया से उसकी मुलाकात हुई थी। उसन जरा भी जो इशारा किया हो ? अपनी बेबसी पर वह बेकरार हो उठा।

सुरया के घर तो जा नही सकता था। घुटता रहा। वायद के मुताबिक सुरैया जुमे के दिन आई भी नही।

बेकारी, इश्क मे नाकामी और बेवफाई ने रहान को दिवाना बना दिया। दद्दा का ख्याल था कि सुरैया की फुफ्फी ने रेहान पर जादू-टोना किया है। वह बहुत जल्लाद दिल की औरत है। उसने अपनी सौत के गुप्त अगा को जलते चिमटे से दागा था। ऐसे बुरे लोगो के बीच म रेहान जाकर फस गया। जितनी रेहान को सुरया स नफरत दिलाई जाती उतना ही वह उसके लिए अधिक व्याकुल होता गया।

फसाद फिर हो गया। शहर मे तनाव बढ गया। पुलिस हरकत मे आ गई और रेहान बेकरार। ऊपर छप्परा पर बठा। फिर औल फौल बकने लगा। आज उस नौकरी मिल जाती तो क्या सुरैया की शादी की तारीख तय हो पाती ? नारायण जो का जुम्ला नश्तर चुभो रहा था, रहत हैं हिदुस्तान म मगर सपन देखत हैं पाकिस्तान के।' दिल चाहा पटक पटककर नारायण को मारकर पूछे, 'मदिरा की मूर्तिया डालर और पाउड की लालच म कौन बेचता है ? उसकी बातो की हकीकत को काई समझना नही चाहता है। सब उस पागल दिवाना कहते हैं।

कोई नही पकडता इन गद्दारा को जो शराफत का लिबास पहनकर

दूसरो पर कीचड उछालते है। उसका खून फिर गम होने लगा। सुरैया की छत पर उसके कपडे फैलाकर बुआ नीचे गई है। धानी दुपट्टा हवा म लहरा रहा है। छीटदार शलवार व कमीज हवा मे फडफडा रही है।

"मारो कातिला को मारा मेरे कातिल का। सब नामर्द अदर बैठे है। कोई नही बाहर निकलता है। यह मेरा वतन। देखता हू कौन मुझे जान से रोकता है ? हिम्मत है तो आओ निकलो। एक एक का सिर फोड डालूगा।" कहकर उसने खपरल फेंकने आरम्भ कर दिये। गनीमत यही थी कि दो घटे के लिए कर्फ्यू हटा था।

शकूर चचा गुस्से से कापते हुए ऊपर चढे। बिना कुछ कहे दो चाटे जोरदार रेहान के मुह पर जडे और पीठ पर दो घूसे "बदतमीज ! बेअदब ! जो मुह मे आता है, बकता चला जा रहा है।" धक्का देकर नीचे आगन मे रेहान को गिराया और लात-घूसो की बारिश कर दी।

"मुरया सिर पर सवार है। हिम्मत है तो उसके बाप को गालिया दो उससे डरता है। डरपोक !" शकूर चचा रेहान भाई को मार-कूटकर आका दद्दा के पास बैठ गये। उनके चेहरे से दुख और ग्लानि टपक रही थी।

"मोहल्ले मे इसकी बेहूदगी की वजह से नजरें चुरानी पडती हैं। कम्बख्त ने कही का नही रखा।" अभी शकूर कुछ और कहते कि बम के धमाके से वह चौंक पडे। लपककर बाहर भागे।

आगन म रेहान भाई औंधे पडे थे। मुह स राल बहकर आगन की मिट्टी भिगा रही थी। नरगिस का दिल भैया के सिर म मिट्टी झाडने को चाह रहा था मगर मक्के फूले मुह देखकर वह सहमी बैठी रही।

ऊपर नीले आसमान पर बेशुमार चीलें पख फैलाए ऊची उडान भर रही थीं। बाहर खामोशी छा गई। कर्फ्यू शुरू हो गया था। शकूर चचा ने खिडकी स पुकारकर कहा, "अम्मा ! कल्लन मिया के बने बमे। अफजल के बनाए बम फट गये। पुलिस उनके घर म है। कल्लन मिया की बीवी भी जख्मी हुई है और अफजल की बोटिया छत की बल्लिया स लटक रही हैं।"

"हाय कैसा बुरा जमाना लगा है।" दद्दा इतना कहकर रह गई। नरगिस की आसमान पर टिकी आखें खौफजदा हो गयी। कही भैया को मरा समझकर चीलें उनस बदला लेने न आ जायें ? इस खयाल के आते ही

नरगिस भागी और रेहान भैया की चौड़ी पीठ से लिपट गई।

रात अंधेरी थी। शहर खामोश। धड़कते भयभीत दिल भारी बूटों और लाठियों की ठक ठक को सुनते-सुनते सो गये थे। रेहान चुपचाप छप्पर पर बैठा दूर तक फैली खाली सड़क पर नजरें गाड़े जाने क्या देखने की कोशिश कर रहा था।

रेहान के मन में आज सुरैया के लिए नफरत ही नफरत उफन रही थी। सुरैया का विवाह पाकिस्तान में किसी बड़े आफिसर से हो रहा था। इसीलिए वह चुप रही थी कि शादी के बाद सरहद के पार निकल जायगी। सरहद के इस पार, किसी के दिल पर कौन-सी बिजली गिरेगी, वह इन सारे अहसासों से पूरी तरह से आजाद होगी।

घंटाघर ने बारह बजाए। रात की खामोशी फट गई। रेहान ने आसमान पर नजर डाली, तारे छिटके थे। वह व्याकुल हो उठा। खड़े होकर उसने चारों तरफ देखा। पीली मलगिजी रोशनी में गलियां बन्द दरवाजों से लिपटी सिसक रही थीं। मन में बवंडर उठा। छप्पर, छप्पर, आगे बढ़ने लगा। गर्मी के दिन थे। लोग अपने आंगनों में लेटे सो रहे थे। सुरैया का पक्का ऊंचा मकान पल-पल उसके समीप होता जा रहा था। काश ! एक बार उस बेवफा से मुलाकात हो जाती तो बताता कि नफरत में भी उतनी ही शिद्दत होती है जितनी इश्क में। अपने अलफाजों से आग लगा दूंगा उसके खामोश सरापे में, सारी उम्र अंगारों पर लोटती रहेगी।

नीचे आंगन से कोई भयभीत आवाज उभरी 'कौन है ? कौन है ?'

'क्या हुआ ?' नीचे आंगन में घर वाले जाग गये थे और एक दूसरे से पूछ रहे थे। रेहान चौंक पड़ा। जाने किसका घर है ? वह दबे पांव घर की तरफ लौटने लगा।

'कुछ नहीं, बिल्ली होगी तुम सो जाओ।' आंगन से आवाज उभरी फिर खामोशी छा गयी।

लौटते हुए उसके कानों में उन्हीं घरों में से एक से दबी-दबी महीन आवाज पहुंची "बचाओ बचाओ !" बढ़ते कदम रुक गये। जैसे ठीक उसी के पैरों के नीचे कुछ घट रहा हो। तड़पकर वह उस घर के आंगन में कूदा

और तेजी से दालान की तरफ बढा। आवाज कमरे से बुलद हो रही थी। पैर की ठोकर दरवाजे पर मारी। दरवाजा भिडा हुआ था। दोनो पट भड से खुल गये।

एक लडकी का पकडे दो लडके खडे थे। वह उनसे अपने को छुडा रही थी। पास ही सूखा-सा लडका बैठा बीडी पी रहा था।

'क्या बात है?" रहान की आवाज मे वे चौक के उछले फिर उग्रता से आगे बढे।

'कौन हो तुम ? इस घर म कमे घुसे ?" एक ने लडकी की कलाई मोडते हुए कहा।

"पहचाना नही ? अपना पाटनर है यार। रहान है रेहान।" एक ने हसते हुए कहा।

"वह दिवाना रेहान ?" दूसरे ने हैरत से पूछा।

"यह कौन है ?" रेहान ने अदर घुसते हुए पूछा।

"दिखता नही है क्या ? लडकी है और कौन है ?" एक लडके न हसकर कहा।

"सुझाई ता तुम्ह कुछ नही दे रहा है दरिंदे।" इतना कहकर रहान ने उसके मुह पर घूमा मारा। खून का फव्वारा छूटा और सामने स दात उछलकर दूर जा गिरे।

लडकी हिन्दू थी और कमसिन भी। कर्फ्यू लगने की आपा धापी म य लोग उसे उठा लाय थे। भीड भडक्के म किसी को पता भी न चला कौन किधर जा रहा है। सबको इतन कम वक्त मे सामान खरीदना, मिलना, जुलना रहना था कि बौखलाये लोग यह समझ नही पाते थे कि उनके आस पास क्या घट रहा है।

घृणा की आग मे वासना की लकडी दहक उठी थी। [illegible] पगलाए हुए थे। इतनी मुश्किल व कोशिश से व [illegible] लाये थे। रेहान मारा मजा किरकिरा कर रहा है।

"तुमको बडी हमदर्दी हो गई है इस हिन्दू लौंडिया म [illegible] दूसरे लडके ने गदन से रुमाल निकालकर [illegible] चैनपाजी से कहा, जिसमे भिडने की चुनौती थी।

'बहुत ।" रेहान ने कूल्हा पर अपने बड़े बड़े हाथ रखते हुए कहा।

'सारे दिन साला दिवाना बना हिन्दुओं की मा बहन तौलता है। और अब रात के अंधेरे मे हिन्दू लौंडिया की वकालत करने निकला है।" उस मरियल से लडके ने बीडी हाथ से फेंकते हुए कहा।

'इस वक्त मेरे तन बदन म उतनी ही आग लगी है जितनी तुम्हारी बहन को किसी हिन्दू के घर म इस हालत मे देखकर लगती।" रेहान ने सीना तानकर गर्दन ऊपर उठाई।

'यार, मजाक मत करो! तुम्हारा भी हिस्सा होगा समझे!" दादा टाइप लडके ने पैंतरा बदलते हुए रेहान को आख मारते हुए कहा।

फिर निकाला मुह से यह अल्फाज तो।' कापता हुआ रेहान का हाथ उठा।

'हिन्दू लौंडिया के लिए मुसलमान भाई पर हाथ उठाओगे?" उसी लडके ने आस्तीन मोडी।

'कोई अपनी जगह से हिला तो मार मारकर भूसा भर दूगा।" रेहान ने धीरे धीरे लडकी की तरफ बढते हुए लडका को धमकाया।

"हमारे घर कौन जला रहा है? हमारी मा-बहन को कौन खराब कर रहा है? हम या वह?" खून आस्तीन से पोछता हुआ पहला लडका बोल उठा।

"इस पर दूसरा पागलपन का दौरा पडा है" मरियल लडके ने धीरे से कहा।

मेरे जीते जी इस मोहल्ल म यह नही हो सकता है। तारीख दोबारा मेरे सामने नही दोहराई जायगी वरना।" रेहान ने लाल आखें तरेरी। लडकी को आगे बढकर कधे के पास स सहारा दिया।

"उसे यहा छोड दो वरना हम तीन हैं।

मैं एक ही काफी हू तुम सबको सभालने के लिए। हाथ-पैर मरोडकर फेंक दूगा। सुलझाते रह जाओगे।' रेहान ने मरियल-से लडके को एक लात घुमाकर मारी। दूसरा की घूसा से खातिर की। लडकी से कहा कि वह बाहर खडी हो जाये।

मार-कूटकर तीनो लडका को कमरे में बन्द कर लडकी को लेकर

कच्ची दीवार पर चढा फिर लडकी को दोनो हाथो से ऊपर उठाया। नरगिस मे दो-तीन साल ही बडी होगी। छप्पर पर उसे बिठाकर धीरे से बोला, "तुम्हारे पिताजी का नाम ?"

"रामखिलावन ।" लडकी ने कापते हुए कहा।

"नुक्कड वाली पचूरिया की दुकान ।"

"हा, वह हमार बापू की है।" लडकी उत्साहित होकर बोली।

"अच्छा ! अब इस भयानक माहौल मे तुम्हे घर तक कैसे पहुचाऊ।"

'हमार चचा पुलिस मे सिपइया है।" लडकी न भोलेपन से कहा।

"होंगे।" लापरवाही से रेहान ने कहा। उसके दिमाग म एक ही बात थी, वह यह कि लडकी की बदनामी न हो। सामने एक ही रास्ता है। छप्पर-छप्पर चलता उधर जाये मगर यह लडकी ?

"तुम चल पाओगी छप्पर पर बिना शोर किय ?" रेहान ने पूछा।

'काहे नाही !' लडकी उसी उत्साह से बोली।

घटाघर से तीन का गजर गूजा।

चलो !' रहान उठा।

'मगर भया ! बीच मे गली पडिय आवा कैसा लाघब ?"

"चलो उठो तो !" रेहान ने लडकी के सिर पर चपत मारी।

खामोश कदम छप्परो पर उठ रहे थे, खपरल के बीच मे रास्ता बनाते हुए। काम जोखिम का था। तैश म भी रेहान को लडकी की बदनामी का डर लगा हुआ था। नीचे गलियो मे गश्त करती पुलिस भी ऊघ रही थी।

लडकी को उसके घर की छत पर चढाकर रेहान जब लौटन लगा तो सुबह का उजाला फैलन वाला था। सामन सुरैया का मकान गदन ऊची किये खडा था। रेहान ने नफरत से मुह फेर लिया।

दावननामा अम्मा की पलग पर पडा था। सुनहरे हर्फों से सुरया और इमनेयाज का नाम लिखा हुआ था। परसा सुरया की शादी थी। नायन ने बताया कि चौथी के दूसरे दिन सुरैया पाकिस्तान चली जायेगी।

नायन के जाने के बाद अम्मा चुपचाप हाथ मे पकडे कपडे की बखिया उधेडती रही मगर दद्दा ने कोसना शुरू कर दिया। नरगिस को एक ही बात

समझ मे नही आ रही थी कि हर एक से भिडने वाले निडर रेहान भया सुरैया आपा से क्या डरकर बैठ गये। उनका सारा जुल्म सह रहे हैं जबकि हमेशा खुद कहते थे, 'अम्मा ! जुल्म सहने वाला जालिम के हाथ और मजबूत करता है। तो क्या रेहान भाई की खामोशी सुरैया आपा के हाथ और मजबूत कर देगी ? वहुत बडे भारी हो जायेंगे उनके हाथ क्या ?

"उस हर्राफा के सीने म मर्द का दिल है इस निगोडे के सीन म लडकी का दिल है। उल्टी गगा बह रही है, दद्दा सुरमेदानी म सुरमा भरती हुई बोली।

पलग पर साथ रेहान भाई के पास दबे पाव नरगिस पहुची। धीरे धीरे उसके बाजुओ पर हाथ फेरा। मछलियो की सख्ती का अदाजा किया। पत्थर हैं पत्थर नरगिस न सोचा। मुडकर सामने गई ताकि चेहरे का मुआयना करे। गाल अब भी लाल है बीमार कमजोर होत तो चेहरा पीला होता। मुह पर बैठी मक्खी हकाते हुई नरगिस को इतमीनान हुआ।

क्या है भाई के क्या चक्कर लगा रही है ? सोने दे उसे।" दद्दा ने नरगिस को झिडका।

आगन मे चबूतर पर बैठकर नरगिस चुपचाप ऊपर आसमान को ताकन लगी। नीले आसमान पर पख फैलाये चीलें उड रही थी।

"होली जल रही है क्या ?' हसते हुए किसी का जुम्ला उछला।

"नही, खयाल और परवाज की होली है बल्कि चिता कहू।' रेहान ने कागज के ढेरो स लपकते शोलो को दखकर कहा।

"किसके खयाल और परवाज की चिता है ?" सडक से गुजरते हुए किसी न पूछा।

"इकबाल ! शायरे अजीम, जिसने पाकिस्तान बनने का ख्वाब देखा था।' रेहान ने किताब के पन्न फाडे और ढेर पर डाले। शोले लपके।

'अरे-अरे रेहान ! यार तुम वाकई पागल हो गये ? क्या इसलिए सुबह सुबह इकबाल का दिवान मागने आये थ ? परेशान सा परवेज कह उठा।

'सब घरो से इकबाल को बटोर लाया हू।" रेहान ने शोलो को ताकते हुए कहा।

"मगर क्यो ?" परवेज ने कहा।

"जो शायर दिलो को काटने की बात करते हैं। इन्सानी रिश्ता को तोडने की बात करते हैं उनका अदब कोयला है जिसे छूकर हाथ काले होते हैं और दिमाग तारीक। समझे मिया परवेज !" रेहान ने कुर्सी पर उकड़ू बैठते हुए कहा।

"खुद इकबाल आये थे कहने तुमसे क्या ?" मलीन ने उसे बिगाड़ा। गली म चारो तरफ इकबाल के शेर वाला कागज बनकर उड रहे थे।

नही ! मगर जो कहते हैं और समझते हैं वह यह जान लें कि एक इल्जाम के कटघरे म खडा करके कोई उस शायर की शख्सियत के परखच्चे भी उडा सकता है।" रेहान ने गोद म रखे कागज उलटने फेरे।

'कौन उडा सकता है सिवाए जनाब रेहान, दिवान नम्बर वन के ! इतने अहमक होगे यार ! मुझे मालूम न था ? कि [illegible] ही हो [illegible] हो क्या ?" असलम ने गम और गुस्से से कहा।

"सुरैया का गम इकबाल को जलाकर [illegible] जानता क्या ?" परवेज ने धीरे से कहा।

"कौन सुरैया ?" रेहान ने [illegible]।

जाम पिये। हम खूने जिगर खायें उनकी बला से।" शकूर चाचा ने गुस्से से उबलते हुए कहा। परसों उनका मैच है। प्रैक्टिस पर जा नहीं पा रहे हैं। उनकी बीवी रजिया भी मायके गई हुई है। उनके भाई की तबियत खराब है। उनकी कमी की झुंझलाहट भी इस गुस्से में मौजूद थी।

अम्मा चुपचाप काम में लगी थी। रेहान भाई के मामले में उनकी कोई राय नहीं रहती है।

घर में हंगामा है। अम्मा की लम्बी खामोशी उनकी अपनी चीखों से छनाकेदार आवाज के साथ टूटी है। शीशे ही शीशे बिखर रहे हैं। चीखें हैं कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही है। शकूर चाचा घुटनों के बल रेहान भाई की लाश के पास बैठे हैं। अब्बा दीवार से सिर टिकाए खामोश खड़े हैं। दद्दा का हाल बुरा है। किसे सभाले।

दो हफ्ते बाद रेहान भाई की लाश नैनी के पास नाबदान से निकली है। बदन पर ढेरों चाकू के निशान हैं। जख्म से बदबू फूट रही है और पेट की अंतड़ियों में कीड़े रेंग रहे हैं।

घर में पूरा मोहल्ला उमड़ा है। सरस्वती और रामखिलावन का रोना तो रुक ही नहीं रहा है। नरगिस सरस्वती की लाल आखें देखकर सोचती है, अगर सुरैया आपा यहां होती तो क्या वह रोती? अगर सुरैया आपा यहां होती तो भैया मरते ही क्या?

भीड़ में तीन लड़कों के बारे में कानाफूसी चल रही है। कुछ लोगों को उन्हीं पर शक है। कौन होंगे वह तीन लड़के? नरगिस सोचते-सोचते थक जाती। परवेज भाई, असलम भाई, शाहिद भाई तीनों तो भैया के पास बैठे रो रहे हैं। ये भैया को क्या मारेंगे?

धूप आधे आंगन में भर गई थी। भीड़ छटने लगी थी। नरगिस बहुत तन्हा अपने को महसूस कर रही थी। चबूतरे पर पैर उठाकर बैठ गई और आसमान की ओर ताकने लगी। नीले आसमान पर चीलें डैने फैलाये उड़ रही थीं। कहीं दूर से आवाज उभरी

उड़े बच्चे वाली चील चिलोरिया!

घबराकर नरगिस ने भैया को देखा। आज तो भैया सचमुच ही मर

गये कही चील ? वह तेजी से भैया को निपटने भागी। आधी राह म ही दादी ने उसे पकड लिया "कहा चली ?"

नरगिस न घबराकर दद्दा को देखा। उसको यह बात समझ म नही आ रही थी। वदना भैया से चीला को लेना था मगर यह कीडे कहा स आ गये ? भैया ता चीटिया कीडे, मकोडा को भी कागज से उठाकर घर म किनार जाकर फेंकने थे। कही किसी के पैर के नीचे दबकर मर न जाए। फिर यह सब कीड भैया के बदन को क्या काट रहे हैं।

दद्दा ने उसे सीन स लिपटा लिया। मलमल के जम्फर स उठती खुशबू मे उसे भैया की महक आती लगी। दद्दा की आवाज दूर स आती सुनाई पडी, "सुरया का गम घुन की तरह चाट गया। घुन तो गेहू म लगता है—खलिकुन गहू पछोडते हुए शिकायत करती थी। नरगिस का याद आया घुन का चाटा यानि खोखला गेहू का दाना। दद्दा के सीने से मुह हटाकर उसने भैया की तरफ दखा

'तो क्या सुरैया आपा घुन थी ?"

सीग

राजेश जोशी



ताजी मूलिया की तरह सफेद मक्क और नावदार सुबह थी। सुबह-सुबह इतनी सुबह हो गई थी कि दिन बास भर चढा लग रहा था। छता स उतरती धूप नीचे तक आ गई थी और गली स गुजरते लोगो के सिर पर टोपी की तरह चिपक गई थी। काली मिटटी के अदर ही अदर चलती योग साधना ने गली मे लगी पत्थर की सिल्लिया को ऊबड खाबड कर दिया था और जगह जगह से तोड डाला था। गली काफी आकी-बाकी थी और घर से एक हाथ बाद ही झोल खाकर आगे बढ जाती थी, इसलिये जब दूधवाले गुजरते तो दूध के बडे-बडे डबरे आपस म टकराकर खडखडान लगते और मोड के कारण दूधवाले घण्टिया टुनटुनाते। हाल ही म कोई दूधवाला गुजरा था, आवाज कान म पडते ही सोनू न दूध की रट लगाना शुरू कर दिया। कुछ देर से वह रबर के एक पुराने गुडडे से खेल रहा था जिसके रग जगह-जगह स उखड गए थे और उसकी सीटी निकल चुकी थी। उसे दबाने से हवा की सिफ फुस्स सी आवाज निकलती।

भगवती सुबह की डाक बाटने चले गए थे। सोनू सबसे छोटा था यान तीसरा और आखिरी। बडा शिब्बू तीसरी म पढता था, उसके पीठ की लडकी थी मुनी। दोनो स्कूल चले गय थे। भौजी सुबह के कामकाज म लगी थी। उन्होने दो एक बार सानू को चुप कराने की कोशिश की फिर अपन काम मे लग गई। तभी बिल्ली आ गई। वह चितकबरी, छोटी-सी बिल्ली थी। जो घर मे हिल गई थी। सिकुडकर, दुबककर जब वह बैठी होती तो ऊन की लच्छी की तरह लगती, उसकी अक्सर खूब टागा-गोली

होती वह जिसके भी हाथ लग जाती वही उसे उठा लेता। उसे उछाला जाता, कभी अगले पैर पकड़कर खड़ा करके चलाया जाता। वह पकड़ से निकलते ही भाग खड़ी होती। बिल्ली को देखते ही सोनू उसके पीछे लपक लिया। कुछ देर तो बिल्ली इधर उधर दौड़कर कमरे में ही सोनू को छकाती रही, फिर गच्चा देकर दरवाजे से निकल भागी। सोनू भी उसके पीछे-पीछे बाहर भाग गया। गली थी सो सवारियों का डर नहीं था। बच्चे बेधड़क खेलते रहे। झाड़-बुहार से निपट, भौजी ने रसोई का परदा पनाले की तरफ खींचा और नहाने बैठ गईं। घर एक लम्बा कमरा भर था आधे कमरे के बाद, कमरे को दो कमरे बना, कमरे की चौड़ाई से आधी चौड़ाई का परदा लटका था। जो जरूरत के मुताबिक कभी रसोई की तरफ पनाले की तरफ खींच दिया जाता।

कहां गई बिल्ली। कहां गया सोनू। उड़ गई बिल्ली। रह गया सोनू।

यह मुन्नी का गाना था। सोनू को जब चिढ़ाना होता तो मुन्नी और शिब्बू दोनों ताली बजा-बजाकर गाने लगते। एक दिन सोनू किसी बच्चे के पास चाबी वाला खिलौना देख आया था और घर आते ही उसने चाबी वाले खिलौने के लिए मचलना शुरू कर दिया था। बिल्ली भगवती की गोदी में थी। भगवती ने बिल्ली सोनू को थमा दी कि देखो 'यह चाबी वाले खिलौना से भी तेज दौड़ती है और इसमें चाबी भी नहीं भरनी पड़ती। सोनू ने बिल्ली ले ली पर मुन्नी खिलखिला पड़ी तो उसे समझ आ गया। वह गुस्सा होकर बिल्ली लेकर बाहर भाग गया। जल्दी ही उसे बिल्ली के साथ मजा आने लगा। एक छोटी-सी गेंद थी जिसे वह ढुलका देता, बिल्ली उसके पीछे पीछे भागती और गेंद मुंह में दबाकर लौट आती। गेंद एक दिन फट गई और कहीं फिका गई। गेंद का खेल खत्म हो गया। बिल्ली और सोनू ने नए खेल तलाश लिए। वह बिल्ली को लेकर बाहर ओटले पर आ जाता, ओटले पर बैठी गौरैया को देख बिल्ली झपटती, सारी गौरैया ची ची करके उड़ जाती और सोनू तालियां बजाने लगता।

डाक कम थी। भगवती जल्दी ही लौट आए। बाहर साइकिल टिकाते ही उन्होंने घंटी बजाई। घंटी बजते ही सोनू बाहर आ जाता था। उन्होंने

एक बार और घंटी टुनटुनाई पर सोनू इस बार भी बाहर नही आया तो हैंडिल को सीधा करके वे घर म घुस गए। अपनी आदत के मुताबिक अन्दर घुसत ही उन्हान कमीज उतारकर कधे पर रख ली। इतन म ही हाथा म बिल्ली दबाए सोनू भी आ गया। शायद वह कही आस पास ही रहा हागा। उसका मुह तपा हुआ था। बिल्ली भी शायद थक गई थी, इसलिए मह लटकाए सोनू की छोटी-छोटी हथेलिया के बीच झूल रही थी। भगवती को देखत ही उसन बिल्ली को उतार दिया और जाकर भगवती की गोद मे लद गया। कुछ देर वह कुछ नहीं बोला, लकिन याद आते ही वह फिर दूध क लिए मचलने लगा। साइकिल चलाने की थकान फेफडा से निकलकर ऊपर आ गई थी और उसने भगवती के चेहरे को दबोच लिया था। फिर भी उन्हान पूछा 'अरे तुम्हारी बिल्ली कहा गई ?" सवाल एसा था जैस दूधवाली बात उन्होंने सुनी ही न हो, बिल्ली वहा नही थी। सोनू ने एक पल को सारे कमरे म नजरें दौडाई। वह थक चुका था और बिल्ली म उसकी उत्सुकता फिलहाल नही थी। वह नही उठा आर पर पटकन लगा।

साइकिल की सीट खाली देखकर धूप उसपर लद गई थी। बजा पाती तो इस वक्त वह जरूर घंटी टुनटुनान लगती और सोनू का बाहर बुलाकर गली का एकाध चक्कर मार लेती, दा-एक बार धूप न दरवाजे स झाककर सोनू को देखा भी, पर वह अपनी जिद मे लगा था। भगवती को अभी नहाना था और खाना खाकर वापस डाक घर पहुचना था। शाम वाली तीसरी डाक बाटनी थी। पिछले महीने दुपहर वाली डाक पर थे तो थोडी फुरसत थी। कोई बडा मनीआर्डर हाता तो रकम की तौल पर खुशी वे भी पा जाते। बीडी चाय का खर्चा निकल आता। सोनू कैस चुप हा? उन्ह समझ नही आ रहा था। या उनका दिमाग काफी उवर था। नई-नई खुराफात' का एक अच्छा खासा कारखाना! मोहल्ले मे वे अपन वक्त-बवक्त के शगफा के ही लिए ज्यादा जाने जाते थे। मस्ती म उनका कोई सानी नही था। कमीज जब कधे पर होती तो खरी कहने मे कभी चूकत नही। शिब्बू की कापी पास ही पडी थी। उसमे से उन्हाने एक कागज फाडा और हवाई जहाज बनाकर उडा दिया। सोनू ने हवाई जहाज उठा लिया। एक-दो बार

कमरे में उड़ाया, फिर उड़ाता हुआ दरवाजे से बाहर चला गया।

सारा मोहल्ला और आधा शहर भगवती की जान-पहचान का था। गलियों के रास्ते उनकी जुबान पर रखे रहते। बचपन इसी शहर में बीता। यहीं तालीम हुई। और यहीं नौकरी में लग गए। डाकिए की नौकरी में भी घूमा फिरी की थी। आठ-नौ साल की नौकरी हो गई थी, पर हालत जैसे अंगद की टांग हो, जरा भी टस-से मस न होती। बहनों को ब्याहना था गांव भी कुछ-न-कुछ भेजना पड़ता। इधर भी किसी न किसी का देना हर वक्त सिर पर बना रहता। चौहत्तर में डाक-तार कर्मचारियों की काफी बड़ी हड़ताल हुई उसी हड़ताल में भगवती निलम्बित कर दिए गए। हड़ताल विफल हो गई और बातचीत टेबिल पर रखी गई। मामला सुलझ जाता पर आपातकाल लग जाने से मामला बरफ की थली में चला गया। भगवती ने कहा है "इसे कहते हैं खड़ी मटर पर पाला गिरना।" मैंने कहा, "पानी ढंग से न चल पाया वरना पाला गिरने का असर न होता और न तितलियां मरतीं।" बीच बीच में उन दिनों बिना परवाली खबरें उड़ती रहतीं, लोगबाग दौड़ भाग में लग जाते, वहीं से खबर उड़ी कि सारे निलम्बित लोग बर्खास्त किए जाने वाले हैं। खबर से कान खड़े हो गए। और परा म चखरी लग गई। लेकिन भगवती नहीं हिले। ग्यारह-बारह तक दुगना धीरे से उठ जाते थे। उन दिनों दो-ढाई भजन सधा और उनकी हंसी पहले के बनिस्बत ज्यादा चौड़ी हो गई। दिन आते जाते और उनके साथ हुमछुल्ला से जुड़ी खबरें भी। यह सब गुजरे जमाने का किस्सा हो चुका था। निलम्बित किये गये लोग बहाल हो गए। पर गुजरे दिन ऐसे ऊनी नहीं थे कि धूप लगते ही ठीक ठाक हो जाते। तीन लम्बे सालों की सीलन दीवारों के पोर-पोर में पैठ गई थी। भगवती अभी भी पोस्टमैन यूनियन के सक्रेट्री थे, पर पहले-सा जोश अब किसी में नहीं था। विफल लड़ाई की पस्ती अभी तक कायम थी। लड़ाई भिड़ाई की बातों से लोग कतराने लगते। रामप्रसाद ने एक दिन कहा, 'घूस तो खदड़ती पर जमीन तो पोली हो गई उसमें भरने को मिट्टी कहां से आएगी?

हवाई जहाज के साथ सोनू बाहर निकल गया था। कमरे के कोने में

उसके छोटे छोटे कपडे के जूते दो लाल चिडिया की तरह बैठे थे। "सोनू को कुछ खिला देतीं," कपडे पहनते हुए भगवती न कहा। भौजी न एक बार सुनकर भी कोई जवाब नही दिया। भगवती ने अब दुबारा कहा तो आटा निकालते हुए उन्होने जवाब द दिया कि, उसने रोटी छुई ही नही, दूध के लिए मचल रहा है सुबह से। दूध लेना दो दिन से ही बन्द हुआ था। दूध के भाव अचानक चढ गए थे।

हमारे यहा चार मौसम होते है। सर्दी गर्मा, बरसात और बजट। बाजार एक मजेदार जगह थी। एक ऐसा बैरोमीटर जिसका पारा नीचे जाते कभी किसी न नही देखा था। वह मौसम के हिसाब स ऊपर चढता था। शहर पहाडी था सो बाजार भी पहाड पर था। तो भाव क्या पवतारोही थ—रस्सियो से लटके हुए? एक चीज का भाव चढता तो दूसरे भाव भी उचक उचककर ऊपर चढ जाते। गल्ला महगा होता तो तेल, तिलहन, तरकारी से लेकर ताडी और अखबार तक सारी चीजें उसका पाँचा पकड कर आग बढ जातीं। दूधवाले न कहा, "खली और घास आसमान पर धरा है, दूध नीचे कैसे उतरे?" पगार लड भिडकर एक डग भरती और बाजार खुले साड की तरह भागने लगता। भौजी धैयवान थी, बरसो से बाजार से पटरी बिठाती रही थी। भगवती लेकिन एसे मौको पर बेहद कलप जाते।

सोनू जब लौटा तो हवाई जहाज की जगह उसके हाथ मे तागे मे बधा पिंजारा था। हरे पखो वाला, उडता तो पिन पिन की आवाज होती। सोनू तागे मे झटके द देकर उस उडा रहा था। कमर म आते ही उसन पूछा, "बिल्ली कहा गई?' फिर भगवती के पास आकर बोला, ' बिल्ली एसे क्यो नही उडती?" भगवती हस दिए। जस हसी ही उसक प्रश्न का जवाब हो। भगवती अखबार देख रहे थे और उत्तर की चिंता किए बगर सोनू अपना पिंजारा उडा रहा था। एक टुनकी मारता, पिंजारा एक झोल खाकर नीच आ जाता। वह फिर लम्बी ढील छोड देता। तागा खूब लम्बा था, पिंजारा ऊपर तक उड जाता। सोनू को मजा आ रहा था। बीच बीच म वह भगवती की ओर देखता और दोनो हस देत। सारा कमरा पिंजार की पिन पिन स भर गया था। एक छोटी-सी झिलमिलाती हरी

कमरे में चक्कर लगा रही थी।

अपने खेल में सोनू की दोस्ती भगवती से ही थी। भौजी को वह शामिल नहीं करता। वे उसे झिड़क देती थी। मैंने सोनू को 'चुम्मी' लेना सिखा दिया था। अब एक गाल की चुम्मी लेकर वह मेरी नकल में कहता, 'यह तो खट्टी वाली है, मीठी वाली दो,' फिर दूसरे गाल पर चुम्मी ले लेता। एक दिन भजिया का कार्यक्रम था। बप्पू, मैं और भगवती बैठे थे तभी सोनू कहीं से मैल खालकर अंदर आया और सीधा भौजी के पास जाकर बोला, "चुम्मी दो।' भौजी ने झिड़क दिया, "चल हट जान खा ली। कुछ तो भी मीच कर आ जाता है!" हम तीनों जोर से हँस पड़े। भौजी झेंप गई। उन्होंने सोनू के गाल पर एक चिकोटी काटी और प्यार से एक हल्की-सी चपत लगा दी। सोनू हमारे पास आ गया। भगवती उसके कान में फुसफुसाकर उसे दुबारा भेजने की कोशिश करते रहे पर वह नहीं गया और शरमाकर बाहर भाग गया। *भौजी के अंदर कुछ सोया हुआ अचानक जाग गया था,* जो उनके चेहरे पर झिलमिल झिलमिल हो रहा था। अगर इस वक्त कोई कमरे में न होता तो भौजी जरूर सोनू को भींच लेती। मध्यवर्गीयता अजीब सकोचों की झरबेरी थी। कपड़े धुले धुले होते और दस तारीख आते-आते हाथ जेबों में कोलम्बस की तरह भटकने लगते। बच्चे खिलौने के लिए सपने देखते। मुफ्त में लाड़ कैसे हो? सोनू या गिन्नू कभी भौजी के गले में बांह डालकर झूम जाते, तो उन्हें अलग करते हुए वे कहती, "मुझे ऐसे लाड़ लड़ाने नहीं आते।" मैंने एक दिन भौजी से कहा, "क्या भौजी तुम बिल्कुल लाड़ ही नहीं करती। भगवती भाई को देखो सोनू को कंधे पर बठाकर पूरे जुमराती का चक्कर लगा देते हैं।' भौजी ने वेबूके जड़ा,' बहुत देखे लाड़ करनेवाले, गांव में अम्मा बाबूजी के सामने पूछो, किसी दिन सोनू को गोद में भी लिया हो तो! सोनू के पैदा होने के पूरे दस दिन बाद पहुंचे थे।' भगवती को इस जवाब की उम्मीद नहीं थी। उनकी हेकड़ी थोड़ी पिचक गई। अटक-अटककर सफाई पर उतर आए "क्या करें यार अब बाबूजी का तो ख्याल रखना ही पड़ता है हमारी अम्मा कहती है कि बाबूजी ने हम भाई-बहनों में से किसी को तोकना तो दूर कभी एक खिलौना तक लाकर नहीं दिया।" अजीब रिवाज थे, बच्चों से बूढ़ों के सामने प्यार करना तक, एक खिलौना

देना तक अपराध की तरह लगता था।

गोटी बन गई थी। भगवती चाह रहे थे कि जीम कर जल्दी से निकल जाए। पर तभी अचानक किसी चीज में उलझकर पिजारे का तागा टूट गया। पिजारा बाहर उड़ गया। मानू भी पीछे पीछे दौड़कर बाहर तक गया पर उल्टे पैर ही लौट आया। 'अरे तुम्हारा पिजारा कहा गया?' भगवती ने पूछा पर उत्तर देने के बजाय सानू ने कहा, "भूख लगी है।" भगवती ने उठते हुए कहा, 'हा, आओ अपन दाल भात खाएगे।" सोनू नहीं उठा और जमीन पर पैर घसीटते हुए उसने कहा, "नहीं दूध " पैर घसीटना जिद की चेता वनी की तरह था। 'पिजारे का भी इसी वक्त उड़ना था।' भगवती ने सोचा। सोनू रुआसा होने लगा था। झूठमूठ जब वह जिद करता तो पुक्का खूब फाड़ता पर आँखें नहीं भीगती थीं। अभी उसकी आखें भीगने लगी थीं। भगवती न होते तो भौजी डाट डपटकर उसे चुप करा लेती, लेकिन भगवती डाट-डपट से बचते थे। वे हर बात का एक ठाठदार तोड़ ढूढना चाहते थे। ठाठ बना रहना चाहिए, ठाठ के सिर पर मखे की टोपी, टोपी में तुर्रा, तुर्रे में हुमी। उनका मन अनमना होने लगता तो वे मन से एक मेंढक निकालते और लोगों के बीच फेंककर हड़कम्प मचा डालते, कमतरी का अहसास वहा पर भी न मार पाता। बत्तीस दातो पर भला दो आखो की बिसात क्या?

नितम्बन के लम्बे चौड़े भवन में जब चूहे दण्ड पेल रहे थे और कनस्तर मनपोट की तरह उल्टा पड़ा था। ऐसे ही एक दिन, रात में भगवती ने एक जबरदस्त हंगामा मचाया। रात ग्यारह साढ़े ग्यारह का वक्त रहा होगा। सर्दिया थी, लोग घरों में घुस चुके थे। अचानक भगवती भाई कहीं से एक लकड़ी की तलवार लिए चौरस्ते पर आए और गरजने लगे। सोने लोग जाग उठे, कुछ बाहर भी आ गए। भगवती ने आवाज दे देकर आसपास के सारे दोस्तों को घर से निकाल लिया। बोले, "डण्डा, पत्थर, छाता जो हथियार मिल ले लो।" सबने पूछा, 'आखिर हुआ क्या?' पर उन्होंने कुछ न बताया। पूरा जलूस लेकर घर के बगल वाली कायस्थपुरे वाली गली में घुस गए। थोड़ी दूर चलकर सबको रोक दिया। सामने एक मरियल सा कुत्ता बैठा था, उससे चार-पांच हाथ दूर से ही वे गरजे, 'अब भौंक साले अब भौंक। अगर दम है तो हमारी गली की रोटी

हमी पर भौंकता है।" इसके बाद ही वे पीछे मुड़े, बोले, "टूट पड़ो टुकड़े उड़ा दो साले के।" कुत्ता शोर शराबा सुनकर भाग गया। भगवती तलवार नीची करके, "पी०एम०जी० है एकदम भाग लिया," कहकर लौट लिए। झुंझलाहट दूर हो गई, लोग ठठाकर हँसने लगे। चौधरी कक्का ने कहा, "वाह भगवते, मजा ला दिया कल की चिलम भरी रही।"

धूप थोड़ी दरवाजे से और अंदर तक आ गई। उसने एक बार तो अपना चमकदार हाथ बढ़ा के सोनू का पैर भी छू लिया। भगवती ने थोड़ा-सा धूप को डपटा तो वह वापस दरवाजे की ओर सिमट गई। सोनू ने लेकिन मचलना बंद नहीं किया। भगवती ने चींटियों के मरने का, जमीन के रोने का, गुड्डे के गुस्सा हो जाने का आदि अनेक बहाने बनाये पर वह नहीं माना तो अंत में भगवती ने सोनू को गोदी में उठा लिया कि 'आओ अपन नाव बनाएंगे'

भौजी ने खाने को बुलाया पर भगवती सोनू को पकड़े बैठे रहे। बच्चों को पीटना उन्हें पसंद नहीं था। उन्हें शरारती और ऊधमी बच्चे पसन्द थे। एक दिन खिलौनों की एक दूकान के सामने से निकले तो बोले, "कैसे बेतुके खिलौने हैं, ऊपर से कितने महंगे!" अंदर ही अंदर कुछ घुमड़ने लगा, चेहरे पर बल पड़ गए। लगा कोई चीज जैसे काफी दिनों से इकट्ठी हो रही थी, जो उस दिन फूट पड़ी, 'खिलौने इतने महंगे हैं कि कौन खरीदेगा इन्हें? जो लोग खरीद लेते हैं वे भी घरों में इतने ऊंचे पर सजा कर रख देते हैं कि बच्चे का हाथ न पहुंच पाए। खिलौना जैसे कोई सजाने की चीज हो! जब बच्चे जिद करते हैं तो वे चिढ़कर एकाध खिलौना उतारकर देंगे कि तोड़ना मत, तुम हर खिलौना तोड़ डालते हो। पूछो, खिलौने खरीद के किसके लिए लाते हो?' काफी देर तक इसी तरह वे बोलते रहे। मैं सुनता रहा। सोनू को अक्सर वे नई-नई खुराफात सिखलाते रहते। भौजी टोकती, "तुम्हें क्या, तुम तो डाकघर चले जाते हो, संभालना मुझे पड़ता है दिन-भर।" भगवती हंस देते। सोनू सबसे छोटा था, लाडला था सो जिद्दी भी ज्यादा था। भगवती सोच रहे थे कोई नया खेल सूझ जाए और सोनू चाले से लग जाए।

दूध से ज्यादा मजेदार थे दूधवाले, दूधवाले की घुघरू बंधी साइकिल, जिसकी आवाज सोनू पहचानता था। डबरा जब ओटले पर रखा जाता तो वह डबरे को, दूध का नापना और भगौनी म भरना एकटक देखता रहता। डबरे म झाकता और उसकी दूधिया आखें कौतूहल म भर जाती। डबरे से मुह हटाकर उसका नन्हे आश्चय से भरा सवाल होता, 'इत्ता दूध कौन पीता है?' दूधवाला मुस्करा देता। अथशास्त्र से अभी उसका कोई ताल्लुक नही था। दूध जब सिगडी पर रखा होता तो वह आसपास मडराता रहता। एक दिन उसके सामने ही, उसका दूध बिल्ली पी गई और वह खुश होकर ताली बजाता रहा। दो दिनो से दूध बद था। कल तो वह किसी बहाने मान गया था, पर आज जिद ठान बैठा था। उसे समझ नही आ रहा था कि घुघरू वाली साइकिल भी निकली थी, उसपर दूध के डबरे भी लटके थे फिर घर मे दूध क्यो नही आया।

एक के बाद एक उपाय विफल हो गए। सोनू लग रहा था कि आज नही मानेगा। बात एक दिन की होती तो शायद भगवती बाजार जाकर दूध ले भी आते। जब सोनू भगवती के हाथो से छूटने के लिए ज्यादा ही हाथ-पैर चलाने लगा, तो उन्होने पूछा, "अच्छा, तुम्हें दूध पीना है न।" मचलना छोडकर सोनू ने छोटा-सा हुकारा भरा। भगवती ने अपने दोनो घुटनो के बीच उसे खडा किया और बोले, "हमारी बात सुनो।"

"तुमने गैया देखी है न सोनू ?"

"हु ऽऽ।" रुलाई मे भीगी-सी एक छोटी-सी 'हू' बाहर आई।

"गाय दूध देती है न ?"

सोनू ने जवाब म हल्के-से मुडी हिला दी। जसे डाल पर कोई कपास का फूल हिला हो।

"गाय का बछडा होता है।"

"एकदम छोटा-सा !" सोनू ने थोडा-सा चहककर कहा, तो दरवाजे मे बैठी बहुत-सी चिडिया उड गइ।

"हा, एकदम छोटा-सा, कक्का के यहा देखा था तुमने ?'

"कैसा अच्छा था न, भूरा भूरा !"

"और बछडा गाय का दूध पी रहा था, है न ?"

"हा हा एकदम छोटा सा था।" और आखो म सवाल उग आया था कि इसका क्या मतलब है।

'सोनू बेटा !' भगवती न कुछ ऐस कहा जस कोई रहस्य बता रहे हो, "बछडा गाय का दूध पीता है, फिर जब बछडा बडा होता है तो उसके भी सीग निकल आत ह।

"सच्ची ?'

सोनू एकदम चुप हो गया था। उसकी छोटी छोटी आखें आश्चय से फैल गई थी। क्या वहा सीग हिल रह थे, डर के सीग ? भगवती न सोनू से आखें नही मिलायी। तेजी से उठे और चप्पल पहनकर बाहर निकल गए। जब तक उन्हें कोई रोकता, दूर जाती साइकिल की खडखडाहट भर रह गई थी।

टूटे कगार

सच्चिदानन्द धूमकेतु



गोविन्दा के दिल की सारी ममता-व्यथा आखो की पपनियो पर चुचुआ गई। नदी के पत्थर की तरह लुढकते-लुढकते उसका दिल पथरौटा बन चुका था। पछुवा बयार मे टिकरती सूखी माटी। बिल्कुल सून नीरस।

अगर सिर पर तिरिया धरम की पहचान नही होती तो वह इस ससारी चोले को कब का ही उतार दिया होता और लगोटी पहनकर हाथ मे चिमटा कमडलु लिये महानदा के किनारे त्रिदडी बाबा की कुटिया मे धुनी रमा देता। इस माया-जजाल से पीछा छुडाकर अलख जगाता हुआ पिछले जनम के पापा का प्रायश्चित कर लेता लेकिन सुदामी की दुखती आखो के भय से ही उसे यह भगवानी निठुरता अपने कलेजे मे सहेजकर रखनी पडी थी। अन्यथा आज वह अपने बारह साल के छोटे बच्चे के माथे पर लदा हुआ बोझ नही बना रहता।

सोचते सोचते गोविन्दा के मस्तिष्क की सारी धमनिया झिरझिरा गयी और वह अपनी लुज आत्मा को धिक्कारने लगा।

चारो ओर डीह-डाबर से उछलती-कूदती सडी गध और चैती पछिया-सी खलखलाकर वहती, दूर-दराज गावो के चेहरे को चूमती चाटती महानदा की निलज्ज धारा।

छप्पर पर पटा से रुकी-थकी धूप देखकर गोविदा उकता गया था। घाम का टुकडा लगडाता-सा आकर ओलती के चौथे बास पर ही बहुत देर से रुका हुआ था।

थापडो के अधेरे कोन से मच्छरो का झार खूटे से टिको

लाघता हुआ आगन मे तेजी से उतर रहा था। दोपहर म जब सूरज सिर के ऊपर होता है तभी उस अधेरे कमरे म उजाले की मोटी लकीरें छन छन कर मुडेरे से गिरती हैं। उसके बाद हमेशा अधेरे की फुसफुसाहट और रलता पेलता मच्छरो का क्रदन ही सुनाई पडता रहता है। जब कमरे म गम-गम प्रकाश फैलता रहता है तो सारे मच्छर उच्छृ खलता छोडकर पिछवाडे के जमे पानी की सतह पर पलके झपकाते हुए विश्राम करते है और धूप को खिसकते देखकर उनकी उछल-कूद फिर शुरू हो जाती है।

गोविंदा पलानी म पटेर की चटाई पर लेटा शरीर पर लटके मच्छरो को थपडाता हुआ रमना की बाट जोह रहा था। रमना पहर दिन क लग-भग डाबर की ओर गया था। जाते समय गोविंदा ने डाटकर समझा दिया था "साले कल की तरह आज भी कही गिल्ली मत खेलने लगना। भूख से आत कुलबुला रही है। मछलिया पकडकर सीधे घर वापस आ जाना।'

अभी तक रमना नही लौटा था। दिन ढलने म अधिक दर नही थी। आसपास बहुत-सी झोपडियो से धुए उठने लगे थे। गोविंदा के घर का चूल्हा पिछले दो दिनो से नही जला था। परसो रमना को अचानक कप-कपी बुखार ने जकड लिया था। दिन भर वह टाट ओढ़े बाप के बदबूदार सीने स चिपका हुआ कराहता रहा था। उसकी हालत देखकर गोविंदा को डर हो गया और उसे अपने कलेजे से सटाये रात भर अपने लूल हाथो से उसकी देह टटोलता रहा था। आधी रात के बाद जब उसकी कपकपी शात हुई तो उसके जी म जी आया। सुबह उठत ही रमना बिना कुछ कहे छिपिया उठाकर डीहवार की ओर चला गया था।

शाम को जब रमना छिपिया कधे पर सरसराता हुआ घर वापिस लौटा तो उसके हाथ खाली थे। टीन के डिब्बे मे सारे केंचुवे उसी तरह पडे थे।

खाली हाथ वापस लौटा देखकर गोविंदा उस पर टूट पडा था। अपने लूले हाथ से उसके गाल पर तडातड चांटे लगाने लगा। रमना अपराधी की तरह चुपचाप रोता और कापता रहा। गोविंदा ने कल स ही कुछ नही खाया था, भूख की आग म बुरी तरह जलता हुआ अपन बेटे को भद्दी भद्दी गालिया देता रहा।

अचानक उसकी जेब म गिल्लिया देखकर तो वह आपे स बाहर हो गया और अपनी मुकडायी हथेलियो स गिल्लिया को बाहर निकालता हुआ बोला, साल अब समझा तुम दिन भर कहा थ। दिन भर ऐश करत रहे और यह नही समझे कि घर म लूले अपग बाप क पेट म कल स ही एक कौर भात नही गया है।'

अपना सारा गुस्सा वह उसकी पीठ पर उतारता रहा। मारत मारत जब वह खुद ही थक गया तो भूख मिटान क लिए ढेर सारा पानी पेट म उतारकर बडबडाता हुआ सो गया।

रमना बहुत रात तक रोता-कपसता रहा। आगन की चिपचिपी जमीन पर गिल्लिया उसकी आखो के सामन पडी रही, जिन्ह वह पुलिस नाका वाली गली म लडको स जीता था।

शाम हो रही थी। रमना का अभी तक नही लौटना गोविंदा को बुरी तरह खल रहा था। पेट की सुलगती आग को वह लगातार पानी क छीटे मारकर ठडा कर रहा था। जब पानी कठ और कलेजे म गडने लगा तो उसन फट्टी स खोसी हुई कागज की पुडिया निकाली और चुटकी भर नमक जीभ पर रखकर अलमूनियम के कटोरे स पानी गटकने लगा।

आगन म उठती गीली बदबू और मच्छरो का शोर उसे चारो ओर स खदेड रहा था। उन अनचाही स्थितियो स कटकर वह अपने अपग जीवन की बेचारगी के बारे म सोचन लगा। कब तक वह इस अपग लाश को कधे पर ढोता हुआ, लूले हाथो स सहलाता रहेगा। सोचते सोचते गोविंदा अचानक कुहर म धसी खोई अपनी जिंदगी की ओर देखन लगा।

कितना सुखी था गोविंदा। तदुरुस्त और मेहनती। ज्ञानसिंह ठेकेदार के यहा सरकारी ठेके म काम करता था। साथ का कोई भी कुली उसका मुकाबला नही कर सकता था। दूसरे मजदूर जब सिर पर मुश्किल स आधा मन बोझा लेकर तीन तल्ले पर चढ पात, तो वह मन भर कधे पर लादकर एक ही सास म चढ जाता था। बास की बनी सीढिया लचकती रहती लेकिन उसके पर कभी नही डगमगाते। सभी मजदूरो की अपेक्षा ठेकेदार अधिक चाहता भी था। जिस दिन उसके काम करने की इच्छा नही उस दिन उसे दूसरे मजदूरो की हाजिरी जाच करने तथा उनके

रखने का ही हल्का फुल्का काम दिया जाता था।

शाम को जब वह वापिस घर लौटता तो सुदामी आगन म आटा गूथती हुई मिलती और चूल्हे पर उफनती दाल की भीनी-भीनी खुशबू आगन म फैली रहती। सुदामी उसके थके-हारे बदन पर गम तल की मालिश करती। उसके पैरा के फटे बिवाय पर मिट्टी का तल डालकर सेंकती। गोविंदा का दिन भर का दुख दरद सुदामी के मुलायम हाथा का स्पर्श पाते ही खत्म हो जाया करता था।

रमना उन दिना बहुत ही छोटा था। अपने बाप को घर वापस लौटते देखकर उछलता कूदता देहरी पर ही उससे लिपट जाया करता। उसके लिए गोविंदा नित्य कुछ-न-कुछ खरीदकर लिये आता। कभी लेमन जूस तो कभी नानखटाई। अपन दुधैल दाता से रमना कुतर कुतर कर नानखटाई खाता और सुदामी के द्वारा याद कराय गय पहाडे की गिनती दुहराता रहता—एक दू तीन चाल। सुदामी हसकर टोकती—चाल नही, चार । बोलो चार। यह सात बरस का हो गया अभी तक इसकी बोली साफ नही हुई। लेकिन आगन का वह सुख गोविंदा अधिक दिना तक भोग नही सका। एक दिन तीन तल्ले पर लोहे का मस्तूल चढाते समय अचानक बास की सीढी टूट गई और उसके साथ ही उसके जीवन के सारे क्षण टूट-टाटकर खटीन दलदल म धस गय। आनवाला भविष्य उसकी पीठ पर लदकर हमेशा के लिए एक बोझ बन गया।

उसे अच्छी तरह याद है कि लोहे के मस्तूल का एक सिरा अपन मजबूत हाथा म थाम जब वह ऊचाई से नीचे मजदूरा को ललकार रहा था, तभी अचानक सीढी कडमडा गई और उसके साथ ही वह चीखकर नीचे गिर पडा था। उस जब होश आया था, तो उसने अपने को खैराती अस्पताल म पडा पाया। बगल म बैठी सुदामी रो रही थी। उसके दोनो हाथ पर प्लास्टर चढा हुआ था।

पडोस का जगवा, जिसने लाद-लूदकर उसे खैराती अस्पताल पहुचाया था पूछन पर बताया कि मकान से नीचे गिरने के बाद वह बेहोशी की हालत म सरकारी अस्पताल पहुचा दिया गया था। पुलिस भी वहा पहुच

गई थी। अस्पताल के बड़े डाक्टर और पुलिसवालों ने ठेकेदार से बहुत देर तक बातें की और अंत में खैराती अस्पताल ले जाने के लिए सलाह दी।

आज भी उनकी बातें याद कर गोविंदा की रगें दुखने लगती हैं और वह पुलिस, डाक्टर और ज्ञानसिंह ठेकेदार को कोसने लगता है। अगर ज्ञानसिंह उसका अच्छा इलाज करा देता तो वह लूला होने से बच सकता था। बावजूद इसके उन लोगों ने उसे खैराती अस्पताल भेजकर सरकारी कागज के सारे शिनाख्त ही मिटा दिये थे। गोविंदा तो होश आते ही यह सब समझ गया था। यह सब बतलाने के लिए उसने सुदामी की ओर देखा भी था किंतु कुछ कह नहीं पाया था। उसे वह और दुखी करना नहीं चाहता था।

हफ्ता तक वह खैराती अस्पताल में पड़ा रहा। प्लास्टर कटने के बाद भी उसके हाथ की टूटी हड्डियाँ जुड़ नहीं पायीं थीं और वह हमेशा के लिए लूला-अपंग बनकर रह गया।

सोचते-सोचते गोविंदा की आँखें छलछला गईं। सुदामी जब तक जिन्दा रही, उसे कष्ट नहीं होने दिया। पौ फटने के पहले ही खाना-पानी का इंतजाम कर वह काम करने के लिए निकल जाती थी। गोविंदा दिन भर रमना के साथ खेलते हुए दिल बहलाता रहता। लेकिन परसाल अचानक तीन दिनों के ही बुखार में सुदामी चल बसी थी। उसके मरते ही वह अपने को बिल्कुल अपाहिज समझने लगा था। वह न तो कमाने लायक था और न रमना का पोसन पायक। उल्टा रमना के सिर पर बोझ बन गया था।

यद्यपि रमना बहुत बच्चा था तो भी वह अपना तथा अपने बाप का पेट भरने के लिए कुछ-न-कुछ करता रहता। कभी लकड़ियाँ तोड़कर बाजार में बेच आता, तो कभी उपले ढोकर बनिये के घर दे आता। इसमें उसे जो थोड़े से पैसे मिलते अनाज खरीदकर बाप-बेटे अपना पेट भर लेते। जिस दिन उसे कोई काम नहीं सूझता उस दिन वह छिवड़ी व छिपियों से मछलियाँ पकड़ लाता। पिछले पंद्रह दिनों से ताल और आहर का पानी लबालब भरा था। रमना के लिए कोई काम नहीं बच रहा था लेकिन रोज वह मछलियाँ मारने निकल जाता। इस तरह पेट की दुखती नस।

रमना आग जलाने लगा। गोविंदा कभी गूदे को कभी रमना को देखता रहा। घूरे म उन लिजलिजे गूदे को डालकर वह कुछ निश्चित-सा हो गया था। बाप-बेटे दोनो घूरे के आमने सामने बैठकर लकडिया डाल रहे थे। छन छनकर मास के जलने से उबकाई भरी बदबू आगन म पसर रही थी। लेकिन गोविंदा के चहरे पर अप्रतिम शाति व्याप रही थी। उसका मुह पानी से भर आया था। बार-बार खट्टी लार जीभ से छूटती रही और वह उस हलक के नीचे उतारता रहा। पूरे दो दिनो बाद उस खाना मयस्सर होने वाला था। भूने मास के टुकडे को चखने का लोभ वह अधिक देर तक सवरण करने की स्थिति म नही था।

अभी मास के गूदे आधे ही सिझे थे कि रमना को कुए स पानी लाने क बहाने घर स बाहर भेजकर गोविंदा न एक पूरा केंकडा दात के नीचे दबा लिया। ककडे की सारी गम-गम हड्डिया करमराकर मुह म पिस गईं। ऐसा लगा वर्तमान की दहरी पर रुके टिके सारे क्षणो को चबाकर अतडियो की तपिश म गोविंदा झोक देना चाहता था।

रमना पानी का घडा सिर से उतारकर अलाव के पास फिर स जम गया। अचानक उसने कहा, 'बाबू अब हम लोगो को घोघे-केकडे खाने की जरूरत नही रहेगी।"

गोविंदा ने उसके मुह को अकचकाकर देखते हुए पूछा 'क्या बात है? कोई दाता क्या पैदा हो गया है जो हमारा पेट भरेगा ?'

रमना न सहज ढग से कहा, 'हा बाबू! आज जब मैं लौट रहा था तो डुमुहानी क मदान म एक आदमी बोल रहा था।'

गोविंदा को इन बातो से कोई मतलब नही था। वह उसकी बातें अन-सुनी कर देना चाहता था लेकिन अपने कमाऊ बेटे की इच्छा रखने के लिए उस टोकना पडा, 'डुमुहानी वाले मदान म। बहुत भीड जमा होगी रे। क्या बोल रहा था?'

'हा! बहुत लोग जमा थे। वह कह रहा था कि किसी भी आदमी को भूख से मरने नही दिया जायगा। जो लोग कमाने लायक नही हैं उन लोगो को मुफ्त म राशन खिलाया जायगा।'

गोविंदा को इस बात पर विश्वास नही हो रहा था लेकिन रमना क

द्वारा बार-बार कह जाने पर उसे आखिर खबर की सत्यता को स्वीकार करना पड़ा। अनजाने ही उसके गंदे दांत आग की रोशनी में चमक उठे। झुर्रियों में भरे चेहरे के ऊपर से गुरबत की निशानी मिट गई और वह अपने लूले हाथों को महानंदा की ओर उठाकर बोला, "गरीब-गुरबा की रच्छा तुम्हीं करती हो नदी महारानी। अपने सत को बचाओ। अगर ऐसा नहीं होगा तो हम निरवासी तो मर ही जाएंगे। डीह घाट सभी बन्दोबस्त हो चुके हैं। घोघे-सेवड़े खाकर प्रजा प्राणी के दिन जिंदा रह पायेंगे।'

अपने बाप के चेहरे पर खुशियां देखकर रमना का मन भी पुलक उठा। गोविंदा अपनी जिंदगी को भूल जाना चाहता था। वह बच्चे की तरह चहकता हुआ बोला, "जब वे लोग हम अनाज देंगे तो भरपेट भात खायेंगे। माड़ पसाकर भात बनायेंगे। दाल भी बना लेंगे। तेरी मां जब जिंदा थी तो भात के साथ-साथ दाल भी पकाती थी। बड़ी सुलच्छनी थी बेचारी।"

अचानक उसकी आंखें बुझने लगीं। थोड़ी देर पहले का उगा विश्वास महानंदा के टूटे कगारों की तरह ढहने लगा। आंखों के आगे पड़ोसी मिट्ठू के परिवारों की लाशों का दृश्य घूम गया। उस वक्त भी तो ऐसी ही लम्बी चौड़ी बातें कही गई थीं लेकिन मिट्ठू का पूरा परिवार भूख से छटपटा कर मर गया था। किसी ने भी उसकी सुध नहीं ली थी।

सोचते सोचते आंगनवासी की दुखती यादें गोविंदा के कलेजे को मथने लगीं। भात के ऊपर कड़वे तेल में छौंकी हुई दाल की भूली हुई महक उसके नथूने में भकभकाकर घुसती हुई जान पड़ी। बीते सारे एहसासों को कब ही का दफना चुका था। वे सारे क्षण आज गोविंदा के भूखे पेट और कलेजे की नसों को इस तरह क्यों उद्वेलित कर रहे थे! उसकी आंखों से अनजाने ही एक गर्म कतरा आग में चू पड़ा। छन की फुसफुसाती ध्वनि उभरी फिर वही कब्रिस्तानी ठंडक से लिपटी चुप्पी।

घूंघे पक चुके थे। लिजलिजे मांस के टुकड़े ठोस बनकर कोयले की तरह दिख रहे थे। नमक के साथ बाप-बेटे उन्हें फूंक फूंककर खाने लगे। रमना अज्ञात बिंदु पर खड़ा आनेवाले कल की कल्पना कर रहा था। घर में ढेर सारे अनाज होने का सुखद एहसास उसे घेरे हुए था।

सारी रात बाप-बेटे गहरी नींद सोते रहे। सुबह उठकर दोनों पत्तानी में बिछी चटाई पर बैठ गये। दिन चढ़ आया। गहरे मवार के नीचे दबी हुई जिजीविषा गोविंदा को कभी किनारे की ओर ले जाती रही और कभी अथाह गहराइयों में। ज्यों ज्यों समय बीतता गया उसके मस्तिष्क में बैठी हुई अनास्था और गहरी होती गई। उन दोनों की खोज खबर लेने के लिए कोई भी आदमी अभी तक नहीं आया था लेकिन रमना बार-बार सामने सड़क की ओर देख रहा था। कल की बातों पर उसे पूर्ण विश्वास था। बोलने वाले की आवाज के साथ ही उपस्थित लोगों के द्वारा तालियां बजाये जाने का शोर उसके कानों में अभी तक ठावे हुए लग रहे थे। उन बातों के प्रति कोई दूसरी धारणा आरोपित के पक्ष में रखने को वह कतई तैयार नहीं था और आने वाले समय में निश्चित होकर पत्तानी के सामने धूल पर वह घरौंदे बनाता और खेलता रहा।

शाम होने को आ गई। गोविंदा इंतजार करते करते थक गया। बाप-बेटे दोनों को भूख महसूस होने लगी। नहीं चाहते हुए भी बाप के डर से रमना को छिबड़ी लेकर डाबर की ओर चल देना पड़ा।

बीते दिनों की तरह आज रमना अपनी दुखियाई टांगें फैलाकर अधिक देर तक नहीं सो सका। बाप की कमजोर आंतें लिजलिजे गूदा को और अधिक नहीं पचा सकीं। खाने के दो घड़ी बाद ही उसे कै-दस्त होने लगा था।

गोविंदा मिनट मिनट पर कै कर रहा था। दस्त से आसपास की मिट्टी पट गई थी। रमना बाप को हूल मारकर कै करते देखकर कभी रोता और कभी अपने पतले-पतले हाथों से उसकी पीठ दबाता था।

रात भर गोविंदा आंतों की एठन में तड़पता रहा और पौ फटने के पहले ही उसकी आंखें हमेशा के लिए पथरा गईं।

रमना बहुत देर तक मरे हुए बाप की लाश पर लुढ़का हुआ रोता और आने वाले कल के बारे में सोचता रहा। वह अपने को बिल्कुल टअर समझने लगा। उसके सामने पेट चलाने की समस्या थी। मछलियां मारकर खाने का प्रश्न नहीं था। घाट के ठेकेदार को वह रोज आठ आने पैसे कहां से दे पायेगा। उसे भी घाघ और बेंगचे ही खाने पड़ेंगे और बाप की तरह

एक दिन उसे भी के और दस्त करते हुए मर जाना होगा।

अचानक दुमुहानीवाले मदान की बातें उसे याद हो गइ। विश्वास की जडे गहरी जमती चली गइ और वह रोना बद कर सामने रास्ते स आन वाले लोगो की बाट जोहने लगा।

दिन उग आया। चारो ओर पीली-पीली कमजोर धूप पसर गई। धीरे धीरे आसमान मे लटका सूय दूर और दूर चला गया। बाप की लाश कोने म पडी रही। सामने रास्ते से कोई भी आता दिखाई नही पडा। थल के एलान पर तालिया पीटने वाला म से किसी ने भी अभी तक उसकी खोज खबर नही ली थी और न जोर-जोर से बोलन वाला वह आदमी ही आया। सिफ घर के पिछवाडे बरगद के पेड पर गीध लाश को देखकर किचकिचाते रहे और उसके बाप क बदबूदार मुह पर मक्खिया भिनकती रही। सडाध भरी लाश को नाचने के लिए कौए सुबह से ही छप्पर पर बैठ-कर टर्रा रहे थे।

रमना का विश्वास अभी तक मरा नही था। आस्था के घरौदे जिन्ह पिछले दो दिना से कलजे मे सहेजकर उसने रखा था वे अभी भी दलीलहीन बिंदु पर खडे-खडे लगातार उसे दीख रहे थे। उन्ह नकारने और झुठलाने के लिए उसका दिल तयार नही हो रहा था ।

लेकिन ज्यो ज्यो समय बीतता गया, बरगद की डालो पर चील और गीधा का जमाव बढता गया। उनकी ककश आवाज रमना को भय-भीत करने लगी और चित्त के कोने म पडा हुआ उसका अखडित विश्वास डाबर की पिचपिची परता की तरह धीरे धीरे पसीजने लगा। सारे घरौदे टूटे हुए दिखाई पडने लगे। ढहे हुए मलबे के गहरे धुध म उसका अपना चेहरा लहू लुहान दिखने लगा।

तीसरे पहर जब खोली के कुछ लोग गोविंदा की लाश खाट पर उठा-कर जाने लगे तो रमना अचानक दहाड मारकर रो पडा।

उसे लगा भुरभुरी मिटटी पर कल के बने सारे घरौदे घुले बादलो की तरह आकाश की दीठ म सिमटते जा रहे है और वक्ष पर बठे धूप मे डने सेंकते हुए सारे गीध बाप की लाश के बदले एकटक उसे ही देख रहे है।

अपने लोग

सुदीप



घर पहुंचकर जब मैंने लालटेन जलायी और चाय के लिए स्टोव पर पानी चढ़ाने लगा, तब सोचा कि कितनी अजीब बात है—सुखबीर से इतनी बातें होती रही हैं, पर आज से पहले उसने कभी कुछ बताया ही नहीं।

स्कूल में मास्टरी करते हुए मुझे करीब चार महीने होने को आये थे। दिल्ली जैसे बड़े शहर को छोड़कर एलम जैसे गांव में मास्टरी करने के लिए चले आने पर मुझे कोई दु:ख नहीं था, पर परेशानी काफी उठानी पड़ रही थी। गांव में मैं खप नहीं पा रहा था। मेरे साथी अध्यापक लोग मेरे कपड़ा, उठने-बैठने, चलने के तरीकों, छात्रों के प्रति मेरे आत्मीय व्यवहार—इन सबका तो मजाक उड़ाते ही थे, मेरे बात करने के तरीके तक पर नाक भौं सिकोड़ते थे। मैं जितना ही गांव की जिंदगी में रमने की कोशिश करता था, उनका मेरे प्रति व्यवहार उतना ही विरोधी होता चला जाता था। लड़कों को मैं कभी पीटता नहीं था। इसपर प्रिंसिपल साहब ने एक दिन जबरदस्ती मेरे हाथ में बेंत की छड़ी थमा दी थी। साथ ही बोले थे "पीटना न भी चाहो तो छड़ी से रौब पड़ता है। आपकी जमाता में तो कई लड़के आपसे भी बड़ी उम्र के हैं। वे सिर्फ छड़ी और लात की जबान समझते हैं।"

मैं कुछ बोल नहीं पाया था। छड़ी लिये हुए प्रिंसिपल के कमरे से निकलकर फर्स्ट ईअर की क्लास की ओर बढ़ा था, तो सुखबीर मिल गया था। वह प्रिंसिपल साहब के घर से चाय बनवाकर लाया था और गर्म नोटे को उसने एक मैले-से चीथड़े में लपेट रखा था। मेरे हाथ में छड़ी देखकर

उसने हैरानी से कहा था, 'यह, क्या मास्टरजी ?"

प्रिंसिपल साहब का आदेश है भाई !" मैंने कहा था, तो उसने धीरे से गर्दन मटका दी थी। मैं समझ गया था, उसे मेरे हाथ में छड़ी अच्छी नहीं लगी थी न ही उसे प्रिंसिपल साहब का 'आदेश' पसंद आया था।

उसने और कुछ नहीं कहा था और चुपचाप प्रिंसिपल साहब के कमरे की ओर बढ़ गया था।

मैं क्लास में पहुंचा था, तो छात्रों की भी लगभग वैसी ही प्रतिक्रिया हुई थी।

सुखबीर स्कूल का चपरासी था। वैसे स्कूल कहना गलत होगा। उसी साल में उसे इंटर कालेज बना दिया गया था। मेरी नियुक्ति भी इसीलिए हो सकी थी। उस विद्यालय में मैं अकेला लेक्चरर था। पर उससे क्या होना है ! गांव का स्कूल हो या कालेज पढ़ाने वाला मास्टर कहलाता है।

चालीस वर्ष की उम्र, दुबली पतली लंबी देह, पिचका हुआ चेहरा, गंदुमी रंग, गहरी चमकदार आंखें, सिर पर छोटे छोटे बाल, गाढ़े का कुरता और खद्दर की धोती—यह सुखबीर था, जिसने पहले ही दिन से मेरा मन जीत लिया था। सुखबीर को भी मुझसे लगाव था—पर कारण मेरी समझ में आज तक नहीं आया था।

स्कूल में मेरी नियुक्ति व्यवस्थापक समिति की आपसी राजनीति के कारण हुई थी। यह बात मुझे उसी दिन मालूम हो गयी थी जिस दिन मैं ड्यूटी ज्वाइन करने के लिए पहुंचा था। स्कूल में कई अन्य अध्यापक ऐसे थे जो एम०ए० और डबल एम०ए० थे। एक अध्यापक को तो यह आश्वासन भी दिया जा चुका था कि उसे लेक्चरर बना दिया जायगा। पर इसी बीच समिति में फूट पड़ गयी थी और बहुमत उसके विपक्ष में हो गया था। पर इंटरव्यू के दिन और स्कूल खुलने के दिन के बीच के वक्त में राजनीतिक जोड़-तोड़ दूसरा रूप ले गया था और प्रिंसिपल के अलावा शेष सभी लोग मेरे खिलाफ हो गये थे।

स्कूल पहुंचने पर मुझे काफी निराशा हुई थी। एक सौ पचहत्तर रुपये की नौकरी वैसे भी काफी मुश्किल से मिली थी। उसमें से भी एक सौ पचपन ही मिलने वाले थे। शेष रुपया स्कूल-कल्याण के नाम पर काट

लिया जाता था। यह भी इटरव्यू के दौरान बता दिया गया था। मैं स्कूल पहुचा था ता गट के पास ही दो-तीन अध्यापक मिल गये थे। उनम स एक जो देखने म ही पहलवान जसा लगता था मेर रास्त म ही खडा हुआ था। मैंन उसकी तरफ नजर उठायी थी तो वह बोला था दखो मास्टरजी आप वापस चले जाओ जी आपका अपाइटमट कसिल कर दिया गया है।'

'क्या भाइ ?'' मैंने चकित होकर पूछा था।

मनजमट कमटी न अपना फसला बदल दिया है। उसने मास्टर सुखपालसिह का परमोशन कर दिया है। आप सीधे स अपने घर लौट जाओ नही तो झगडा हो जाएगा ,

झगडा मैं कस कर सकता था? मैं वहा नया था। अकला भी। शहरी होने के कारण कमजोर और कायर भी।

एक मिनट क लिए मैं खामाश खडा रह गया था। मन म आया एक बार तो प्रिंसिपल स मिल ही लना चाहिए। यह क्या तरीका है? मरा पता उनके पास था। वे चाहत तो मुझे चिटठी लिखकर सूचना द सकते थ। इस तक स मुझ काफी बल मिला और मैंने कह दिया पर मर पास ता ऐसी कोई सूचना नही है।'

सूचना हम जो द रहे है आपको

ठीक है आपकी बात मैंने सुन ली। मै प्रिंसिपल साहब स मिल लता हू, व कह देंगे तो मैं लौट जाऊगा ,

इसी बीच दो-तीन मास्टर और मेरी तरफ बढ आये थे। पर तभी मैंने देखा था सुखवीर गेट की तरफ चला आ रहा था। वह सीधा मेरे पास आया था और बोला था 'चलिए मास्टरजी, प्रिंसिपल साहब बुला रहे है।'

मैं सुखवीर के साथ हो लिया था। शेष अध्यापक एक-दो पल खडे रहने और इशारा ही इशारा म कुछ कह सुन लेन क बाद इधर उधर छितरा गये थे।

सुखवीर बोला था आप घबराना नही मास्टर जी। फिकर की कोई बात नही। ये लोग तो बाहर के आदमी का चेहरा देखत ही ...

भुनाने लगते हैं, गांव में और स्कूल में राजनीति फैला रखी है सोहराने ।"

प्रिंसिपल का चेहरा उतरा हुआ था। फिर भी उन्होंने मुझसे कह दिया था, 'मैं यहीं बना रहूं कहीं जाऊं नहीं। विरोध धीरे धीरे अपने-आप समाप्त हो जायगा।'

पर विरोध समाप्त नहीं हुआ था। दिनो दिन बढ़ता ही गया था। छात्र मेरे साथ थे लेकिन बाकी पूरा गांव मेरे खिलाफ था। एक सुखवीर था, जो मेरे लिए हर तरह से सहाई था। वह अक्सर स्कूल से बाद मुझे मेरे घर तक छोड़ आता। शाम को भी कभी-कभी आकर घंटा-आध घंटा बातें करके चला जाता। मुझे असली घी ला देता, हरी सब्जियां और अच्छा गेहूं भी पिसवाकर ला देता। कभी-कभी स्कूल में ही मेरे लिए कचरे ले आता। कहता—'नाश्ते के लिए इससे अच्छी और कोई चीज नहीं है, मास्टरजी।' कचरा मुझे कभी पसंद नहीं आता था, पर सुखवीर जो कचरे लेकर आता उन्हें बीज-समेत ही खा जाने का मन करता। मुझे हैरानी होती थी मेरी भूख कैसे बढ़ती जा रही थी।

साथी अध्यापकों को लेकर हमारे बीच ज्यादा बातचीत कभी न होती। बस वह मुझे आगाह करता रहता कि शाम को मंदिर की तरफ मत नहीं जइयो मास्टर जी ओमप्रकाश वहां मीटिंग लगाये बैठा होगा कल हाकी-मैच में बचकर खेलियो जी ईश्वरसिंह आपके घुटने या टखने पर वार करने की कोशिश करेगा

एक अजीब-सी आत्मीयता हमारे बीच पनपती चली जा रही थी, जिसमें मेरी ओर से फिर भी कोई स्वार्थ हो सकता था, पर सुखवीर को क्या फायदा हो सकता था, मेरी समझ में कभी नहीं आया था।

आज सुबह वह स्कूल कुछ देर से पहुंचा था। प्रिंसिपल साहब ने तो उसे बाद में बुलाया सरदारसिंह क्लर्क ने उसे पहले ही झाड़ पिला दी। सुखवीर कुछ नहीं बोला। चुपचाप सारा दिन काम करता रहा। रिसस के बाद मेरा एक पीरियड खाली था। प्रिंसिपल साहब को चाय और भुजिया का नाश्ता लाकर देने के बाद वह हुक्का तैयार करने लगा तो प्रिंसिपल साहब ने एक लड़के को भेजकर मुझे अपने कमरे में बुला लिया। इधर-

उधर की कुछ बातें होती रहीं। फिर सुखबीर हुक्का लेकर आया, तो प्रिंसिपल साहब ने उससे यों ही पूछ लिया, "क्या सुखबीर आज बड़ी अबेर आया था घर में तो सब ठीक है न ?"

सुखबीर की आवाज हमेशा बड़ी मद्धिम और सुरीली हुआ करती थी। बिना आंख मिलाये, हुक्के को प्रिंसिपल साहब के पास रखते हुए बोला 'सब ठीक ही है जी बस जसबीर की ही कुछ समझ-सी नहीं आ रही "

'कुछ नयी बात हो गयी क्या ?' प्रिंसिपल साहब ने हुक्के की नली अपनी ओर खींची और कश खींचने लगे।

'न जी नयी क्या होती ? आज तो उससे उठा भी नहीं जा रहा।'

'हूं ' और प्रिंसिपल साहब हुक्का गुडगुड़ाने लगे थे। कुछ क्षणों तक कमरे में उस गुडगुड़ाहट का स्वर गूंजता रहा था और हल्का-नीला भाप-सा धुआं फैलता रहा था मीठा मीठा धुआं

थोड़ी देर बाद मैं कमरे से बाहर निकला था सुखबीर को मैंने सीढ़ियों के पास बैठे पाया था।

शुरू नवम्बर की गुनगुनी धूप में सामने के मैदान में एक क्लास की पी०टी० चल रही थी। करीब डेढ़ फर्लांग दूर के छोटे-से स्टेशन पर छोटी-सी रेलगाड़ी खड़ी थी (छोटी लाइन थी यहां)। मेन गेट के पास कुछ छोटी उम्र की लड़कियां मैले कुरते, लाल काली ओढ़नियां और नंगे धूलअटे पांव खड़ी थीं और बड़ी उत्सुकता से स्कूल के भीतर की कारवाइयों को देख रही थीं। घर जाते समय जब भी वे मिल जातीं थीं तो मेरी ओर एसे देखती थीं जैसे मैं सचमुच कोई 'दर्शनीय चीज होऊं उनकी आंखों में भोली निर्दोष उत्सुकता होती थी और उनकी तीखी उठी हुई नाक सवाल सा उछालती नजर आती थी।

सुखबीर खाली खाली आंखों से सामने के दृश्य को देखे जा रहा था।

मैं उसके पास जाकर खड़ा हुआ, तो वह उठने को हुआ। मैंने उसके कंधे पर हाथ रख दिया और पूछा 'क्या बात है ? तुम्हारे बेटे की तबीयत अच्छी नहीं है क्या ?'

उससे जवाब देते नही बना। मैंने देखा उसकी आखें भीगी हुई थी और पतले होठ थरथरा रहे थे।

तभी घंटी बज गयी थी और किसी तरह उसने कहा था, "शाम को बताऊगा जी आप जरा मेरे साथ चलियो"

"भले" मैंने कहा था और क्लास की तरफ बढ गया था।

छुट्टी के बाद जब तक सुखबीर सब काम निपटाता रहा, मैं स्कूल के पिछवाड़े के खेत के पास कुर्सी डाले बैठा रहा। यही सोच रहा था कि आखिर मेरा इस गाव म टिके रहने का मतलब क्या है। कालेज के दिनो की याद भी आ रही थी। सब साथी सगी मा-बाबूजी याद आ रहे थे। बीनू की याद आ रही थी, जिसने अपने सपने मेरे भविष्य के साथ भी बाध रखे थे। क्या इस गाव म आकर मेरे साथ दो दिन भी रह पायगी वह?

सुखबीर आया तो वह दोपहर की अपेक्षा काफी सयत लग रहा था।

'चलोजी मास्टरजी!" मैं उठा तो उसने कुर्सी उठा ली। कुर्सी को उसने स्टाफ रूम म रख दिया और फिर हम दोनो उसके घर की ओर चल दिये।

सुखबीर का घर स्कूल से काफी दूर था। गाव के दूसरे छोर पर। मैंने तो कभी ध्यान ही नही दिया था कि गाव इतना बडा था।

रास्ते म उसने मुझे अपने बेटे जसबीर के बारे म सब-कुछ बता दिया।

सोलह वर्षीय जसबीर सुखबीर का इकलौता बेटा था। इसी वर्ष उसने हाई स्कूल बड़े अच्छे नबरो से पास किया था। पर इम्तहान देने के कुछ दिन बाद ही उसे मियादी बुखार हो गया था। दवा गाव के ही डाक्टर की चलती रही थी। पर केस बिगड़ गया था।

"गाव की तो हालत ही ऐसी है जी पहले ओझा और ढागी बद लोगो को मार डाले थे अब ये डाक्टर मार डाले हैं। हम आर्य समाजी है जी हम झाड़ फूक वालो म बिलकुल विश्वास नही। इसीलिए हमने डाक्टर से इलाज करवाया" सुखबीर बताये जा रहा था "पर यह यहा के डाक्टर भी जानवरो से कम नही हैं। पानी की सुई लगा दे है और दवा शहर जाकर बेच दे है डागर और आदमी का एक ही अस्पताल वही सुई

भैंस के और वही आदमी के अब उसके जिगर म पानी भर गया है जी न उससे उठा-बैठा जावे ह न कुछ खाया जावे है , कहत कहते उसकी आवाज भर्रा आयी थी और आखे फिर नम हो गयी थी। फिर अपने-आप पर नियन्त्रण करत हुए उसन कहा था हमारे तो सारे अरमान ही इसी लौडे पर टिके थे सोचा था मैट्रिक पास हो जायगा तो कही नौकरी मिल जायगी जमीन तो हमारे पास है नही कि खेती कर सके ,

बरगद क बहुत बूढे पेड क पास सुखबीर का घर था। आगन म एक खाट पडी हुई थी जिस पर जसबीर लेटा था। एक ओर जमीन पर सुखबीर क बूढे पिता बठे थे और छोटी सी गुडगुडी पी रह थे। दीवार के ओले म से सुखबीर की बीवी झाक रही थी। उसका आधा चेहरा सिर क पल्लू स ढका हुआ था।

मैं कोई डाक्टर तो था नही फिर भी सुखबीर ने जसबीर से कहा कि वह अपनी तकलीफ मुझ बताये जसबीर न मुझे हाथ जोडकर नमस्ते कहा था और फिर उठने की कोशिश करने लगा था। पर हाथ जोडने म ही उस जितनी मेहनत करनी पडी थी उस देखते हुए मैंने कह दिया था 'लेटे रहो, भाई

जसबीर सूखकर हड्डियो का ढाचा मात्र रह गया था कान्तिहीन चेहरा धसी हुई आखें सूजते हुए हाथ पाव और जब सुखबीर न उसकी कमीज उठाकर उसका पेट मुझ दिखाया था तो मुझ एकाएक झुरझुरी सी हो आयी थी—पेट फूलकर एकदम ढोल सा बन चुका था और जरा-सा हाथ लगाने पर भीतर का पानी गुब्बारे क पानी की तरह इधर उधर होता महसूस होता था।

एकाएक मुझसे कुछ कहते नही बना था। चाय पीने की मेरी कोई इच्छा न थी। लकिन सुखबीर की बीवी जब गिलास म चाय ल आयी तो मुझस न कहते नही बना।

चाय पीते समय मेरे सामने कई पुरानी तस्वीरें घूम गयी स मरे मेरे इकलौते जवान मामा की तस्वीर क्षय स मर एक भाई की तस्वीर, देश विभाजन क बाद कुरुक्षेत्र क शरणार्थी

से मरी मेरी दो जवान मौसियो की तस्वीर और जसबीर भी उस पात के साथ जुड गया प्रतीत होता था मेरे मुह से सात्वना के दो बोल भी न फूट पाये थे।

सुखबीर मुझे गाव के मदिर तक छोडने आया था। रास्त मे बोला था, "शहर मे आपकी कोई जान-पहचान हो तो इसे एक बार दिखा लाओ जी शायद बच ही जाये "

'अच्छी बात है।" मैंने कहा था, इस शनिवार को तैयार रहना। दिल्ली ले चलेंगे और बडे अस्पताल मे दिखायेंगे "

सुखबीर ने हाथ जोड दिये थे और घर की ओर लौट गया था। एक बार मुडकर मैंने जाते हुए सुखबीर की पीठ देखी थी और मुर्ने एहसास हुआ था जैसे भूरे से मैले खद्दर का बना कोई बुत चला जा रहा हो

उस रात मुझे बहुत दर तक नींद नही आयी थी। खिडकी के पास लगे बिस्तर पर, खिडकी क खुले पल्ले से पीठ टिकाय वठा मैं जान क्या सोचता रहा था। दूर तक फले गन्ने के खेतो पर जब बडा सा बर्फीला चाद तैर आया था और ठडी हवा के थपड पडने लगे थे, तो मेरी आखें अपन आप मुदने लगी थी।

लिहाफ को अपने इद गिद लपेटकर लेटते समय मुझे खेतो म गीदडो की आवाज सुनाई दी थी और नीद ने मुझे अपन घेरे म ले लिया था।

सुबह नीद खुली, तो दूधवाला लडका दरवाजा खटखटा रहा था। वैसे दरवाजा खुला ही रह गया था। रात को मुझे बद करन का होश ही नही रहा था। लिहाफ छोडन को मन नही हो रहा था। पर मजबूरी थी।

पतीले मे दूध डलवात हुए मैंने दूधवाले लडके से पूछा, 'आज तुम इतनी जल्दी कसे आ गय ?'

अभी सूरज नही निकला था और वह अक्सर सूरज उगन क बाद ही आया करता था।

दूध की डोलची को हाथ मे लटकाये उसने बडे सीधे तरीके स कह दिया तडके—सवेरे ही सुखबीर का बेटा मर गया जी आप तो जाओगे ?'

मुझे एकाएक जस बिजली का नगा तार छू गया। लडके को मैंने कोई

जवाब दिया या नही, मुझे ध्यान नही। दूधवाले पतोले को मैंने वही फश पर रख दिया जल्दी से कुरता पाजामा बदला और सुखवीर के घर की तरफ चल दिया।

रास्ते भर एक ही उधेड़बुन लगी रही कि कल मैंने सुखवीर से शनिवार तक इतजार करने के लिये क्या कह दिया? कल ही लडके को दिल्ली क्यो न ले गया? एक अजीब-सी अपराध भावना से मैं घिरता चला गया।

सुखबीर के घर पहुचा तो वहा सन्नाटा था। जसबीर की लाश जमीन पर लेटी थी और उसपर एक मैली-सी चादर डाल दी गयी थी। आगन मे दस-ग्यारह किसान लोग जमा थे और मिट्टी उठाने की तैयारिया कर रहे थे।

सुखबीर का चहरा एकदम पथराया हुआ था। आख एकदम खाली थी। उसके पिता की मोटे काच के चश्मे के पीछे छिपी आखो मे तरलता थी और घर के एक कोने से सुखबीर की बीवी की सिसकिया की आवाज आ रही थी। कुछ औरतें उसे सभाले हुए थी।

मुझे कुछ नही सूझ रहा था। इन लोगो के रीति रिवाजो से मैं अपरिचित था। बस, इतना भर कर सका कि सुखवीर के पास जाकर उसके कधे पर हाथ रख दिया। सुखबीर कुछ नही बोला। एक पल के बाद वह अपने पिता की ओर मुड़ा और उसने इतना ही कहा, बापू, रोने की हमारे धर्म मे मनाही है

पर बुजुर्ग की आखो का पानी फिर भी नही थमा। उसने अपनी लाठी उठायी और आगन के दूसरे कोने मे जाकर बैठ गया।

'स्कूल मे खबर भिजवा दी है?" मैंने सुखवीर से कहा।

'हा जी', उसने हौले से उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद एक लडका आया और उसने बताया स्कूल तो चल रहा है। मास्टर लोग आधी छुट्टी के बाद आयेंगे

जसबीर की लाश को गाव के बाहर ले आया गया। सड़क के पास ही खुली सी जगह थी, जिसमे छोटी-सी चिता बनायी गयी थी। साथ आये बीस-पच्चीस लोग गोल बनाकर बैठ गये थे। लाश को चिता पर रख दिया, तो एक एक करके गाव के लोग आने लगे। उनके हाथो मे छोटी छोटी

लकडिया थी उपले थे, टूटी हुई बैलगाडियो के पहियो, पाटिया या हला के टुकडे थे। कुछ लोग सूखी हुई घास ही ले आये थे। सुखबीर न लकडी का एक टुकडा मुझे भी थमा दिया। मैंने धीरे से उसे चिता पर रख दिया

जाने क्यो उस एक क्षण मे मुझे लगा—मैं भी इस गाव का एक हिस्सा हो गया हू वही इससे जुड गया हू।

चिता को आग दिखायी गयी तो सुखबीर के एक हिचकी-सी निकल गयी। उसके बूढे पिता खामोश आसू बहाय जा रहे थे

कुछ ही क्षणा म चिता धू धू करक जलन लगी। लोग धीरे धीरे घरो को लौटने लग।

चिता की लपटें तब बेहद ऊची हो रही थी, जब स्कूल के मास्टरो का गोल आता दिखायी दिया। आधी छुट्टी का वक्त तो करीब दो घटे पहल समाप्त हो चुका था।

मास्टर सुखपालसिंह सबसे आग था। उसने सुखबीर की बाह थाम ली और बोला आन म देर हो गयी भाई पर बहुत अफसोस है आज का दिन ही कुछ बुरा आया है सुबह ही सक्रेटरी साहब के पिता भी चल बस स्कूल म छुट्टी कर दनी पडी हम लोग वहा स होकर ही आ रहे हैं

और मास्टर लोग वही जमीन पर पडे लकडिया और उपला क छोटे छोटे टुकडे उठाकर जलती हुई चिता पर डालन लग।

आपरेशन जोनाकी

संजीव

□

बातें करते करते वहीं अटक-से गये हैं अनिमेष दा। शायद प्लेट में परोसे गये मुर्गे पर जा टिकी है नजर। बस यह हमारा वहम भी हो सकता है। सच तो यह है कि न वे मुर्गे की टांग देख रहे हैं न प्लेट और न ही दूसरा कुछ। कहीं और ही है उनकी दृष्टि। माहौल किसी हिंस्र गर्भिणी मादा पशु के भारी मगर चौकन्ने कदमों की आहट सा घड़ी की टिक टिक में पैवस्त हो गया है। अचानक बारह के घहराते गजर के साथ ही टुकड़े टुकड़े होकर हवा में उछाल खाता हुआ ठीक हमारे सीने पर आ गिरता है। एक एक बोटी की धड़कन दहशत के जलजले सी फड़क उठी है।

अनिमेष दा कब हड़बड़ाकर उठ कुर्सियों को धकेलते उलटते कब जा पहुंचे वाश बेसिन पर 'ओ ओ आ' करते हुए उल्टी करने लगे हम भौंचक रह गये।

मैं सन्देह की नजर से घूरता हूं, हर चीज को लेकिन संदेह की कोई वजह है ही कहां? अनिमेष दा ने तो अभी मुर्गा छुआ तक नहीं है। कहीं बाहर तो कुछ खा पीकर नहीं आये? आपरेशन एरिया देखने से लेकर अर्द्ध-सैनिक टुकड़ियों का जायजा लेने अकेले अकेले गये तो थे मगर हमारे इन-फार्मर की सूचना के मुताबिक वहां पानी तक नहीं पिया था उन्होंने। फिर बड़े बाबू के हाथ से तौलिया लेकर हाथ मुंह पोंछकर लड़खड़ाते हुए कुर्सी पर भरभराकर बैठ गये हैं अनिमेष दा। सिर उल्टा लटकाकर मुर्दे की तरह निढाल हो गये हैं। हमने सीलिंग फैन फुल स्पीड पर कर दिया है।

"दादा!" उन्हें हौले से पुकारता हूं।

"ऊ ऽऽ !" खसखसी कराह के साथ एक क्षण को आखें खोलते है, फिर वद कर लेते हैं। किसी रोगी की तरह भरभरा जाती है आवाज, "घवडाइए नही, मैं ठीक हू बस थोडा रेस्ट लेन दीजिए प्लीज !" मैं थोडा आश्वस्त होता हू, आवाज लाख भरभरा जाये, है तो वही घहराती आवाज। आखें लाख ढपी हो, है तो वाघ-सी जलती हुई वही आखें। छहफुटी काया! खिचडी दाढी मूछें साक्षात नरसिंह हैं अनिमेप दा। जूते तो एक भी नही आते उनके पावो मे स्टार के। हजार अफसरो मे भी दूर से पहचान जा सकते हैं। केवल शख्सियत ही नही, आचरण भी तो   अदालत की सजा मे रत्तभर भी विश्वास नही। वहा पैसो और पहुच के बल पर कोई अपराधी बाद मे भले ही वरी हो जाये पहले ही मार मारकर अधमरा कर देत हैं कि दोबारा अपराध करने के काबिल ही नही रहता। सस्पेंड होते रहे, ट्रासफर होत रहे, लेकिन जिद न छाडी और इस बुढापे मे भी महज सर्किल इस्पेक्टर के पद तक पहुच पाये हैं। बच्चा भी था, जो बचपन मे ही किडनैप कर लिया गया। सुनते है बीवी भी इधर पागल ही होकर मरी। खब्ती हो जाना कोई आश्चय नही! न फल, न फूल, महज एक कटीली डाल! बाहर कुछ खाते पीते नही, बात तक नही करते किसी से, अलबत्ता इनका सटीमेंट भडका दो शान पर चढा दो, और फिर देखो करिश्मा! जोनाकी ग्राम के उद्धत किसानो और मजदूरो से निबटने के लिए शीपस्थ अधिकारियो ने जान-बूझकर ऐसे कटखने, निमम और सनकी पुलिस-अफसर को चुना है। बाकी रहा सेंटीमेंट को भडकाना तो जैसा कि हमारे इनफामर ने बताया, आज ही अनिमेपदा के सामने सभ्रात घरो की औरतो और बूढो ने रो रोकर उपद्रवियो के अत्याचारो का किस्सा बताया है। कुछ एक बातें नमक मिच लगाकर भी कानो मे डाली गयी है। यह भी शुभ ही हुआ कि कुछ खासो और आदिवासियो न चैटर्जी घराने का रिश्तदार समझकर इनसे उद्दडतापूवक व्यवहार किया। हमारे इनफामर न सत्यन को भी उन्हे दिखा दिया है। बडी देर तक स्ट्रेटेजी पर गौर करते रहे थे अनिमेप दा।

चहलकदमी करता हुआ मैं बार बार घडी देखता हू। उफ वक्त सेकेंड सेकेंड हाथ से फिसलता जा रहा है और अनिमेप दा हैं कि अभी भी मुर्दे की तरह निढाल! आपरेशन के ठीक पूव ऐसी स्थिति कितनी खतरनाक है!

मैं उह झकझोरकर जगाना चाहता हू लकिन वक्त की नाजुकता को भापकर मरी बाज जैसी ववर सनद्धता ऐसा करन से रोक लती है। बेकली म सीढिया चढकर छत पर आता हू। झिल्लिया के शोर म सनाटा सास ले रहा है। बर्फीली रात धुआ रही है और कोहरा कठ तक लहरा रहा है। कुछ अस्फुट-सी उद्धत आवाजें पूरब की ओर स रह रहकर उठती है। हमारे जवान पी पीकर बहक रहे है। हम शक होता है कही य आवाजें इस गाव से ता नही आ रही असभव तो नही नयी जगह है गाल कभी-कभी गडड मडड हा जाया करता है। इस घने कोहरे म ठीक ठीक पता भी तो नही चलता।

दोपहर का सारा कुछ साफ साफ दिखता था। गाव स तालाब म नहा-कर बगल म कलशी दबाय औरता को मैंने इसी छत से देखा था जाते हुए। अपने जवानो की आखो म कामुकता के वहशीपन को भी मैंने नोट किया था। ग्रामीण परपरा के तहत महज गमछे स ढके बदन को व इस कदर घूर रहे थे कि मौका पाते ही टूट पडे। मैं मना रहा था कि अनिमष दा की नजर इस दश्य पर न पडे शायद पडी भी नही आपरेशन एरिया से सिर लटकाय हुए सीधे यही आकर रुक थ व लकिन इतन चौकन्ने अफसर स यह दश्य छूट सकता है । ऊह अगर उहोन देख भी लिया हो तो इसपर नाराज होने की कोई विशेष बात तो थी नही। अब जवाना की बात है, गौतम बुद्ध तो वे होने स रहे। उद्दड और छुटटे साड तो हाते ही हैं ये। ऐसे अभियाना म इत्ती-सी गुजाइश तो बनाकर रखत ही हैं हम। फिर यहा की न सही जोनाकी की वासिनो आर आदिवासिना के गुरूर को तोडना भी तो है। बडी ऐठकर चलती थी।

सत्यन के बहकाव म पडन स पहल य आदिवासी कितन सीधे और आज्ञाकारी थे, लेकिन अब ? जब स सत्यन उनके बीच आया है अपन आग किसी को कुछ समझत ही नही। जब चाहा पेड काट लिये, तालावा स मछलिया चुरा ली, जब चाहा फसलें काट ली। अनुशासन इसी तरह टूटता रहा ता उसकी परिणति वही हा सकती है जो यहा हुई। दरोगा तक को खदेड लिया उहान। माना की जातदार, की शह पर ही व वहा गये थे मुह स कुछ अपशब्द भी निकल गय थे, फिर भी । पुलिस

मालूम ही होगा कि बचपन में ही मेरा इकलौता बेटा किडनैप कर लिया गया था। जैसे उनकी आवाज वर्षों पुरानी कब्र से उभरकर आ रही थी निहायत भयावनी, भुतैली आवाज।

"हां वह तो उन बदमाशों की... मैं वह प्रकरण याद करने लगा था।

"कसूर क्या था उसका जानते हो? सच बोला था उसने। मेरे विभागीय मंत्री ने अकारण ही मुझे बुला भेजा था। बेटा लाडला था। साथ हो लिया। वे उस समय दो अन्य लोगों के साथ चाय पी रहे थे। चाय हमारे लिए भी आयी बेटे के लिए फल। लेकिन उसकी नजर फल पर कहां थी। वह तो उन दोनों अजनबियों को देखते ही चीख उठा 'बाबा एटाई मजूमदार काकू के छुरी मेरे छीलो।' मैं सनाका खा गया। ईमानदार कार्यकर्ता मजूमदार बाबू मेरे पड़ोसी थे एक माह पूर्व ही उनका खून हुआ था। हत्या का कोई सुराग नहीं मिल पाने के कारण इन्हीं मंत्री महोदय ने मेरी अकर्मण्यता के लिए मुझे कोसा था और फाइनल रिपोर्ट लगाने को कहकर विदेश चले गये थे। इससे पूर्व कि मैं कुछ बोलता मंत्री महोदय ने डांटकर लड़के को चुप करा दिया। मैं कोई प्रतिवाद नहीं कर सका। लड़के ने फल छुआ तक नहीं। मंत्री महोदय गंभीर बने रहे और बाद में अकेले आने का आदेश देकर मुझे जाने का संकेत किया। लड़के को जाते समय उन्होंने फिर बुलाया। सिर सहलाने लगे। पढ़ाई लिखाई की बातें पूछीं और कहा, ठीक से पढ़ो। फालतू बातें न करो। तुम्हें विलायत भेजना चाहता हूं।

"किंतु आमी ओई लोकेर के बलबो, जा एटा खून का खाच्छीलो। कहकर उनकी गिरफ्त से वह छिटककर भाग खड़ा हुआ। मैंने रास्ते में और घर पर उसकी इस गुस्ताखी के लिए उसे पीटा भी था इन्हीं हाथों से... आह! दूसरे दिन उसका अपहरण हो गया स्कूल से घर आते समय और फिर वे रुककर अपने आंसू पोंछने लगे। नजर उठायी तो खिड़की के रास्ते बाहर के अंधेरे में कहीं दूर ताकने लगे।

"बाद में एक लड़का हमने खुद उनके हवाले कर दिया।' जैसे अंधेरा से ही कोई खोयी हुई आकृति गढ़ निकाली थी उन्होंने और वह उनकी

आवाज का अनुसरण करती सहमती-सहमती चली आ रही थी, अमूर्त-सी।

'आप लोग मेरी कद-काठी देखकर रस्क करते होंगे किंतु वह पाच फिट पाच इच का लडका मुझे बौना बना गया। उसको गुजरे ग्यारह साल बीत गये।' उन्होंने एक गहरा निश्वास फेंका और ठमक-ठमककर बताने लगे, 'उसके खिलाफ हमे सूचना मिली थी कि वह एक खतरनाक नक्सलाइट है मगर वह इत्ती आसानी से पकडा गया कि मुझे अपनी सारी स्ट्रैटजी पर सकोच हो आया। वह एक छोटी चिक्टायी दूकान पर मूढी (लाई) फाक रहा था कि हमने उसे जा दबोचा। उसकी तलाशी ली तो थैले मे एक पायजामा, एक गमछा, कच्छा और चद कविताओ के उद्धरण वाले कागजो के सिवा कुछ न मिला। जेब मे एक सस्ती कलम, दो रुपये का नोट और चद रेजगारिया थी। चेहरा निहायत सौम्य। हमे झुझलाहट हुई, आखिर किस आधार पर उसे खतरनाक बताया गया था। खैर, हमे तो हुक्म की तामील करनी थी सो हमने किया। अब शेष रह गया था, उससे उसके बाकी साथियो और उसके सगठन के बारे मे जानकारिया हासिल करना।

थाने मे मेरे सामने खडा था वह। मैंने उसे ऊपर से नीचे तक सरसरी निगाहो से देखते हुए कुर्सी पर बैठ जाने को कहा तो वह अनाडी और सहमा हुआ-सा बैठ गया।

'तो तुम्हारा नाम चिन्मय है?' मेरे पूछने पर उसने कोई जवाब नही दिया।

'पिता का नाम? होम एड्रेस? क्यो आये थे यहा?' एक-एक कर मेरे सारे सवाल उसकी तजाबी चुप्पी मे घुलते गये तो मेरी भौंहे टेढी हुई, 'देखो, सीधे सीधे बता दो, वरना सच्चाई उगलवाना मुझे आता है।'

'आपकी फाइल मे तो सारी जानकारिया पहले से दर्ज है फिर किस सच्चाई की बात पूछ रहे हैं मुझसे?' वह तनिक सीधा होकर बैठ गया था।

'तो तुम चिन्मय नही हो? तुम्हारे पिता का नाम प्रबोध बागची नहीं है और यह होम एड्रेस—पद्म पुकुर ग्राम जिला हुगली, गलत है यह सब? यह भी गलत है कि तुम देशद्रोही हो? देखो काइया न बनो, वरना'

" 'म कह ही रहा हू कि जब आप अपना सच मुझपर इपोज करना ही चाहत ह ता बोलिए न आपकी सतुष्टि के लिए आपकी किस किस बात पर मुझे 'हा' या 'ना' करना पडेगा ।

" मैं तनिक विचलित हुआ । लडका ऊपर से ही सौम्य था अदर स सचमुच खतरनाक । सच्चाई की नस तक पहुचने के लिए मैंने नाटकीय ढग से अपना लहजा बदला, 'अच्छा, तुम खुद ही बताओ तुम कौन हो ?

" 'चिन्मय बागची।'

" 'पिता का नाम ?'

' 'प्रबोध बागची।'

" मैं कसमसा हो उठा, ' और पता पूछने पर कहोगे, पद्म पुकुर ग्राम, हुगली ?'

" जी।'

'किस कालेज म पढत थ ? और यहा भटकन का उद्देश्य ?

" वह भी आपकी फाइलो म होगा । न हो तो जो धारा लगानी हो, उसके अनुसार लिख ले '

" मैं खिसिया उठा, 'तो ठीक है, तुम कबूल करते हो कि तुमने अपने साथियो म मिलकर सरकार का तख्ता पलटन का षडयत्र किया अब भलाई इसी म है कि अपने उन देशद्रोही साथियो के नाम बता दो।'

' मेरी कडकती आवाज की अपेक्षा उसकी आवाज बेहद शात और ठडी थी, 'आपने स्कूल फाइनल तो पास ही किया होगा ?'

'मतलब ?'

" 'स्टेट और गवनमेंट का फक तो समझते ही होगे ?

' अपना तन मुझे सनसनाता लगा । भन्ना गया सिर । अपनी हार से उबरन के लिए झपला पडा मैं, 'सवधानिक सरकार के खिलाफ तख्ता पलटन का षडयत्र तुम लोगो न किया है । देशद्रोही नहीं हो तुम ?'

' नहीं, देश सरकार स बहुत ऊपर की चीज है और ऐस देश द्रोही करार देन लगें तो कल को राज्य सत्ता पलट जायगी तो आज के वफादार आप जस लोग भी कल देशद्रोही नहा करार द दिए जायगे। ?

" मैं उसके तक पर हतबुद्धि रह गया । बौखलाहट म पपरबट पर मेरी

पकड सख्त हो गयी। भला हो छोटे बाबू का, इसके पहले कि मैं कुछ कर गुजरता, उन्होने बडे सहज ढग से बातो को अपने मकसद की ओर मोड दिया, 'तो इसीलिए आप लोग हिसा यानी खूनी क्राति की बात करते है ।'

" 'आप तो हिसा का समर्थन नही करते है न ?' पलटा आक्रमण था उसका। और जवाब हाजिर था छोटे बाबू का, 'बिल्कुल नही ।'

' 'जब गरीब किसानो भूमिहीनो पर महाजन, सूदखोर, जोतदार और जमीदार हिसा करते है तब आपका आदर्श कहा रहता है ? आपकी पक्षधरता किससे सचालित होती है ? थाने के नाम से आतक क्या फूटता है ? सगठित हिंसा तो दुनिया की हर सरकार ही करती है। जनता से, जो स्वय राष्ट्र का एक घटक है, हर सरकार यह अपेक्षा रखती है कि वह उसके प्रति वफादार रहे। जो अपनी वफादारी प्रमाणित नही कर पाते, उन्हे कुचल देती है। दो देशो की इन्ही तथाकथित सवैधानिक सरकारो के नायको की लिप्सा मे बिला वजह दोनो देशो के नागरिको की जानें जाती हैं लेकिन यह हिंसा नही है न ? युद्धकाल ही क्या सत्ता केंद्रित हर लडाई मे बलात्कार, लूट, गुडागर्दी खडी फसलो को रौदने से लेकर हत्याए तक आपकी इस हिंसा की सूची मे नही आती। वह तो देशभक्ति मे शुमार हो गयी न ? विजेता के लिए जो देशभक्ति है, पराजित के लिए वही देशद्रोह है।'

" उसकी पूछताछ को लेकर हम काफी दिक्कत मे पड गये थे। सबसे विचित्र बात यह कि हमे अनजाने मे ही आक्रामक स्तर से उतरकर रक्षात्मक रुख अपना लेना पडा था। जैसे ही मुझे अपनी इस कमजोरी का एहसास हुआ, मैं तिलमिला गया। जाने कब तक उसे अधाधुध पीटता रहा। यह तो छोटे बाबू थे, जिन्होने चालाकी से उसे धक्के देकर हाजत मे डाल दिया, वरना अनर्थ ही हो जाता।"

कुछ ठहरकर उन्होने फिर बोलना शुरू किया तो आवाज भारी हो गयी, "उसे हाजत मे डालकर रिपोर्ट ऊपर भेज दी गयी। थोडे ही दिनो बाद वहा से निर्देश आया कि उसे घर ले जाकर उससे निहायत आत्मीयता से पूछ-ताछ करके धीरे धीरे तथ्यो का पता लगाया जाय।

"हाजत मे बाहर निकालकर मैंने उससे हसते हुए कहा 'तुम्हें मेरे घर चलना है, वही रहना है।

" क्या ? उसने सदेह की नजरो मे मुझे तौला।

" मेरे घर मे सिर्फ पति पत्नी है, बेटा नही है इसलिए, चलोगे न ?'

" वह मुझ उसी अन्दाज मे ताकता रहा। फिर न जाने क्या सोचकर तैयार हो गया, 'चलिए।'

" 'लेकिन देखो, भागोगे तो नही ?'

'वह फिस्स से हस पडा और अपना थैला कधे पर डालकर मेरे पीछे पीछे चल पडा। राह मे परखने के लिए उसे एक बार फिर जीप मे अकेला छोडकर उतर पडा लेकिन वह गुमसुम-सा बैठा रहा। घर पर मेरी पत्नी को उसने झुककर प्रणाम किया। पत्नी ने उसे देखा तो देखती रह गयी।

"मैं उसे उसके ठहरने के कमरे मे पहुचाकर लौटा तो देखता क्या हू कि पत्नी बेटे की तस्वीर के सामने खडी खडी रो रही है। मुझे सामने पाकर उसने कहा, सुनो, कही यह सौरभ तो नही है ?'

'अमूमन मुझे ऐसी भावुकता जचती नही। एक तो पेशा, दूसरे प्रकृति। मैंने 'हा हो' करके उसकी बात हसकर उडा दी, लेकिन अदर ही अदर उसकी भीगी पलको की तासीर से असपृक्त नही रह सका। इसे दिमाग का फितूर मानकर जितना ही बचकर निकलने की कोशिश करता, उतना ही फसता चला जाता। चोरी चोरी उसके चेहरे और हाव भाव का निरीक्षण करता, पत्नी भी ऐसा ही करती और कभी कभी नजरें टकराने पर हम सिर झुका लिया करते।

"इस तरह वह घर मे समाता गया। मैं उसके गुप्त सगठन और साथियों का हाल पूछता रह गया, मगर वह हर बार टालता रहा। दिन भर बागवानी करता या पढता रहता या नजरुल, सुकात आदि की काव्य-पक्तिया गुनगुनाता रहता।

"मैंने मन्त्रियो को भी देखा है, नेताओ को भी, अफसरो को भी मगर उसको देखने के बाद ही मैंने महसूस किया कि देशानुराग अध्ययन और सात्विकता मे कोई उसके पासग नही। वह जब मानव सभ्यता के विकास का विश्लेषण करता तो मैं मत्रविद्ध हो सुनता रह जाता। सहसा दायित्व

का खयाल आता तो सफाई से बाल्यपन पर उतर आता। 'तुम्हारे बाकी साथी भी तुम्हारी तरह विद्वान है?' वह खिलखिलाकर हंस पड़ता, 'विद्वान? विद्वान कौन बाबा? सभी तो विद्यार्थी होते है।'

पहली बार सतर्कता के तहत डायरी म मैंन 'विद्यार्थी' शब्द को नोट भी किया लेकिन बाद म निष्प्रप बेवकूफी सा लगा तो काट दिया।

"उसके कपडे बदरग सहा कर जहा तहा से फट चुके थे। मैंन उसके लिए नय कपडे मगाकर दिय। पहनने के लिए वह कतई राजी नही हुआ। पत्नी रुआसी हो उठी थी। मैं उसकी कसक समझ रहा था। दूसरे कमरे म जाकर उसे तसल्ली दी 'इस पर अपना क्या जोर! आज अपना बेटा होता तो'

'आश्चय, उसने कपडे बन्ल लिम इस बार बिना हीला हवाला किए। उन दिनो मैं बडी कशमकश म जी रहा था। कभी-कभी लगता, वह मुझे धता बता रहा है। ऐसे वक्त मैं उसके आचरण के रेशे रेशे उधेडकर रख देता अपनी शका की पुष्टि का एक भी आधार न पाकर मुझे कुढन होती। एक बार सोते-सोते अचानक आख खुली, खयाल आया, चिन्मय भाग न गया हो। उठकर उसके कमर म गया, बत्ती आन की तो उस नही पाकर कलेजा धक सा रह गया। हडबडाकर टाच लेकर मैंने अपना रिवाल्वर तथा अपने सदूका के ताले वगैरह की जाच की सब सही सलामत थ। चादर ओढ-कर टाच ले सामान म तलाश करन निकल पडा। वहीं चबूतरे पर घुटना म सिर छिपाये लेटा मिला वह। उस जगाकर कमर म ल आया। इसक बाद भी कई बार रात के सन्नाटे म उस मैंने बगीचे म बैठा पाया। धीरे धीरे मैं भूल ही गया कि चिन्मय मेरे घर का अस्थायी महमान है।"

बगीचे म देर तक ओस म बठना आखिर म रग लाया। वह बीमार पडा। बीमारी खिच गयी टायफायड मे तब्दील हो गयी। अदर-बाहर जिस अतद्वन्द्व म वह गुपचुप दिन गुजार रहा था उसस उसका स्वास्थ्य यो भी खराब होता जा रहा था। अजीब सी नाटकीय स्थिति म नियति न हम दोनो को ठन रखा था, इट वाज सिम्पली ए मटल टाचर।

पत्नी की भागदौड क बाद वह अच्छा हुआ तो उसकी सहत क लिए पत्नी ने मुर्गा बनाया था। मैं थान से जल्दी ही वापस आ गया था। जूत-

मोजे निकालकर हाथ मुह धोकर उसके साथ बैठ गया पीढ़े पर। अभी हमने ग्रास उठाया ही था कि दरवाजे पर नाक हुई। पत्नी रसोई से उठकर खोलने गयी तो सशस्त्र गार्डों को देखकर अचभे में पड गयी। मैं उठकर आया तो उनके हाथ का फरमान देखकर हतबुद्धि रह गया। बुलावा आ गया था उसका। उसी वक्त उस गार्डों के साथ भेज देना था।

'क्या बात है ?' पत्नी ने मेरे उतरे चेहरे और हाथ के कागज को देखा अचकचाकर पूछा। तब तक चिन्मय स्वय ही आ गया मेरे पास, 'क्या बात है बाबा ?'

मेरी जुबान पथरा गयी थी। उसने कागज ले लिया मेरे हाथों से। पढते ही चेहरा उतर गया। हाथ मुह धोकर अदर जाकर उसने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले। अब वह अपनी बदरग पैंट शर्ट में था मानो इस बदीगृह से मुक्ति मिल रही हो आज। अनुताप से मैं गला जा रहा था। मेरे अदर एक जबदस्त इच्छा हो रही थी कि वह पुराना चिन्मय लौट आये अपने तर्कों से हमारे अहिंसा देशप्रेम, नैतिकता इसानियत के सारे छदो की धज्जिया उडा दे लेकिन कहा। मुझे पक्का यकीन था कि वह अभी भी भाग सकता तो हम पकड न पाते लेकिन नही। उसने पहले की तरह ही मेरी पत्नी को तथा मुझे झुककर प्रणाम किया और मुझे क्षमा करेंगे अगर कोई भूल हुई हो। कहकर स्वय ही आम गार्ड्स के पास जा पहुचा, चलिए मैं तैयार हू।'

मैं चाहकर भी पूछ नही पाया कि उसका असली नाम क्या है। जैसे ही उसने दहलीज के बाहर कदम रखा, मेरी बीवी को जैसे सन्निपात हो गया, 'विश्वासघाती! हत्यारे! क्या करते हो ऐसी नौकरी ? क्यो ? प्रत्यक्ष घणा से मरने वाला जीव नही था वह उसे तो तुम्हारे प्यार के नाटक ने मारा। तुमने फिर से एक बेटा खो दिया। क्यो करते हो ऐसी नौकरी ? क्या क्या ? वह मेरी वर्दी पकडकर झकझोर बैठी और आहिस्ता-आहिस्ता बेसुध होकर लुढक गयी नीचे।

कदमो पर लुढकी पडी थी पत्नी भाय भाय करता हुआ सन्नाटा और सामने पडा था मुर्गा।

'बस, तभी से फिर कभी मुर्गा नही खा सका मैं।' कहकर व एक-

बारगी खामोश हो गये। हम एकाएक अपनी स्थिति का पता चला तो घबरा उठे। एक बजे कूच कर देना था और बारह बजकरचालीस मिनट हो चुके थे लेकिन इसके पहले कि उन्हें टोकता, वे उसी भावविह्वल मुद्रा में फिर से बडबडा उठे थे, "लडके बहादुर थे अपनी राह चल दिये। मैं सिर्फ उनकी यादों को भुलाने के लिए तबादले पर तबादले लेता रहा, अपराधियों को पकड पकडकर पीटता रहा, लेकिन यह सब छलावा है, असली अपराधियों तक ये मेरे बौने और बूढे हाथ कहा पहुच पाये ? अपने ही बहादुर पुत्रों की रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ रहा तो मैं और किसकी रक्षा का दम भरता फिर रहा हू यहा से वहा ? देश के सच्चे प्रहरी तो वही थे, फिर मेरा रास्ता उनके आडे क्यो आता है ?"

बाहर एक एक कर अर्द्ध सैनिक टुकडिया मार्च कराकर गेस्ट हाउस के पास लायी जा रही है। मैं अस्त व्यस्त हो उठता हू। घडी की ओर एक बार देखता हू और टोक देता हू "अनिमेष दा, अब तो खाने का भी वक्त नहीं है। प्लीज बी रेडी। स्ट्रेटेजी याद है न, पहाडी के पास नाले में दस की टुकडी उधर की झाडियो में पद्रह। तीस आदमी पश्चिम के तालाब, आप यहा से इन करेंगे, सकेंड लाइन आफ डीफेंस भी '

क्या वे बनैले सूअर हैं ?"

ऐ !' गडबडा जाता हू।

'आदमखोर बाघ है ?'

"मतलब ?'

'आखिर यह हाका किसलिए ?'

आपका दिमाग तो दुरुस्त है ? असामाजिक तत्त्वों के सफाये के लिए और किसलिए ! इस क्षेत्र में आपने काफी नाम कमाया है। आश्चर्य आज अपने दायित्व पालन में हिचकिचा क्या रहे है ?"

अनिमेष दा मेरी बात सुनते ही तनकर बैठ जाते है कुरसी पर। उनकी जलती आखो की आच चेहरे पर महसूस कर रहा हू। मदन टेढी कर पूछ बैठते हैं तो सोच लीजिए मैं बाकी कुछ नहीं जानता। मुझे छूट है न असामाजिक तत्त्वों का सफाया करने की ?'

जी, बिल्कुल ?' उनका सेंटीमेंट उभरता पाकर उस ओर उभारने के

काइयापन पर मुझे उतरना पडता है।

ठीक है मैं तयार हू।' देखत न देखन वला की फुर्ती स जवाना को तैयार करने चल देते हैं दढ कन्मो स। दस कदम भी नही जा पात कि मेरे कठ स अप्रत्याशित चीत्कार उछल पडती है 'नही।"

पनटकर खडे हो जाते हैं। अपने को इस कदर वेनकाब और शर्मिन्दा मैंन कभी महसूस नही किया।

असामाजिक कौन है? यह रहा सरकारी फरमान और यह रहा मास पटीशन जोनाकी के प्रतिष्ठित और शातिप्रिय त्रस्त नागरिको का।" जेब मे कागज निकालकर हाथा म झुलात हुए विद्रूप म सधी आवाज म बोल रहे हैं अनिमेष दा ये वन विभाग के कुछ भ्रष्ट कर्मी और कुछ कसे भ्रष्ट महाजन अफसर जोतदार और इनके गुर्गे यही हैं न आपके शाति-प्रिय प्रतिष्ठित नागरिक ? आखिर य त्रस्त क्यो है उन भूमिहीन कासा और आदिवासिया स? गाव की दस लाइसेंसशुदा और बीस अवध बदूकें ता इन्ही क पास हैं गाव की अस्मी प्रतिशत जमीन तालाब, बाग-बगीचे भी इन्ही के हैं। गाव मे जब भी कोई मारा-पीटा गया तो वह उस दूसरे भूमिहीन तबके का रहा, बलात्कार भी हुए तो उन्ही पर। सत्येन का कसूर सिर्फ यही है कि गूगे अब बोलन भी लगे है, सरकार क्या नही चाहती कि व वालें? आज व अपने अधिकारा भूमि जगल, मजदूरी और अस्मत के लिए खड होन लगे है तनकर? सरकार क्या नही चाहती कि वे खडे हा तनकर? कई जगहा पर तो सरकार न स्वय हथियार भी बाटे है शोपिता को आत्मरक्षाथ! अगर यह सही है तो सत्यन स हमारा टकराव क्या?

इस्पक्टर अनिमष माइट इट यू आर ऑन डयूटी।'

'यस सर! मालूम है एक पुलिस अफसर हू और डयूटी पर हू और अर्जुन का वैराग्य इस कुरुक्षत्र म क्षम्य नही, न डिसिप्लिन तोडने म यकीन रखता हू न कत्तव्य पालन म मरा रेकाड दखा जा सकता है दश के लिए सिर कटान को भी कह मैं तयार मिलूगा, लेकिन हम भी हाड मास के पुतले है दिमाग है सीने मे धडकता दिल है हम ब्लाइड फोस की तरह न ट्रीट किया जाय। आखिर पुलिस अफसर भी तो देश का एक नागरिक

होता है और नागरिक होने के नाते यह सवाल करने का हक ता मुझे है कि यह तत्परता उस समय क्या नही दिखाई गयी, जब सरकार की तय मजदूरी मागने पर इन्हें पीटा जा रहा था जब नय-नय एक्टो की आड लेकर ठेकेदारो के खरीदे हुए वन विभाग वाले इनके परपरागत जोन के अधिकार इनके जगल स इन्हें वचित कर रहे थ, जब इनकी अर्जिया पर अधिकारी काना म तल डाले पड़े थ।'

'आइ वाट टाल्टरट यू एनी मोर। मुझे मात्र 'हा' या 'ना' म जवाब दीजिए आप, हुक्म की तामील करत हैं?' मैं तडक उठता ■।

"पहले आप बताइए, आप मरी सूचनाओ के आधार पर पुनर्विचार करत हैं?'

'सिफ 'हा' या 'ना' म जवाब दीजिए कहा न ?

"इस स्थिति क सापेक्ष म मेरा उत्तर है ना'!" एक क घहराते गजर के साथ ही सिर पर हथौडे के प्रहार सी बरसती है उनकी नकार। हाल म सन्नाटा है। घडी का काटा टिक टिक करता आग सरक गया है।

'मुझे अफसोस है अनिमेष दा, एक सच्चे और ईमानदार अफ्सर को मैं अब नही बचा पाऊगा।' मैं गहरी सास लकर हाथ पाव का ढाल दता हू।

'खट खट करती बूटा की धमक, पीछे बधे हाथ अचानक पलटत हैं, सच्चाई ईमानदारी और निर्भीकता की राह पर चलना आप सिखात है, कानून और सदाचार की बाते आप सिखात हैं हमारी सतानो को क्या हम पूछ भी नही सकत कि उन्ही सदाचार और कानून की आड लकर सच्चाई, ईमानदारी और निर्भीकता की राह पर चलने वालो हमारी सताना का खून हमीसे क्या कराया जाता है!'

खामाशी ऐसी छा गई है, जस हम इसान नही, पुतले हो, निर्जीव स, वक्त की हर धडकन अधेरे की मौजा पर हिलकोर लेती हुई बियाबाना मे फना हो रही है। लटक गये हैं जवाना के सिर, उलटी झुकी है बदूकें। वायरलेस पर सूचना भेजत भेजत रुक जाता हू। आखिरी बार मानवीयता के तहत पूछता हू अनिमेष दा से, 'क्या आपन फिर ■ कुछ सोचा ? मरा ख्याल है, आप ज्यादा ही भावुक हो गय है।'

अनिमेष दा सिर ऊपर उठाते हैं, आखें सुख हैं और छलक पडने को बेताब बोलते हैं रुक-रुककर, भावुक ही होता तो पत्नी की तरह पागल होकर मर नही जाता अब तक ? बेटा मर-मरकर भी जिन्दा है और मैं बेह्या सा लाश घसीट रहा हूं। आपको शायद पता नही है मरा बेटा सौरभ अगर जिंदा होता तो ग्यारह साल पहले चिन्मय जैसा होता और आज सन्यन जैसा।'

दमनचक्र

सनील कौशिश



वह जब यहा आया था, कस्टक्शन का काम जोरा से चल रहा था। जहा जहा कस्टक्शन का काम पूरा हो चुका था, वहा मशीनरी बैठाने का काम शुरू होने लगा था। काम तेजी से चल रहा था। उसे याद है इटरव्यू के वक्त प्लाट मैनेजर ने उससे बडे-बडे सवाल पूछे थे। जैसे फिटर का इटरव्यू न हो, किसी फोरमन का हो और जब वेतन की बात आई तो एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिग म आधा घण्टे तक बनियो की तरह सौदेबाजी करत लग थे। उसकी माग चार सौ रुपये थी और वे साढे तीन सौ की बात कर रहे थे। ज्वाइन करने के बाद यह दे देंगे, वह दे देंगे वाली बात बार-बार कही जा रही थी। वह जानता था, बाद की कौन जाने? इण्टरव्यू के समय जो हा गया सो हो गया। फिर साढे तीन सौ रुपये तो वह पुरानी कम्पनी म पा ही रहा था। कुछ तो गैप मिलना चाहिए। रह रहकर एक बात मन म आती थी कि यहा ज्वाइन करने से घर नजदीक हो जायेगा। वह अपनी बात पर अडा रहा। महीन भर के अदर उसे चार सौ रुपये का नियुक्ति-पत्र मिल गया था।

शुरू म वह बीवी-बच्चो को साथ नही लाया था। नयी नयी जगह अपरिचित लाग। उसन सोचा था जब तक कुछ ठीक से जम नही पायेगा, वह बच्चा को नही लायगा। पास ही के इलाके म एक छोटा-सा कमरा लेकर रहने लगा था वह। ज्वाइन करत ही उस कम्पनी के आतकवादी रवैय का सामना करना पडा था। सवेर डयूटी पर आत ही वह चेंजरूम म जाकर आवरहाल पहन लेता और सेक्शन मे चला जाता।

फोरमैन उसे दिन-भर का काम सिलसिलेवार ढंग से समझा देता। साथ ही तावीद कर देता कि शाम पाच बजे तक सब काम पूरा हो जाना चाहिए। नई पाइप लाइनें बिछ रही थी। दो तीन कैजुएल वर्करो को साथ लिए वह सारा दिन काम म खटता रहता। काम इतना अधिक होता था कि कुछ-न-कुछ रह ही जाता और रोजाना शाम को फोरमैन की सवालिया नजरो का सामना करना पडता उसे। रोज रोज का रटा-रटाया वाक्य 'आउटपुट बहुत कम है, तुम्हारी। ऐसे नहीं चल पायगा।' वह मन-ही मन बुदबुदाता— 'आदमी हू मशीन नही। खुद करके देखे तो पता चले।'

अलग-अलग प्लाटो के काट्रक्ट भी अलग-अलग कम्पनियो के थे। जापान, कैनेडा इग्लैंड व आस्ट्रिया की कम्पनियो के प्लाट थ। इन तमाम कम्पनियो से काफी लोग मशीनरी की देखभाल और प्लाट बठाने के सिलसिले मे यहा आये हुए थे। जिस प्लाट के मेंटीनेंस विभाग म वह था, वह पूरा प्लाट इग्लैंड की कम्पनी का था। पूरे प्लाट मे य गोरे घूमते नजर आते थे। य गोरे अग्रेज हिंदुस्तानियो को बहुत ही हेय दृष्टि से देखते थ। जब-तब किसी भी वर्कर को सीटी बजाकर या हाथ के इशारे से बुला लेते और अपनी केबिन से थमस, सिगरेट-लाइटर या अन्य कोई चीज ले ने के लिए भेज देते। ऊपर रेलिंग पर किसी इन्स्ट्रूमेंट को चेक करते समय नीचे फ्लोर पर किसी जवान मजदूर लडकी को काम करते देख सीटिया बजाते। लीक टेस्टिंग के लिए प्लास्टिक की बोतल म भरा सोप सोल्यूशन, उसके सिर पर गिरा देते। जब वह बेचारी ऊपर देखती तो वे फिर स सीटिया बजाने लगते। दरअसल इन गोरो का विरोध करने का साहस किसी मे नही होता था। उसे बहुत गुस्सा आता था मगर वह चुप रह जाता।

एक दफा वह और सिद्धेश्वरी प्रसाद प्लाट मे एक फ्लेंज के नट-बोल्ट टाइट कर रहे थे। सिद्धेश्वरी प्रसाद बोल्ट का सिरा स्पैनर म फसाकर उस दाये जमीन पर उकडू बैठा हुआ था और वह नट टाइट कर रहा था। प्लाट के एक गोरे ने पीछे स आकर उकडू बैठे सिद्धेश्वरी प्रसाद के हिप्स म नीचे अपने बूट की ठोकर लगाकर उचकाया और बोला, "व्हाट आर यू डूइंग ब्लडी बास्टर्ड?" सिद्धेश्वरी चौंक पड़ा था। गुस्से स तमतमाते हुए उसने पलटकर एक जोरदार झापड उस गोरे के मुह पर जड

दिया था। झापड खाते ही वह चिल्लाता हुआ अपनी केबिन की ओर भागा था। कुछ देर म सिक्यूरिटी वाला की जीप वहा पहुच गई थी। सिद्धश्वरी प्रसाद को जीप म बिठाकर गेट पर ले जाया गया और वही स उस बाहर कर दिया गया। उसका गेटपास छीन लिया गया। उसका कार्ड भी रैक स निकाल लिया गया। उसका बकाया वतन भी उस नही दिया गया।

विदेशी इजारदारा की इस कम्पनी के प्रबन्धका को पूरे अख्तियारात नही मिले थे। सारा काम इन विदेशिया क हाथा म था। छोटे यानी मझाले अफसर जो परमानेंट थे, प्रमोशन क लिए और जो परमानेंट नही थ अपनी नौकरिया को पक्की कराने की गरज स इन विदेशिया को तबियत स मक्खन लगात थ। कोई कुछ भी कहे बस एक ही रटा रटाया वाक्य, यस सर।' आगे-पीछे दायें-बायें, ऊपर-नीचे हमेशा यस सर। यदि कोई कह ?— यू बिग वास्टड। जवाब वही होगा 'यस सर'। हर सास, हर धडकन म बसा रखा 'यस सर। और इसी यस सर' ने बहुत स लोगो को बहुत ही कम वक्त मे 'अमृतसर' पहुचा दिया यानी प्रमोशन और स्पेशल इन्क्रीमेंट।

कारखाना तयार होकर खडा हो रहा था। कुछ प्लाट तो लगभग तैयार ही थे। धडाधड नियुक्तिया हो रही थी। प्लाट आपरेटर, चाजमैन, केमिस्ट लैब ब्वाय, पकिंग प्लाट आपरेटर वगैरह के लिए नियुक्तिया हो रही थी। इनके अलावा विज्ञान के स्नातक लडके ट्रेनी आपरेटर की शक्ल म भर्ती किय जा रहे थ। ये ट्रेनी आपरेटर सिर पर हैलमेट लगाय हाथा म प्लाट की ड्राइग और आपरेशन मनुअल लिय इधर स उधर घूमते नजर आते थे। प्लाट ट्रायल के तौर पर चलाये जाने लग थे। जगह जगह पाई जानेवाली लीकेज और दूसरे मरम्मत के काम कराय जा रहे थे। विदेशी कम्पनिया के दफ्तर हटाय जाने लगे थे। इन्ही के साथ साथ इनके अफसरान भी वापस जा रहे थे।

कारखाने को उत्पादन देते एक वर्ष से ऊपर हो चला था।

आरम्भ म तो धडाधड नियुक्तिया कर ली गयी। बाद मे प्रबन्धका को अहसास हो रहा था कि स्वचालित कारखाने मे जरूरत से ज्यादा आदमी काम कर रहे हैं। यू अब तक तो चन अमन था मगर धीरे धीरे कारखाने

के अफसरा के रुख म सख्ती और तग करने जसी बातें नजर आन लगी थी। निन्यत छोटी छोटी बाता पर सलाहें और चतावनी भरे पत्र दिय जान लग। यहा के वकरा का यूनियन के सम्बध म न तो कोई अनुभव था और न जानकारी ही। शहर के दूसरे कारखाना म होनेवाली हडताला के बार म व जानत जरूर थे अलबत्ता यहा ऐसा प्रयास नही किया गया था। प्रबधका क सख्ती क रुख म लगातार बढोतरी हो रही थी। प्रबधका ने इस सिलसिल का जो पहला बडा कदम उठाया वह था—स्थायी रूप स काम करनवाल पतीस महतरो की सीधे-सीधे बर्खास्तगी। कोई चार्जशीट नही, बस कारखान म काम नही है। इन लोगो न श्रम विभाग की शरण ली। वहा के अफसरान उन्ह इधर-स उधर से लटकात रहे। दूसरा हमला प्रबधका की ओर स तब हुआ जब कारखाने क प्लाट आपरटरा को इस बात का नोटिस दिया गया कि वे वाल्व घुमान के अलावा अपने-अपन विभाग की ड्रेनज नालिया भी खुद साफ करेंगे। यह काम उनक नचर आफ जाब म शामिल है। नौकरी से निकाल जान का डर सभी लागो म भरा था। विरोध करन का साहस किसी म नही था। वकशाप क लोगा को ट्राली खीचन क लिए बाध्य किया जाता रहा। कुछ काम तो एसे थ जो गोरा क समय स ही किय जात रहे थ। वड बड वाल्व प्लाट म ल जान क लिए बस एक ही तरीका था कि एक पाइप क बीच म उस रस्सी स बाधकर कधे पर लटकाकर दो चार लोग मिलकर ले जाते। केमिस्ट शुरू स ही प्लाट जाकर विभिन्न प्वाइटा से गैस साल्यूशन और लिक्विड क नमून भरकर लात। यू यह काम लब ब्वाय का था मगर व आरम्भ स ही अफसरा का खाना लाने और उनके वास्ते चाय-काफी बनाकर दन और निजी कामा के लिए दौड लगा रहे थे। कारखान म एक दहशत भरा माहौल बन गया था।

मजदूरा का तग करन क दौर म प्रबधका क हौसल निरन्तर बढ रह थ। दो-तीन वकरा को रोज निकाल दना मामूली-सा बात हो गई थी। वकशाप क गुप्ता को महज इसलिए निकाल दिया गया कि उसन अपना शार-मन म पाखाना जान के लिए इजाजत नही ली थी। जबकि उसका कहना था कि वह आधा घण्टा तक उस वकशाप म ढूढता रहा था जब वह नहा मिला तो वह चला गया। गिरधारीलाल सुरक्षा विभाग क सिपाही पर आराप

था कि वह फलां दिन रात की पाली में सोता हुआ पाया गया। मजेदार बात यह थी कि वह उस दिन ड्यूटी पर आया ही नहीं था। न किसी प्रकार की कोई चार्जशीट न कोई इन्क्वायरी। सीधे-सीधे गेट के बाहर। प्रबंधकों का अनुमान था कि वे खूब मनमानी कर सकते हैं। श्रम विभाग के बड़े अफसरों से उनकी साठगांठ बनी हुई थी।

वर्कर अंदरूनी तौर पर बौखलाया हुआ था। अचानक ही एक दिन कम्पनी ने नोटिस निकाल दिया कि फिनिशिंग विभाग के समस्त आपरेटर्स फिल्टर की सफाई करेंगे। और मशीन में उसे बदलने का काम भी करेंगे। अब तक यह काम मेंटीनेंस विभाग के लोग कर रहे थे। फिल्टर का गर्म भाप लगाकर साफ करना व मशीन से चोक हुआ फिल्टर निकालकर नया फिल्टर डालना यही इनका काम था बस। आपरेटरों के ऊपर यह काम डालने का मतलब था उनके कार्यभार को बढ़ाना। बहुत मुमकिन है इसके पीछे प्रबंधकों का इरादा मेंटीनेंस के लोगों को कम करने का रहा हो और अगला कदम कुछ फिटरों की बर्खास्तगी का हो।

वर्करों के बीच असंतोष की लहर फैल गई थी। कारखाने के भीतर कानाफूसी के दौर शुरू हुए। फिनिशिंग विभाग के छत्तीस आपरेटरों ने गुप्त रूप से एक मीटिंग कारखाने के बाहर कर डाली। कुछ उत्साही वर्करों ने शहर के प्रसिद्ध मार्क्सवादी मजदूर नेता कामरेड रामप्रसाद से सलाह-मशविरा किया। कामरेड रामप्रसाद पहले से ही कई कारखानों की यूनियनों का संचालन कर रहे थे। हफ्ते भर तक सलाह मशविरे और विरोध के फलस्वरूप होनेवाली तमाम स्थितियों से निबटने के खास मुद्दों पर बहसें होती रहीं। अन्ततः वे सामूहिक रूप से किसी निष्कर्ष पर पहुंच गए थे। तब तक केवल दो आपरेटरों को रात की पाली में फिल्टर साफ करने के लिए कहा गया था और वे इस काम को करने के लिए मना कर चुके थे। उन दोनों की उस दिन पेशी थी प्लांट मैनेजर के दफ्तर में। ज्यों ही उन्हें जवाब तलब के लिए दफ्तर में बुलाया गया, तमाम आपरेटर काम छोड़कर प्लांट मैनेजर के दफ्तर के बाहर इकट्ठा हो गये। नोटिस बोर्डों से नोटिस फाड़ लिये गये और पहला नारा उन्होंने सामूहिक रूप से लगाया, 'इन्कलाब जिंदाबाद! मुखर्जी बाबू हाय, हाय! जो हमसे टकरायेगा,

चूर चूर हो जायगा। हर ओर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है। इन्कलाब जिन्दाबाद !'

कारखाने में 'इन्कलाब' की यह पहली आवाज बुलन्द हुई थी। दूसरे विभागों के उकरों ने भी आकर नारे लगाने शुरू कर दिये थे। लगता था दिन रात चलनेवाली मशीन भी अपनी आवाज के साथ ही नारे बुलन्द करने लगी हैं। मुखर्जी बाबू जो शायद आपरेटरों के डिसमिस आर्डर लेकर बैठे थे, दरवाजा खोलकर एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग की ओर भागते नजर आये। आपरेटरों ने तय किया हुआ था कि जब तक नोटिस वापस नहीं लिया जाएगा, काम शुरू नहीं होगा।

प्रबन्धक हैरान थे। उन्होंने बौखलाकर समस्त छत्तीस आपरेटरों को निलम्बित कर दिया और पूर्ण कारखाने में से आफ घोषित कर दिया। सरकार को दिये गये ज्ञापन में प्रबन्धकों ने कहा था 'चूंकि इस कारखाने के मुख्य प्लांट, फिनिशिंग विभाग के तमाम आपरेटरों ने काम बंद कर दिया है जिसकी वजह से कारखाने का हर विभाग प्रभावित है। उत्पादन रुक गया है और प्रबन्धक ले-आफ करने के लिए बाध्य हैं।'

बड़ी अजीब और भयावह स्थिति पैदा हो गई थी वर्करों के सामने। कामरेड रामप्रसाद खुद कारखाने के फाटक पर आए। आपसी सलाह-मशविरे से यूनियन बनी। कामरेड रामप्रसाद को यूनियन का अध्यक्ष और फिनिशिंग सेक्शन के सबसे उत्साही व जोशीले नौजवान आपरेटर अखिलेश कुमार को यूनियन का जनरल सेक्रेटरी चुन लिया गया। फिर हर विभाग से कार्यकर्ताओं का चुनाव हुआ। आपसी चन्दे से रातों रात यूनियन की झोपड़ी का निर्माण किया गया और उसपर लाल झण्डा फहरा दिया गया। संघर्ष की शुरुआत इस प्रकार के नारों से हुई 'लाल झण्डा कर पुकार, इन्कलाब जिन्दाबाद। जीना है तो मरना सीखो कदम मिलाकर चलना सीखो। हमारी एकता जिन्दाबाद।'

फाटक के बाहर लगने वाले नारों की आवाज प्रबन्धकों के कानों में पहुंचने लगी थी। वर्करों में जोश भरा था। वर्कर सारी-सारी रात कारखाने की चारदीवारी के बाहर गश्त लगाते थे—मशालें जलाकर। इसी बीच कुछ मनोरंजन भी हो जाता था। सरदारों का एक जत्था भंगड़ा करता हुआ

गश्त लगाता था। बीच बीच म नारे भी लग जाते थे और कुछ फिल्मी गाने भी हो जाते थे। सुरक्षा विभाग के कर्मचारी अन्दर की खबरें बाहर पहुचाने मे यूनियन को मदद कर रहे थे। प्रबन्धक इस बात को जानते थे और व सुरक्षा विभाग के कर्मचारियो पर भरोसा नही रख रहे थे।

एक दिन रात के दो बजे दो ट्रक बहुत तेज गति स कारखाने के पिछले गेट पर पहुचे। ट्रको क निकट पहुचते ही फाटक एकदम स खोल दिया गया और ट्रक अन्दर हो जाने क बाद एकदम से बन्द कर दिया गया। उस तरफ गश्त लगा रहे वर्करो ने इसकी खबर तत्काल यूनियन के लोगो तक पहुचाई। खबर मिल रही थी कि कम्पनी स्टाक मे पडा माल पैक कराने के लिए बाहर स मजदूर लायी थी। स्टाक मे पडा माल यू भी यदि महीने भर म पैक करके हटाया नही जाता तो उसक खराब होने का डर था। प्रबन्धक इसक लिए बेचैन थे। सुबह नौ बजे तमाम वर्कर इकट्ठा हुए। नारेबाजी करते हुए जबरदस्ती फाटक धकेलकर पैकिंग प्लाट पहुचे। पूरा पैकिंग प्लाट घेर लिया गया। जगह जगह पी०ए०सी० के जवान तैनात थे। वर्करो न अन्दर काम कर रहे मजदूरो को बाहर खदेडा। इसी वक्त म कुछ गुण्डे किस्म के लोग लडने पर आमादा हो गए। यूनियन क सेक्रेटरी न मार-पीट न करने का निर्देश दिया। मालूम हुआ था कि कम्पनी गल्ला मण्डी स पल्लेदार किस्म के लोगो को पाच रुपये रोज पर लाई थी। उन्ह यह तक नही बताया गया था कि उन्हें जाना कहा है? पल्लेदार किस्म के य लोग बाहर की ओर जा रहे थे। गुण्डे उन्ह रोकने की कोशिश कर रहे थ। पी० ए० सी० के जवान चुप खडे बीडिया फकते रहे थ। अन्त म पल्लेदार किस्म के लोगो के साथ-साथ गुण्डे भी बाहर चल गय। जब कोई भी बाहरी आदमी कारखाने म नही रहा तब सब वर्कर बाहर निकल आय और नारे लगाने लग।

प्रबन्धको की यह योजना नाकामयाब रही। प्रबन्धको न वर्करो क घरो पर धमकी भरे पत्र भेजना शुरू किया था। स्थानीय पत्रो म 'चेतावनी' शीर्षक स बडी बडी कायदे-कानून की बात, राष्ट्रहित की बात छपवाई जा रही थी। कामरेड रामप्रसाद न प्रबन्धको स बातचीत करने की कई बार प्रयास किया मगर नाकामयाब रहे। पन्द्रह दिन तक इसी तरह स चलता रहा।

आखिर एक दिन प्रबन्धकों ने खुद ही बातचीत के लिए बुलावा भेजा। रात के दस बजे तक बातचीत चलती थी। कई मतबा बीच-बीच में कई खास मुद्दों पर बातचीत का सिलसिला टूट जाता था। कई दिनों की दिन रात की बातचीत के बाद दोनों ओर से एक समझौते पर हस्ताक्षर हो गये थे। तमाम निलम्बित आपरेटर काम पर ले लिये गये। पद के अनुसार जाब लिस्टें तैयार हो गयी थी। कारखाना फिर से उत्पादन देने लगा था। वर्करों में एक अजीब तरह की खुशी थी।

सब कुछ ठीक से चल रहा था। तभी कारखाने में एक बहुत बड़े अफसर की नियुक्ति हुई जिसके बारे में कहा जा रहा था कि वे सज्जन माने-जाने स्ट्राइक ब्रेकर है। लम्बे-चौड़े बदन पर नियुक्त होने वाला यह अफसर बड़े-बड़े मामलों का लटकाने, तोड़ फोड़ कराने, गुण्डों को किराये पर लाने व सरकारी मशीनरी से अपने हक मे काम करवा लेने में अपना सानी नही रखता है। जाहिर था कि प्रबन्धक वर्करों को कुचलने का अरमान दिल मे लिये बैठा है। आरम्भ मे यह अफसर वर्करों से मधुर सम्बन्ध बनाने की कोशिश करता रहा। धीरे धीरे हर विभाग में अपने दो-दो, चार-चार आदमी पहुंचा दिये। जिनका काम था वर्करों को बरगलाना, यूनियन के खिलाफ माहौल तैयार करना। कुछ विभागों मे ओवर टाइम व अन्य सुविधाए देकर और कुछ को इन सबसे वंचित रखकर आपसी रंजिश फैलाने की कोशिश की जाती। यूनियन समय-समय पर इस सबके लिए वर्करों को सावधान करती रहती थी।

हर जगह कुछ स्वार्थी तत्त्व जरूर होते हैं, सो यहां भी थे। यूनियन की तमाम हरकतों की खबर कम्पनी के अफसरों तक पहुंचाना उनका काम था, इसके बदले में वे पाते थे ओवरटाइम और मेरिट अवार्ड।

पिछले समझौते के तहत पूरे कारखाने के अलग-अलग विभागों की मिनिमम मनिंग की बात तय हो चुकी थी। अभी तक इसी के अनुसार काम चल रहा था। गैस प्यूरीफिकेशन विभाग मे एक पाली में सात आपरेटर काम कर रहे थे, वहां पर सात के बजाय पांच कर दिये गये। इसी प्रकार हर विभाग मे न्यूनतम संख्या में कमी कर दी गई। आपरेटरों पर काम का भार बढ गया था। चारों तरफ से रोष प्रकट किया जाने लगा। यूनियन

ने इस प्रकार समझौते को तोड़कर एकतरफा निणय लेने का विरोध किया और पूव समझौते को लागू करने की जोरदार माग की। प्रबधको न इस अपील पर कान नही रखे। फलस्वरूप आपरेटरो न काम बद कर दिया। प्रबधको ने सामूहिक निलम्बन शुरू कर दिय। सबस पहल गस प्यूरीफिकेशन के समस्त इक्कीस आपरेटर निलम्बित कर दिम गय। इसी तरह धीरे धीरे पूरे कारखान के साढे चार सौ वकरो को निलम्बित कर दिया गया। वकरो पर झूठे चाज लगाय जा रहे थे। एक वकर पर चाज था 'आपने काम से इकार किया। अपन अधिकारी का गालिया दी और कहा, तुम्हारी हिटलरशाही घुसेड दी जायगी।" दूसरा आरोप पत्र था, 'आप रात की पाली मे नग घमत पाये गय। जब आपका अधिकारी आपके पास आने लगा तो आपन उसकी ओर जूता फेंका।"

कम्पनी कुछ झूठे आरोप लगाकर यह बताना चाहती थी कि यहा का वकर काम नही करता, बस गुण्डई करता है। इतनी बडी सख्या म वकरो को निलम्बित करन के बाद कम्पनी न पूण लेआफ घोषित कर दिया। कामरेड रामप्रसाद न कई मतबा प्रबधको से बातचीत करनी चाही मगर नतीजा कुछ भी नही निकला। अचानक ही जिलाधीश ने गेट मीटिंगो के लिए इजाजत देना बद कर दिया। उनके अनुसार तब उन्हे शांति भग होने का खतरा नजर आने लगा था। वे बिक चुके थे। गुप्त मीटिंग की जा रही थी। प्रबधको ने अपने दूसरे सहयोगी कारखानो का स्टाफ काम करने के लिए बुलवाया। कम्पनी के गेस्ट हाउस म यह स्टाफ इकट्ठा हो रहा था। यूनियन न फसला लिया कि इस स्टाफ को कारखान के भीतर नही घुसने दिया जायगा।

जिस दिन यह स्टाफ बसो म भरकर कारखाने के फाटक पर पहुचा था, वकरो ने बसो को गेट पर ही रोक लिया और बसो के आग लेट गय। कुछ गददार किस्म के वकरो ने अपने-अपने साथियो के ऊपर से गुजरकर अदर जाने का प्रयास किया मगर कामयाब नही हो पाय। केन्द्रीय रिजव पुलिस के भारी जमाव क बावजूद वकरो के हौंसले बुलद थे। तभी अचानक स्थानीय पुलिस ने लाठी बरसाना शुरू कर दिया था। इधर-उधर भागते हुए वकरो के पीछे घुडसवार पुलिस दौडाई गई थी। भारी सख्या मे वकरो को

गिरफ्तार किया गया। यूनियन के सैक्रेटरी अखिलेश कुमार को राहजनी के झूठे आरोप में फंसाकर जेल भेज दिया गया। वर्करों को घरों में गिरफ्तार किया जाने लगा। धर पकड़ होती रही और वर्करों को जेल में ठूंसा जाने लगा। श्रम विभाग मूक दर्शक बनकर प्रबन्धकों की दलाली करता रहा। श्रम मंत्री कानों में तेल डाल सोते रहे। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के बारह सौ जवान फैक्टरी के भीतर कदम-कदम पर तैनात थे जिन्हें देखकर लगता था यहां कोई कारखाना नहीं छावनी है। कामरेड रामप्रसाद दिल्ली और प्रदेश की राजधानी दौड़ते रहे। कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही थी।

कामरेड उस दिन दिल्ली में नेताओं से बात करके लौटे थे। उनके साथ यूनियन के दो कार्यकर्ता भी थे। रात के दस बजे गाड़ी स्टेशन पर पहुंची थी। स्टेशन से रिक्शा करके तीनों एक ही रिक्शा में शहर की तरफ चले थे। बाबू नाले के पास दोनों कार्यकर्ता उतर गए थे। अकेले कामरेड ही लेबर कालोनी की तरफ जा रहे थे। कम्पनी बाग के पास से रिक्शा मुड़कर जानकी देवी मार्ग पर चला जा रहा था। अचानक ही पीछे से मोटर साइकिल पर सवार दो व्यक्ति आए। रिक्शे के पास मोटर साइकिल धीमी करके पीछे बैठे व्यक्ति ने कामरेड पर फायर किये और भाग गये। कामरेड रिक्शे में ही ढेर हो गये। पूरे शहर में यह खबर तेजी के साथ फैल गई। पुलिस ने रिक्शे वाले के बयान लिये। इधर-उधर छिप कर खबर पाकर यूनियन के दफ्तर में जमा होने लगे थे। जिलाधीश ने अखिलेश कुमार को रिहा कर दिया था कामरेड की शव-यात्रा में शामिल होने के लिए।

वह इस हादसे से विक्षुब्ध हो गया था। वह सोचने लगा था. शायद इस घिनौनी, भ्रष्ट व्यवस्था में ऐसा ही चलता रहेगा।

फन

हनुमंत मनगटे



चादामेटा बरकुही रोड के उस झीलनुमा ढाल पर वह उसे दिखा था। आजकल ग्रामपंचायत ने सडक के किनारे लैंप पोस्ट लगवा दिए हैं लेकिन उन दिनों शाम के बाद घने अंधेरे के कारण चोर-उच्चकों के लिए वह स्थान शिकारगाह था। राह चलते लोगों की जेब से जबरन रकम निकलवा लेना, चाकू की नोक पर हाथ की घडी और अंगूठी उतरवा लेना आम बात थी। वह बरकुही से चादामेटा जा रहा था, शायद किसी घरेलू काम से, तभी वह उसे मिल गया था। दो मीटर लंबा, काला स्याह, चमकीली आंखें। उसके साथ एक और था। था या थी, कहना कठिन था। जब वे लडते हुए आपस में गुत्थमगुत्था हो जाते और पूंछ के बल सीधे खडे हो जाते, तो आदमकद नजर आते। जब वह अपने स्थान पर मंत्रमुग्ध खडा होकर उन्हें देख रहा था, तभी एक साइकिल सवार अपनी मस्ती में गाना गाता हुआ उनके करीब से निकला। आपस में लडना छोड वह साइकिल सवार के पीछे लग गया। एकाएक आयी बला को देख साइकिल सवार यंत्रवत साइकिल के पैडलों पर जोरों से पैर चलाने लगा। उसके होशोहवास गुम हो गये थे। घबराहट में या स्पीड के कारण उसके सिर की टोपी उडकर उसके करीब गिर गयी थी। और यह अच्छा हुआ था कि वह साइकिल सवार का पीछा छोडकर टोपी से उलझ गया था। टोपी की चिंदी चिंदी कर जब वह लौटा, उसका साथी वहीं ढाल पर पसरा हुआ था। धीरे धीरे वे दोनों सडक पार कर पुलिया के नीचे नाले में चले गये थे। वह झीलनुमा क्षेत्र 'सर्पेंटाइन एरिया' के नाम से प्रसिद्ध है। बरसात में लोकिचुओं की तरह वे निकल आते हैं। ट्रक के पहियों के नीचे

पुचले हुए गेज दो चार उस मौसम म मिल जाना साधारण गात है।
वह फिर चादामेटा न जा सक था। घबराहट तो नहीं थी लकिन लगता था कि एकाएक वह अ यमनस्क हो गया है। शायद इस घटना का उसके भविष्य के जीवन पर बहुत गहरा असर पड सकता था। हर वक्त उसके मस्तिष्क म साप का फन लहराता रहता, दोमुही जीभ लपलपाती रहती थी।

उसके पिता बरकुही कोलियरी मे बडे बाबू थे। आजकल कोयला खदानो का राष्ट्रीयकरण हो गया है, लेकिन उन दिना खदाना पर व्यक्तिगत मिल्कियत हुआ करती थी। शावालिस कपनी के जाल म करीब दस-बारह खदानें थी, इनम स एक बरकुही भी थी। हर खदान का एक मैनजर कुछ खदानो के लिए डिप्टी सी०एम०ई० और उसके ऊपर बोड आफ डायरक्टस। आजकल इस क्षेत्र म करीब सत्तर किलोमीटर के घेरे म खदानो की सुरगें बिछी है और हर वप नयी नयी खदानें खुल रही हैं। उन दिना जब भी कोई खदान का लीज मिलता और पिट की खुदाई का काम शुरू होता तो आसपास के क्षेत्र के हर तबके के व्यक्ति एकत्रित होने लगते अपनी-अपनी काबलियत के हिसाब स लोग नौकरी करने लगते पान के ठेले लग जात, किरान की दुकानें होटल, कपडे की दुकान, जनरल स्टोस दखत दखत खुल जाते। दसरे कार्यों के लिए तो लोकल व्यक्तिया की भर्ती हो जाती किंतु शारीरिक परिश्रम वाले काय के लिए बिहार से मजदूर ठेकेदारी पर लाए जात, जो गोरखपुरिया कहलाते। ब्याज का धधा करनेवाले शराब और जुए के अड्डे चलाने वाले गुडा किस्म के व्यक्तियो का धधा शुरू हो जाता, और सबसे अधिक फलता फूलता। असामाजिक तत्त्व ही कोलियरी म सबसे अधिक और तेजी स फलते और सारे क्षेत्र मे छा जात। फिर शुरुआत होती मजदूर सघा की। कमठ और ईमानदार व्यक्ति मजदूरो और कमचारिया के हित के लिए सगठन बनात, लडाई शुरू करते और दखत-ही-देखत कोयला मालिको अधिकारिया क दाव पेच और तोड फोड की राजनीति क कारण दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिए जाते। कइया क मडर हो जात कइया के हाथ-पैर इस तरह तोड या काट दिये जात कि जिंदगी-भर के लिए अपाहिज होकर परिवार पर आश्रित होकर पडे रहत या भीख

तौनने यवन अपनत्व से बढ़े हाथ के जरिये बेटे की ओर डंडी मार दिया करता था।

एक दिन, और खासकर ढलान पर लड़त नागा को देखने और साइकिल सवार का पीछा करने वाली घटना के बाद से उसमें बदलाव आ गया था। जैसे उसके भीतर नाग का फन हावी हो गया था। कभी-कभार पिता का सांत्वना देने के लिए उठता हुआ हाथ उस नाग के फन की तरह लगता। मा का ममत्व स गाल पर रखा हाथ लगता कि नाग का फन चिपक गया है। कोई दोस्त जब उससे हाथ मिलाने के लिए उसका हाथ अपने पंजे म लेता तो वह महसूस करता कि नाग के फन ने उसका हाथ कस लिया है और किसी भी क्षण डसकर पलट सकता है। वह भीतर-ही भीतर थरथरा जाता, पसीने म चहरा एव सारा शरीर भीग जाता।

कल रात जब वह बिस्तर पर लेटा था, नींद का दूर-दूर तक पता नहीं था, जेहन म सिर्फ नाग और उसका फन लहरा रहा था, तभी उसे मा और पिता के बीच होते संवाद सुनाई दिये। पिता सी०एम०ई० से हुई बातें मा को बता रहे थ।

"चद्र की मा, आज कालियरी म सी०एम०ई० साहब आये थे। चासनाला कालियरी म जब हम लोग थे न उस वक्त वहा वे सर्वेयर थ, तब से अच्छी पहचान है। मैंने सोचा पिछली जान-पहचान का फायदा क्यो न उठाया जाये—यह सोचकर पिट के पास उन्हे जा पकड़ा था। उन्होंने पूछा था, 'क्या रामदास कैसे हो ?'

" आपकी मेहरबानी है साब अच्छा हू।'

" 'चन्द्र प्रकाश क्या कर रहा है ' उन्होंने पूछा था। उन्हे चद्र की याद थी, उनके घर बचपन म वह आता जाता था न।

" 'जी, एम० एस सी०कर चुका है। अभी बेकार है।'

' 'नौकरी भी मिल जायगी।'

' एक रिक्वेस्ट है सर।'

हा, हा कहो।'

' 'सर, जब तक उसे कोई और नौकरी नहीं मिलती, सोचता हू आपके अंडर म क्लर्की का जाब मिल जाय।

वह खडा रहा। अपने पजे को मलते हुए, उनकी ओर एकटक देखते हुए।

"तुम रामदास के लडके हो न, बैठो।"

उसके मस्तिष्क म तो नाग का फन हावी था। सामने चेयर पर बैठा हुआ सिन्हा उसे नाग नजर आ रहा था। काला स्याह चमकीली आख लपलपाती जीभ।

"आई से सिट डाउन।" उनकी आवाज मे रुखाई आ गइ थी।

वह खडा ही रहा। शब्द उसके जेहन तक पहुच ही नही रहे थ। कानके पर्दों से टकराकर केबिन मे मडरा रहे थे।

अब वे क्रोधित हो गये। बचपन म वह उनके बच्चे के साथ खेला पढा करता था, इसीलिए कुछ अपनत्व के कारण कहा, बैठना क्या नही क्या बेवकूफ की तरह देख रहा है।"

वह फिर भी नही बैठा।

वे एकाएक उठ खडे हुए। दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा, "ओ० के०, गेट आउट।" उनके पजे की अगुलिया दरवाजे की ओर थी। उसे लगा, नाग का फन उसकी ओर बढेगा।

वह चीखा, "नही-नही।"

देन सिट डाउन।"

"नही।" वह दोबारा चीखा।

सिन्हा को लगा, शायद कुछ गडबड है। सात्वना देने के लिए वह उसके करीब पहुचे और कधे को थपथपाते हुए बोले, 'घबराओ नही बैठ जाओ।"

कधे पर रखे पजे के कारण भय से वह थरथरा गया और बचाओ बचाओ' चीखता हुआ दरवाजा खोलकर भाग खडा हुआ। कैसे घर पहुचा उसे याद नही।

शाम को रामदास जब आफिस से लौटे तो अपने कोट को कुर्सी पर फेकते हुए लगभग चीखे, 'सावित्री ए सावित्री कहा है वह बेवकूफ।'

पत्नी ने आकर कहा, 'चिल्लाओ मत। सो रहा है।"

"साले खुद तो कुछ कर नही सकते। मैंने कोशिश की तो वहा भी

अपना पागलपन दिखाकर लौट आये। इनके कारण साहब की डाट फोन पर सुननी पडी। मेरा मुझे क्या है। अपनी तो किसी तरह कट ही गयी, तुम्हारी तो सारी उम्र पडी है।'

"नाराज क्या हो रहे हो उसे जोरो से बुखार चढा है, जाकर डाक्टर बुला लाओ, बाद मे बकवक करते रहना।" वे अदर गये। वह बेहोश पडा था। चेहरे पर हाथ लगाकर देखा तेज बुखार से बदन तप रहा था। उल्टे पैर वे लौटे। डाक्टर को लाने के लिए घर के बाहर निकल गये।

एक माह की लगातार अस्वस्थता के बाद वह बिस्तर से उठा। कमजोरी अभी भी थी। उसके जेहन मे चस्पा हुए कन का अक्स कभी-कभार जब उभर आता तो वह एकनामल हो जाता। उसके भीतर तनाव की स्थिति बन जाती जिससे उसकी आखे तन जाती और उनमे वहशीपन की चमक बढ जाती। सारे शरीर मे कसाव महसूस करने लगता वह। ऐसी हालत मे जब मा देखती तो उसे लगता कि बेटे को किसी प्रकार की बीमारी नही है बल्कि किसी भूत प्रेत की बाधा है। मोहल्ले के किसी जलने वाले परिवार ने उस कुछ कर दिया है। मन ही मन वह सतोषी माता से वादा करती कि ठीक होने पर पाच साल तक हर शुक्रवार को व्रत रखेगी, खटाई छोड देगी।

कुछ समय से वह ठीक चल रहा था। एक शाम आफिस से लौटकर सामने के कमरे मे बाबू रामदास बैठे थे। पत्नी चाय ले आयी थी।

चद्रू को भी बुला लो अदर क्या कर रहा है?

वह भी आ गया था।

रामदास बाबू ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा, 'घर मे बैठे-बैठे बोर हो जाते होगे। बाहर घूम आया करो।'

जी।' उसने सक्षिप्त सा उत्तर दिया था।

'आज दोपहर जग्गा दादा आफिस आये थे। तुम उन्हे पहचानते हो?' उसने इकार मे सिर हिला दिया।

"अरे भाई, वही जग्गा दादा जो कोल फील्ड की यूनियन के अध्यक्ष है। चाहे मजदूर हो या मनजर, सभी उनसे डरते है। यहा तक कि सी० एम० ई० भी उनकी बात नही टाल सकता। उनसे मैने तुम्हारा जिक्र किया था।"

को बुला ला।'

रहीम कुछ सहमे-स आये।

'दखो रहीम, य बरकुही वाल रामदास बाबू का छोकरा है। पढा लिखा है। अब यहा आता रहेगा। जितनी भी अग्रेजी की डाक आती है, इससे जवाब बनवा लिया करना।' फिर उन्होंने उससे कहा "तुम रहीम के पास बठा करो।"

'जी। कहकर वह उठ खडा हुआ।

जग्गा दादा न कुर्सी से उठते हुए रहीम स कहा, 'मैं सी० एम० ई० से मिलन जा रहा हू। कही स फोन-वोन आये तो बढ़ी लगवा दना समझे।"

"जी। रहीम ने कहा। फिर उसकी ओर देखकर कहा, ' चलो, अपने कमरे म चलत है।"

रहीम करीब पचास के हैं। बाया हाथ कधे के पास से कटा है। पहले ये कोलियरी म अडरग्राउड मे काम करते थे। डायनामाइट म एक बार उनका बाया हाथ उड गया था। कपेनसेशन मिला, नौकरी जाती रही। घर मे छोटे छोटे बच्चे हैं। मजबूरन यूनियन मे नौकरी कर रहे है। जग्गा दादा को वे बहुत करीब से जानत है। उनकी अच्छाई भी और बुराई भी। उसे लेकर वे अपन कमरे म पहुचे। लगड चपरासी को चाय लान का आडर दकर अपनी सीट पर बठत हुए सामने की कुर्सी की आर इशारा करत हुए बाल, 'बठो बेटा। मैं तुम्हारे बाप को अच्छी तरह से जानता हू। बरकुही खदान मे मैं भी काम कर चुका हू। उन्होंने एक्सीडेंट के बाद कपेनसेशन दिलवाने मे बहुत मदद की थी।'

वह खामोश रहा। अदर ही अदर उसे लगा था कि रहीम अच्छा व्यक्ति है।

रहीम ने पीछे की खिडकी म से झाका। जग्गा दादा फियट कार लेकर बाहर निकल चुके थे। लगड चाय लान चला गया था। एकात दखकर उन्होंने कहा, "इस आदमी के चक्कर मे तुम कसे फस गय?"

'जी, पिताजी ने कहा कि दादा नौकरी दिलवा दगे।

'हू हा हा क्यो नही देखो शायद।

दो महीने गुजर गय। वह नियमित रूप से यूनियन आफिस जाता, रहीम चाचा की मदद करता। इस बीच एक दो बार जग्गा दादा को नौकरी के सबध मे याद दिला दिया और उन्होने कोशिश करने का वादा भी दोहरा दिया। इस बीच यहा की सारी गतिविधिया से वह वाकिफ हो चुका था।

शायद बीस सितम्बर का दिन था वह। जग्गा दादा कलकत्ता गय थे। डायरेक्टरा की मीटिंग थी, जिसम यूनियन के अध्यक्ष की हैसियत स उन्हे भी बुलाया गया था, क्याकि यूनियन न मजदूरा को अवार्ड का पैसा न मिलने के कारण हडताल का नोटिस दे रखा था। वह रहीम चाचा के सामने की कुर्सी पर बैठा था। आज उसकी काम करने की इच्छा नही थी। सामन कुछ कागजात रखे थे, जिनके जवाब लिखने थे।

रहीम ने पूछा "क्यो बेटे, तबीयत तो ठीक है न ?'

'हा चाचा, तबीयत तो ठीक है लेकिन काम करने की इच्छा नही हो रही है। एक बात पूछनी है।"

लगड दरवाजे पर खडा था। इधर की बात उधर करने म वह माहिर था। रहीम ने उस चाय लाने का आदेश दिया। जब वह चला गया तो पूछा, "कहो, क्या पूछना चाहते हो ?"

"चाचा, चादामेटा कोलियरी म एक बाबू की जगह खाली हुई थी, आपको पता है ?'

'हा, वह रामसेवक के लडके को मिल भी गयी है।'

'लेकिन चाचा, जग्गा दादा ने मुझस वादा किया था।"

बेटे व सबसे वादा करते हैं नता है न। नेता किसी को नाराज नही करते।"

'लेकिन जिस नौकरी नही मिलती होगी, वह तो नाराज होता ही होगा।"

'वे दूसरी नौकरी का वादा कर लेते है। और हा कोई उनसे नाराज हो जाये तो क्या बिगाड सकता है।"

एकाएक उसकी आखा के समक्ष नाग का फन लहरा गया लेकिन इस बार वह भय स घबराया नही। उसने एक एक शब्द को पीस पीसकर कहा,

मरने का जज्बा और जेब मे रामपुरी चाकू। क्षेत्र के छुटभैये आवारा लौंडे इनके पीछे हो गये। देखते-ही देखते जग्गा दादा का गुट बन गया। अखाड़ा खुल गया। दादागीरी चल निकली। कपनी के अधिकारियो को एसे ही व्यक्ति की तलाश रहती है जो ताकत म यूनियन की गतिविधियो को दबा सक। कपनी से पैसा और इज्जत मिलन लगी। जग्गा दादा क आदमियो को खदान म नौकरी मिलन लगी। एक दिन यूनियन क अध्यक्ष की लाश नाले म मिली तो सब लोग समझ गये कि इसक पीछ किसका हाथ है, लेकिन सबको अपनी जान प्यारी थी। बात दब गयी। फिर दखते ही दखते दादागीरी के जरिये वे जो यूनियन के अध्यक्ष बने तो आज तक बने हुए हैं।' रहीम चाचा रुक गये। सामन एक छोटा सा होटल था। उन्होने कहा, चलो चाय पी ली जाय।'

वे होटल म घुस गये और एक कोने म बेंच पर जा बैठे। होटल खाली था। दो चाय का आर्डर दकर रहीम चाचा न उसस कहा आदमी नेकी बदी, पाप पुण्य, अच्छा बुरा को ताक पर रखकर कुछ भी करने को आमादा हो जाये तो इतना पसा कमा सकता है कि सभालना मुश्किल हो जाय।"

चाय आ गयी थी। एक घूट पीकर उसने कहा 'लेकिन चाचा बिना किसी धधे-नौकरी के इतने सारे मकानात ?

'आदमी एक बार चल निकल तो तकदीर क साथ ही-साथ जमाना भी उसके पीछे भागने लगता है। जग्गा दादा ने अपने भाइयो को बुलवा लिया। उनके नाम पर ब्याज का धधा शुरू कर दिया। लोगो का सामान गिरवी रखा जाता और पच्चीस प्रतिशत मासिक ब्याज पर कर्ज दिया जाता। मान लो तुम्ह सौ रुपये चाहिए तो पहले महीने का ब्याज काटकर तुम्ह पचहत्तर रुपये देंगे। और सौ रुपये के प्रोनोट पर दस्तखत करवा लेंगे। फिर प्रोनोट तभी आपको वापस मिलेगा जब पूरा रुपया एक मुश्त तुम वापस करोगे, लेकिन वे हर महीने तुमसे सिर्फ २५ रुपये ब्याज ही लेंगे और रसीद भी नही देंगे। एक बार तुम फसे तो जो भी जमीन-जायदाद तुमने जमानत म लिखायी हो, उसे देकर ही छूट सकते हो समझे। इसी तरह से सारे मकानात इनकी जायदाद बनते गये। अब तुम पूछोगे कि

लोगों को कर्ज लेने की जरूरत ही क्यों ? तो इसका इंतजाम भी उन्होंने कर रखा है।

"कैसे ?" उसने पूछा।

"चलो, यही तुम्हें दिखाने ले चल रहा हूं।"

रहीम चाचा ने चाय का बिल चुकाया। रेलवे लाइन के उस पार जाने पर एक लम्बे-चौड़े जमीन का कम्पाउंड दीवाल से घेरकर बनायी एक लंबी चौड़ी दो मंजिला बिल्डिंग दिखती है। गेट पर एक गुंडा टाइप व्यक्ति खड़ा था। सिर पर माथे की ओर झुकी नेपाली टोपी, गले में काले धागे से बंधा बघनखा, चुन्नी लुंगी और हाथ में कलाई पर बंधा लाल सुर्ख रूमाल। बीड़ी दबाये मुंह में भरा हुआ पान। उन्हें देखते ही पान की पीक थूकते हुए वह बोला, "चाचा, आदाब, आज इधर कैसे ?"

"आदाब। कहो सिंगा पहलवान, कैसे हो ?"

"सब खैरियत है चाचा।"

"जब्बार है न ?"

"जी हां, काउंटर पर है।"

वे बिल्डिंग में प्रवेश कर काउंटर पर पहुंचे। जब्बार बोतल से भरी भट्ठी की दारू से गिलास भर रहा था। सामने खड़े नौकर ने पूरा गिलास उठाकर कहा, "पांच नंबर केबिन में उतार।"

जब्बार ने एक रजिस्टर में नोट किया। फिर रहीम चाचा की ओर देखा, कहा, "चाचा सलाम वालेकुम। आज इधर कैसे ?" फिर उसकी ओर देखकर बोला, "यह किस खेत का पंछी साथ चाचा।"

"यह भी जब्बार भाई।" फिर उसकी ओर इशारा करते हुए बोले, "ये बच्चू चाचा बाबू रामलाल हैं न, उनका बच्चा है। पढ़ा लिखा है। यूनियन दफ्तर में काम करता है।"

"अच्छा-अच्छा। चाचा आप तो यहां नहीं [illegible] लेकिन आज आपका एक [illegible] का निमन्त्रण खास है अभी-अभी तैयार होकर आया है।" जब्बार ने हंसते हुए कहा।

"नहीं भाई, अब मैं [illegible]

साहबजादे अपने जग्गा दादा की रियासत देखना चाहते हैं इसलिए ले आया।"

"हां-हां, क्या नहीं, आप तो बैठिये, मैं इन्तजाम करवा देता हूं।" उसने घंटी बजायी। एक नौकर आया। जब्बार ने कहा, "रामू, गेट पर झिंगा खड़ा है। बुला ला।"

झिंगा आया, तो जब्बार ने उसकी ओर इशारा कर कहा, "झिंगा, इस छोकरे को पूरा होटल दिखाकर ले आ।"

"सब कुछ उस्ताद?"

"हां, फैक्टरी भी। गैर नहीं है। चाचा के साथ यूनियन दफ्तर में काम करता है।" आधे घंटे बाद जब वे सब देख दाखकर लौटे तो रास्ते में रहीम चाचा ने पूछा "क्या बेटे, देख लिया न?"

"हां चाचा, वहां तो हर तरह का गैरकानूनी काम होता है। धड़ल्ले से हजारों का जुआ हो रहा था। तलघर में महुए की दारू निकल रही थी। और चाचा, पीने खाने, खेलनेवाले अमीर नहीं, अधिकांश मजदूर लोग ही थे।"

"हां बरखुरदार, अगर वे सारे एब मजदूरों में नहीं आयेंगे तो वे अपनी जमा-पूंजी जग्गा दादा को देंगे कैसे! एकछत्र राज्य है उनका। कोई दूसरा व्यक्ति इस तरह का धंधा शुरू नहीं कर सकता। इतने सारे गुंडे, पहलवान इसीलिए पाले गये हैं। किसी भी घर की जवान बेटी बहू को जबरन उठाकर ले आना मामूली बात है। ऐयाश नागों को औरतें सप्लाई करना, औरतों से जबरन पेशा करवाना इनका काम है। दुनिया के जितने भी बद काम हैं, वे सब यहां होते हैं।"

मोटर स्टैंड आ गया था। रहीम चाचा ने कहा "अच्छा अब तुम जाओ, हां लेकिन देखो, एक बात का खयाल रखना, इस बात का जिक्र किसी से भी न करना। जग्गा दादा बहुत बेरहम आदमी है। सांप का काटा तो बच सकता है लेकिन इसका काटा आदमी पानी तक नहीं मांगता।

"अच्छा चाचा, आदाब।" उसने कहा और पैदल ही घर की ओर चल पड़ा।

अंधेरा घिर आया था। सडक पर आमदरफ्त कम हो गयी थी। वह जब झीलनुमा ढाल पर पहुचा, उसे लगा नाने म सरसराहट हो रही है। उसके जेहन मे वही दो मीटर लबा नाग उभर आया। वह थरथरा गया। तभी दो व्यक्ति उसके सामने आ खडे हुए। एक गरजा, 'निकाल, जेब म कितना माल है।'

उसने हकलाते हुए कहा, "नगे से कपडे मागते हो।"

उसकी आवाज पहचान दूसरा बोला, 'अरे यह तो रामदास का लौडा है जो यूनियन दफ्तर म काम करता है।"

पहले ने पूछा, क्यो रे सही है ?'

'हा।

दूसरे ने पहले वाले को नाले की ओर खीचकर ले जाते हुए कहा, 'जाने दो यार, जग्गा दादा का आदमी है। क्या मौत बुला रहा है ?'

उसे लगा, जग्गा दादा का इस एरिया म एकछत्र राज्य है। उसके आदमी पर नजर डालना यानी मौत को निमत्रण देना है। लेकिन वह भी तो किसी साप से कम नही है। ये तो चोर-उच्चके ही है, लेकिन वह तो डाकू है।

घर पहुचा। सामने इजी चेयर पर बाबू रामदास बठे थे।

उन्होने पूछा 'इतनी देर क्या कर दी ?"

रहीम चाचा क साथ बाजार चला गया था।'

'जल्दी आ जाया करो। गुडागर्दी काफी बढ़ गयी है।"

'जी।' कहकर वह भीतर चला गया।

उसे मालूम हो गया था कि लेबोरेटरी का केमिस्ट शकरन नौकरी छोडकर अगले सप्ताह जा रहा है। कही केन्द्रीय सरकार म उसे नौकरी मिल गयी है। जग्गा दादा कलकत्ता से लौट आये थे। उसने तय कर लिया था कि इस बार यह नौकरी किसी भी प्रकार अपने हाथ से नही जाने देगा। जग्गा दादा जसे ही अपने कमरे म पहुचे, वह भी पीछे से प्रवेश कर गया।

"नमस्ते दादा।' उसने कहा।

चेयर पर बैठते हुए जग्गा दादा ने कहा, 'कौन पद्दू ? नमस्ते। बैठो।"

कुर्सी पर बठते हुए उसने कहा, 'मैं एक काम से आया हू दादा।"

'हा-हा, कहो।"

"शकरन केमिस्ट की नौकरी छोडकर जा रहा है। इस बार आप कोशिश कर दें तो मुझे वह नौकरी मिल जायगी।'

"जरूर।'

"आप सी०एम०ई० स कह दें, तो नौकरी मिल जायगी।

'जरूर कहूगा। तुम बेफिकर रहो।'

वह लौटकर आफिस मे आ बैठा। शुक्रवार था। इसलिए नमाज पढन चल गय थे। रहीम चाचा कुर्सी पर नही थ। खोली, जिसके जवाब लिखने थे। वह लिखने बठ गया। उसने आज की डाक उलझा रहा कि कब दो बज गये और रहीम चाचा आकर अपनी कुर्सी पर बठ गये, उसे ध्यान ही नही रहा। काम म इतना

रहीम चाचा ने ही कहा, 'क्या बरखुरदार, आज काफी खुश नजर आ रहे हो?" उसने उनकी ओर देखते हुए कहा अरे चाचा, आप कब आ गय? आदाब।"

'काम मे मशगूल देखकर मैं समझ गया कि तुम्हारी मुलाकात दादा से हो गयी है।"

"हा चाचा।'

'और तुमसे कोशिश करने का वादा भी किया होगा।"

"अरे चाचा, आप तो जादूगर मालूम होते हैं।'

"जादूगर नही बेटा, यह सब पचास साल का तजुर्बा है।' कुछ देर रुक-कर उन्होन कहा, "अभी तक चाय नहीं पी होगी, है न?'

फिर उन्होने लगड को आवाज दी और चाय लान का आदेश दिया।

उसक जाने के बाद रहीम उसके करीब पहुचे उसके कधे पर अपना एकमात्र हाथ रखत हुए बोले 'दादा हरेक के लिए कोशिश करते है।"

उसने प्रश्न भरी निगाह चाचा की ओर उठाते हुए कहा, मैं समझा नही।"

"समझ जाओगे जल्दी।"

"चाचा, पहेली न बुझाओ।"

"तुम्हारे बारे मे मैं तीन दिन पहले ही दादा से बात कर चुका था कि

लडका मेहनती है, ईमानदार है, उसे केमिस्ट की खाली होनेवाली जगह पर चिपका दिया जाये।"

'फिर ?'

मुझसे भी कोशिश करने का वादा किया था।"

'तो फिर ? लगता है, आपको विश्वास नही है दादा पर ?"

"शिवशकर को जानते हो ?"

जी वही न, जिसकी किराने की दुकान मोटर स्टैंड पर है ?'

"हा, उसका छोटा लडका इस साल बी० एस-सी० पास हुआ है। वह नौकरी उसे मिल रही है।'

'नही चाचा इस बार भी अगर मेरे साथ धोखा हुआ तो मुझसे बुरा कोई न होगा।'

'धीरे बोलो दादा कोई आम आदमी नही है, इस एरिया का बिना ताज का बादशाह है। तुम उसका कुछ नही बिगाड सकते।"

एकाएक वह नामल हो गया। अपनी रुलाई रोकने की कोशिश करता रहा। रहमान चाचा के हाथ का कधे पर बढता हुआ दबाव वह जब बरदाश्त न कर सका, तो फूट फूटकर रोने लगा।

'मैं क्या करू चाचा। मुझे कुछ समझ नही आ रहा है। मा बाप दोनो मुझे ही दोष देंगे।'

रहीम उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले शात रहो, हिम्मत नही हारते मेरे बच्चे। चाय आ गयी। हालाकि चाय पीने की उसकी बिलकुल इच्छा नही हो रही थी, किंतु रहीम ने उसे जबरदस्ती मुह धोकर चाय पीने को मजबूर किया।

अगले पूरे सप्ताह वह शात गभीर बना रहा। घर मे मा-बाप से, यूनियन आफिस मे रहीम चाचा से उसकी बातें नही के बराबर होती। जितना पूछा जाता सिर्फ उसका ही उत्तर देता। दस बजे के करीब खाना खाकर वह घर से निकलता और फिर न जाने कहा-कहा भटकता रहता। कभी-कभार यूनियन आफिस पहुच जाता। कुछ देर बैठता, खामोश फिर बिना कुछ कहे चल देता। फिर आकर उस झीलनुमा ढाल की पुलिया पर

बैठ जाता। जहां पहली बार दो नागों को लड़ते देख वह थरथरा गया था। पटा बैठा रहता। फिर उठकर नाले के किनारे किनारे न जाने कितनी दूर निकल जाता। उसकी निगाह और मन स्थिति से लगता कि उसके भीतर किसी की खोज जारी है। अंधेरा होने पर ही घर पहुंचता। पिता रामदास भी उसमें हो रहे परिवर्तन को भांप गये थे किंतु पूछने पर उन्हें उसकी ओर से कोई संतोषप्रद जवाब नहीं मिलता था। जब भी वे रात को जागते देखते कि उसके कमरे का बल्ब जल रहा है। वे कमरे के दरवाजे में से झांककर देखते तो अक्सर उसे टेबुल के पास कुर्सी या पलंग पर बैठा हुआ पाते। टोकने पर कुछ देर के लिए तो वह लाइट आफ कर बिस्तर पर लेट जाता। फिर कमरे का बल्ब जल उठता।

रामदास बाबू खाना खाकर समय पर आफिस के लिए रवाना हो गये थे। मां ने अपने सारे काम निपटा लिये लेकिन वह अपने कमरे से बाहर नहीं निकला था। मां को आश्चर्य हुआ। वह उसके कमरे में गयी। देखा पलंग पर लेटा हुआ वह छत की ओर देख रहा था। मां ने कहा 'क्या रे आज आफिस नहीं जाना है क्या?' उसने मां की ओर देखा। दाढ़ी बढ़ गयी थी। सिर के बाल छितरे हुए थे। आंखें लाल सुर्ख बड़ी-बड़ी बाहर को निकलती हुई। मां लौट गयी। वह उठा। कुरता पैजामा पहन बिना चप्पल के घर के बाहर निकल गया। मतिविद्ध प्रेत की तरह वह चला जा रहा था आसपास से बेखबर। जुलाई का महीना था। मानसून की पहली झड़ लगी हुई थी। काले स्याह बादलों ने सूरज को ढक रखा था। बादलों की गड़गड़ाहट के बीच बिजली भी कौंध जाती थी। लेकिन उसके भीतर तो ज्वालामुखी की तरह लावा उबल रहा था, या भीतर किसी अंधी गुफा की तरह स्याह सन्नाटा था कुछ नहीं कहा जा सकता। पुलिया के पास वही दो मीटर लंबा नाग ऐंठी हुई रस्सी की तरह पड़ा था। रात कोई ट्रक उसका फन कुचल गया था शायद। क्षण भर को वह उसे देखता रहा। फिर उसने पैर के पंजे से सांप को सड़क के किनारे उछाल दिया। शायद उसे सड़क पर फैली गन्दगी को साफ करने का एहसास जरूर हुआ होगा। वह यूनियन आफिस की ओर बढ़ गया। गेट पर ही जग्गा दादा मिल गये। उसकी हुलिया देख उन्हें आश्चर्य हुआ। पहले उन्होंने ही की 'क्या रे

क्या हालत बना रखी है ?"

"दादा मुझे नौकरी क्यों नहीं मिली ?" उसने सीधा सवाल उछाल दिया। उसका तेवर देख जग्गा दादा स्थिति की गंभीरता भांप गये। स्वर में मिठास घोलते हुए बोले, 'यार कोशिश तो की थी किंतु सी०एम०ई० साला नहीं माना।'

झूठ बोलते हो। शिवशंकर से पांच हजार रुपये लेकर उसके लौंडे को नौकरी किसने दिलवायी ?"

"क्या बकता है !" जग्गा दादा गरजे, सोचा कि दब जायेगा।

"बकता नहीं सच कहता हूं। तुमने मेरे साथ धोखा किया है।"

"जानता है किससे बात कर रहा है ?' जग्गा दादा ने आवाज को ऊंचा करते हुए कहा।

हां, जानता हूं। एक झूठे, मक्कार, धोखेबाज, हरामी यूनियन लीडर से जो मजदूरों के खून पसीने की कमाई पर ऐयाशी कर रहा है।" बिना किसी उत्तेजना के उसने कहा। उसकी बड़ी-बड़ी लाल सुर्ख आंखें जग्गा दादा की आंखों से टकरा रही थीं।

हरामखोर, एहसानफरामोश मादर तेरी जगह कोई दूसरा होता तो अभी यहीं जिंदा गाड़ देता !' जग्गा दादा चीखे।

लगड और रहीम चीख चिल्लाहट सुन आफिस से बाहर निकलकर सामने के दरवाजे पर आ खड़े हुए।

'साला, गाली देता है। कमीने खदान मालिकों के टुकड़ों पर पलने वाला मजदूरों का खून चूसने वाला खटमल, ठहर तो तेरी मां ।" उसने आसपास नजर दौड़ायी। पास ही कोयला भरने का बेलचा पड़ा था। लपककर उसे उठाया और फुर्ती से घुमाकर जग्गा दादा की कनपटी पर जड़ दिया। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि कोई उन पर वार करने की हिम्मत भी कर सकता है। वे लड़खड़ाये। संभल पाते ही दूसरा बेलचा उनके सिर पर पड़ा। किसी जमाने में वे अखाड़े में रियाज किया करते थे। पहलवानी शरीर था, लेकिन अब तो शराब और ऐयाशी ने उन्हें भीतर से खोखला कर दिया था। अब तो शागिर्दों और चमचों के भरोसे उनकी दादागीरी चल रही थी। चक्कर खाकर वे गिर पड़े। तीन चार बार उसने धारदार खड़ा

वलचा उनकी गदन पर ताक्त के साथ दे मारा। आधी गदन वटकर लटक गयी। खून का फव्वारा निकलकर आसपास फैलने लगा। रिमझिम बरसत पानी म खून मिलकर बहने लगा। इस बीच राह चलते मजदूर आसपास के पान के ठेल और चाय की दूकानवाल इक्टठे हो गय थे। किसी म इतनी हिम्मत नही थी कि बीच बचाव क लिए आगे आते। तभी रहीम चाचा उसके करीब पहुचे। भर्राय स्वर म बोले यह क्या कर दिया रे तूने ?''

उसन रहीम चाचा की ओर देखा जोरा से खिलखिलाया फिर बोला, 'चाचा, देखा, ये साला नाग मुझे बहुत दिनो से डस रहा था। अक्सर उस ढाल पर फन उठाय रास्ता राककर डराता था।' फिर कधे पर से रहीम चाचा, का का हाथ हटाकर वह बढ़ा। जग्गा दादा के सिर को ठोकर मार कर उस पर उसने थूका। बलवा उस पर फेककर वह पलटा। बिना किसी उत्तेजना के वह भीड की ओर बढा। भीड काई की तरह फटती गयी। भीड का चीरकर न जाने वह कहा चला गया।

जगल

सुशील कुमार फुल्ल



उन्होने आकाश के अनन्त विस्तार का अपनी मिचमिचाती आखो म समटने का प्रयत्न किया। आकाश एकाएक मटमैला हो गया था। अरे! डार स एक पक्षी बिछुड गया, फिर क्षत विक्षत होकर हवा मे लटक गया। कल्पना के बिम्ब एकाएक भुरभुरा हो गये। पक्षी का हवा म लटक जाना, अथाह सागर म ओर छोर न मिल पाने की छटपटाहट, बीच भवर म भवर बन जाने की घबराहट। उन्हे लगा व स्वय हवा म लटक गये है तथा उनके चारो ओर बीहड जगल उग आया है। वह अचानक आ खडा हुआ था, पूरे तीस वर्षों के बाद।

उन्हे विश्वास ही नही हो रहा था। होता भी कैसे? कल्पना के बिम्बो के सहारे कब तक किसी के अस्तित्व एव व्यक्तित्व को स्वीकार किया जा सकता है! कोई बीहड जगल म खो जाय और लौटकर न आय। तीस वर्ष पहले अपने भाई का बबई के एक मेडिकल कालज म प्रवेश दिलवाकर घर लौटे थ तो वे बहुत प्रफुल्लित थ। इतना सम्पन्न परिवार और फिर घर का कोई डाक्टर न हो। गाव भर म चर्चा थी कि बिहारी डाक्टरी करने इतनी दूर गया है, पन्द्रह सौ मील स भी दूर, बडे नगर बम्बई म। लेकिन उनकी यह खुशी बहुत दिन नही टिकी। अचानक बर्मा म उन्हे एक पत्र मिला था। लिखा था 'भैया, आपको खुशी होगी, मैने आई० एन० ए० ज्वाइन कर ली है तथा कालज छोड दिया है। सुभाष बोस के व्यक्तित्व म सम्मोहन है। दिवानो की मदमस्त टोली। मै हर प्रकार स खुश हू। जयहिन्द।

यह उसका पहला तथा अतिम पत्र था। भाई की प्रतिक्रिया अधिकर

इस महानुभूति की ही थी परन्तु जब उन्होंने बिहारी के निणय की सूचना अपने मा बाप को दी तो वे चुप्पी साध गये थे। मा ने इतना भर कहा और वह नहीं लौटेगा। एक तो पहले ही द्वितीय विश्वयुद्ध ने लील लिया और फिर यह सतान का मोह आत्म मोह अपने ही शरीर के टुकडे का होम होते देखना कितना कष्टप्रद है।

फिर वे चुप हो गये थे और यह चुप्पी अत तक नहीं टूटती। हा उनकी आखो में कुछ खो जाने का अहसास बराबर उजागर रहता। उसके लौट आने की मौनी प्रतीक्षा थी। शायद आ जाय परन्तु नहीं स्वतन्त्रता के बाद भी वह नहीं लौटा था। बहुत पता किया परन्तु कोई समाचार नहीं मिला था। मा ने घोषणा कर दी थी 'तुम तो व्यर्थ में डूबे रहते हो। वह नहीं आएगा। क्या पता कब का वीरगति को प्राप्त हो गया हो। मेरे से एक भ्रम ही पैदा हुआ था।

'मैं कैसे भूल जाऊ। अपने ही शरीर के एक टुकडे को जिसकी धमनियो में मैं प्रवाहित होता हू। तुम तुमने मा नहीं बाप नहीं भोगा। तुमने उसे जन्म ही नहीं दिया होता मैं उसका बाप न होता। बच्चो को जन्म देकर मौत के मुह में झोक देना आह।' पिताजी बिखर पडे थे। आज सारे बांध टूट गये थे।

"सारी उम्र गीता का पाठ करते रहे हो। फिर भी डरपोक के डरपोक रहे। शरीर तो मिट्टी है। मिट्टी के प्रति मोह अनावश्यक है।'

'मिट्टी में जब कल्पना के बिम्ब उगने लगते हैं तो जीवन साकार होने लगता है। यदि कोई विशिष्ट आकार लेने से पहले ही मिट्टी भुरभुराकर बिखर जाए बिम्ब खण्डित हो जायें तो ऐसी स्थिति में सारा जीवन-दर्शन गड्डमड्ड हो जायगा। आधार ही विशृंखलित हो जाएगा।"

"तुम डरपोक हो डरपोक।"

'हा मैं डरपोक हू। तुम सही कहती हो। मैं अपने शरीर के टुकडे का होम होते नहीं देख सकता।"

बहुत दिनों तक मा भी कुछ न बोली थीं। पिता भी अपने आप में ही सिमट गये थे तथा अपने-आप से ही बतियाते रहते, 'वह क्या के जगलो में फसा रहा होगा। बीहड जगल और वह नन्हीं जान। जगल में खो जाना,

दुनिया से अलग थलग पड जाना। ओह ! किसी बन्द कमरे में सास का घुट जाना। शत्रु के हाथ पड गया होगा तो कितनी यातनाओ को सहन करना पड रहा होगा। आह मेरे ही शरीर का एक टुकडा कुलबुलाता रहा होगा, लेकिन उसकी आवाज जगला म खो गयी होगी। तुम्हारी मा कहती है, मैं डरपोक हू। बिहारी, सच बताना। जब मिटने की घडी आई होगी तो क्या एकाएक तुम्हारे मन म जिजीविषा नही कौंधी होगी ? जीने की ललक ही न हो तो मिटटी मे स्पदन कैसा ?"

फिर पिता न अपने आप को स्टोर म बन्द कर लिया था। वे बिहारी की यातना को स्वय भोगना चाहते थे। उनका रग काला पडता गया, जिजीविषा मटमैली होती गयी माना साप की फुकार से स्याह हो गया हो।

एक बिम्ब धूमिल हो गया था।

वह आ गया था।

दोना भाई बहुत देर तक एक दूसरे से लिपटे रह। आसुओं की धारा बहती रही तथा मौन सवाद चलता रहा।

आस्थाओ का जगल उग आया तथा घर भर मे मधुमास की गध फल गयी।

भतीजे ने चाचा के चरण छुए तथा उनकी सुख-सुविधा के प्रबध म जुट गये। बिहारी की आखें इधर उधर दौड रही थी। किसी को खोज लेने की ललक म थे। जब बडे भाई ने विस्तार से मा-बाप की मत्यु क बारे मे उस बताया तो वह अन्दर ही-अन्दर धसता चला गया—लहू लुहान होता चला गया। कुछ खो जाने का अहसास किसी अवसर को चूक जाने की दर्दानुभूति अव्यक्त को अन्दर ही अन्दर पी जाने की कुल बुलाहट।

रात देर गय तक दोना भाई बतियाते रहे बीते समय को पख लगाते रह। भतीजे अपने चाचा की बातो को परीलोक की कहानियो की भाति सुनते रह। स्वतत्रता-सग्राम के उस अध्याय मे डूबत उतराते रहे जिस बिहारी ने कमठता से जिया। बिहारी कह रहा था, 'अपनी मिटटी स प्यार किसे नही होता ? कौन घर नही लौटना चाहता ? मैं भी कसमसाता रहा। जब इण्डियन नेशनल आर्मी बिखर गई तो हम जवान भी जहा-तहा

बिखर गय। मैं बर्मा के जगलो म था, अभी शहर पहुचने की योजना बना ही रहा था कि नामुराद बुखार न मुझे दबोच लिया। कोई साथी नही था, कोई सम्बन्धी नही था। मैं अपन छोटे से टेण्ट म काप रहा था, मत्यु से जूझ रहा था। युद्ध म मैं कई खतरो स बच निकला था परन्तु अब विवश था असहाय था। मेरी कल्पना म अपना गाव अपना घर सम्बन्धी बार-बार कौंधत थे लगता था यह दूरी अब बढती ही जायगी कभी कम न हागी।

'फिर वह देवी आ प्रकट हुई। पता नही कितन महीन वह मेरी सवा करती रही। मैं स्वस्थ हो गया था। मैंने जब उस भारत लौटने की बात कही तो वह चुप हो गयी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की परन्तु उसकी आखो म पीडा क बिम्ब उभर आय थ वह मुझस अलग नही होना चाहती थी मुझसे बध गयी थी। मैं उसकी आखो का तिरस्कार नही कर सका और उसका होकर रह गया।

'तुमने उससे विधिवत शादी कर ली या याही रख लिया?' बडे भाई ने आश्चय स पूछा।

'आपके विधि विधान जगल म नही चलत। वैस भी शादी तो परस्पर आस्था विश्वास की बात है।"

तुम उस छोड नही सकते?"

भया। वह मेरी अर्धांगिनी है। मरा घर परिवार है, बाल-बच्च है।'

बिहारी के मुह का स्वाद फीका होने लगा।

तुम्हारी यही शादी करवा देंगे।

नही भया नही। शादी तो रिश्त की पवित्रता का नाम है। बीबी गाय भैंस तो नही, जो एक को त्यागकर दूसरी खरीद लू।

वो तो ठीक है, लकिन ,

बिहारी लाल चौंक गया। उस लगा उसके चारो ओर सागर की लहर उठन लगी है जो कभी भी उस लील सकती है। अथाह जगलो म भटकना हुआ आवश्यकता पडने पर सापो का अपना भोजन बनाने वाला अनुशासन प्रिय सैनिक चीख उठा। वह अपने नर्ट्रेस बेट का कैम छोड द उसकी बटिया उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी और पत्नी रात दर गय तक कर-

करवटें बदलती रहती होगी शायद मेरी आहट सुनने के लिए लालायित सी। घर के निकट ही झील है। कहीं बेटा वहां न जाता हो। कोई दुर्घटना हो गयी तो वह कहीं का न रहेगा। पाल-पोसकर बड़ा किया पौधा यदि एका एक सूख जाय तो कितना दुख होता है। बड़े भैया भी अजीब हैं जो उसे यहीं बस जाने के लिए कहते हैं।

शायद मैंने यहां आकर गलती की है। वृक्ष की टूटी शाखा भला वृक्ष से फिर कब जुड़ सकती है। डार से बिछुड़ा पक्षी एक बार भटक गया तो भटक गया। वह भी तो डार से बिछड़ा हुआ पक्षी है जिसने अपना अलग नीड़ बना लिया है। पता नहीं वे कैसे क्षण थे, जब वह भारत आने का निर्णय कर बैठा। इतना उतावलापन कि वह घर में बताकर भी नहीं आया। पैदल ही चोरी छिपे बर्मा-नेपाल की सीमा को पार कर भारतीय क्षेत्र में आ गया था। जोश में उसे इतना भी ध्यान नहीं रहा था कि इस प्रकार सीमा पार करने से किसी भी क्षण गोली उसके आर पार हो सकती थी परन्तु वह सकुशल आ पहुंचा था।

आ तो गया शायद खून की पुकार थी परन्तु अब धीरे धीरे नीड़ से कट जाने की उत्कंठा उभरने लगी। साथ ही एक गलती का अहसास। बिना कागज-पत्र पूरे किये सीमा पार करने का अपराध। बनारसी दास को वस्तुस्थिति का पता चला, तो उन्होंने कहा 'बिहारी, तुमने अच्छा नहीं किया। किसी ने रिपोर्ट कर दी तो मुश्किल हो जायगी।'

'चाचाजी आप खुद ही थाने में सूचना दे दें।' भाई के लड़के ने कहा। बिहारी हैरान परेशान बस, इतना भर बोला, 'मैं तो खुद लौट जाना चाहता हूं। आपको डर लगता है, तो मैं कहीं और चला जाता हूं।'

'नहीं बिहारी नहीं। यह बात नहीं है। मैं युद्ध अधिकारियों से मिल लूंगा मैं तो कुछ और सोच रहा था। आई० एन० ए० के सैनिकों को पेंशन लगती है उनके लिए प्रयत्न किया जा सकता है तुम्हें पासपोर्ट बनवाकर आना चाहिए था।'

"मैं पेंशन के लिए नहीं आया हूं।'

बिहारी अजीब संकट में फंस गया था। बड़े भाई की बात तो ठीक है। वह पासपोर्ट बनवाकर आता तो अधिक दिन टिक सकता था बिना किसी

चिनगारी उगाई है या तो आते ही न आए हो तो यही रहो यदि उनके बिना नही रह सकते तो बीवी-बच्चो को भी यही ले आओ तुम्हे पेंशन भी मिलने लगेगी। काम का भी कोई जुगाड हो जायगा।'

बिहारी को लगा उसके इद गिद भयानक जगल उभरने लगा है जिसम शीघ्र ही उसकी पहचान खो जायेगी।

रात का सन्नाटा छाया हुआ था। तभी बडा लडका उठा। अपने पिता को जगाया। फिर अपने दोनो भाइयो को भी। तब धीमे स वह भाक कर देख आया कि बिहारी चाचा सोय हुए थे। फिर उसने धीमे स अपने पिता स कहा था "आपका प्रस्ताव तो अच्छा है कि बिहारी चाचा अपने परिवार को लेकर यहा आ जायें लेकिन क्या आपने सोचा है कि उनका खच कैसे चलेगा ? व किस घर म रहगे ? उनका हिस्सा तो दूसरे बचकर खा गये। और फिर बिहारी चाचा को क्या नौकरी मिलेगी ? एफ० एस-सी० पास को कौन पूछता है ?"

'और फिर आप भी तो रिटायर हो चुके हो।' दूसरे भाइ ने धीमे से कहा।

'और आपको तो पेंशन भी नही मिलती।"

'ऐसी स्थिति मे तो अपने ही खच पूरे नही होते। उनका भरा-पूरा परिवार आ गया तो घर म ही बेघर होने की परिस्थिति पैदा हो जाएगी।'

बनारसीदास चुप।

'अत भलाई इसी मे है कि वे वही रह। हा, कभी मिलने की इच्छा हो तो साल बाद आकर मिल जाया करें।"

'वसे भी रिश्ते दूर मे ही अच्छे लगते हैं। बीच म घुल मिलकर रहने से सम्बन्ध बिखर जाते हैं। यही अपने दूसरे भाइयो को देख लो। कोई मिल कर भी राजी नही।'

उनके चेहरे पर विषाद की रेखाए उभर आई परन्तु आखो म नपुसक-सी सख्ती झलक आई। उन्हे पहली बार ऐसा महसूस हुआ मानो सारे शरीर मे काटे उग आये हो। भाई इतने वर्षों बाद आया है और ये मेरे ही शरीर के अश मुझे आखें दिखाते हैं। जरा भी सकोच नही जो मन म आया उगल दिया। य क्या जानें मेले मे आत्मज के खो जाने पर कितना दुख होता है

तथा अचानक आत्मज के घर लौट आने पर कितनी खुशी ! कोई जगल म खो जाये अपना ही अश विछुड जाये उन्हे लगा वह स्वय दुनिया की भीड म खो गये है उन्हे कोई परिचित दिखाई नही देता।

किसी के खो जाने की अनुभूति अपने शरीर का कुछ भाग हो जाने की तिलमिलाहट। ये दुधमुहे क्या जाने ? ये तो धन की चकाचौंध म ललचाए-से, हक्बकाये से पैसा बटोरने म लगे है। शायद सम्बन्धो की सरलता तथा खून की घनिष्ठता को इन्होने महसूस करना शुरू नही किया है। मा बिहारी को देख पाने की लालसा लिये चल बसी, बाप तो कोठरी म बन्द होकर बैठ गया था। बिहारी की सभावित यातनाओ की कल्पना ने ही आतकित कर दिया था और ये चूजे उसके हिस्से की बात करने लगे है। और मेरी पेशन का न होना इन्हे सताने लगा है। आर्थिक सम्बन्धो का आधार बेचारा क्षत विक्षत पक्षी डार से पुन मिलन के लिए लालायित पक्षी। सम्बन्धो के बिखराव का जगल उनके इर्द गिर्द लिपटने लगा।

लडके अपने-अपने कमरो म चल गये थे। वह उठकर बिहारी के कमरे मे गये। बिना बत्ती जलाए उन्होने अपना हाथ बिहारी की छाती पर रख दिया वहुत देर तक वे उसके दिल की धडकन को महसूस करते रहे। सोये बच्चो के दिल की धडकन को महसूस करना उन्होने अपने पिता से सीखा था, जो हर रात सारे बच्चो के दिल की धडकन को महसूस किये बिना नही सोया करते थे। शायद उनके एक पुत्र की मृत्यु नीद म हो गयी थी। और फिर एक वहम आदत बन गया था।

धडकन महसूस कर लेने के बाद उन्होंने आश्वस्त होने के लिए पुकारा, 'बिहारी !'

'हा भैया।"

"तो तू भी जाग रहा है ? सोया नही क्या ?"

नही। आप लोग भी तो सभी जाग रहे थे न।"

उन्हे लगा वे क्षत विक्षत पक्षी की भाति हवा म उल्टे लटक रहे हैं। तथा बिहारी फिर जगल म खो गया है तथा वे भी 'बिहारी', 'बिहारी' पुकारते हुए जगल की गहनता म डूब जाते हैं।

दरार

अवधेश श्रीवास्तव



स्टेशन से दीदी का घर बहुत दूर नहीं है लेकिन मैंने फिर भी रिक्शा कर लिया है क्योंकि मुझे दीदी के घरवालों का डर है। कहीं वे यह न सोचें कि मैं पैदल आया हू और मेरे एक रुपये के लोभ से दीदी की बेइज्जती हो जाय।

रिक्शा धीमी गति से चौडी पक्की सडक पर खिसकने लगा। मेरी आखो के सामने दीदी के घर का रास्ता घूमने लगा। इसी सडक की सीध म आगे एक चौराहा पडेगा। उस चौराहे से दायें घूमकर करीब आधे फलाग के बाद विक्टोरिया पाक पडेगा। पाक के सामने वाली कोठी जग मगा रही होगी। वही कोठी दीदी का घर है जहा दीदी को कद हुए पाच वष व्यतीत हो चुके है।

सच कहू तो दीदी के परिवार वालो से मुझे नफरत हो गयी है। उनकी रईसी ठाट बाट से मेरे मन म क्रोध उबलता है। इस क्रोध के बीच दीदी भी आ जाती हैं। हालाकि दीदी का कोई कसूर नहीं होता है।

माती अक्सर दीदी की ससुराल की तारीफ पडोसियों से करने बठ जाती है। जसे ही उन्होने तारीफ हाकना शुरू किया वसे ही मैं उनसे बहस करने लग जाता हू। बहस मे जीत न पाने के कारण माती बाद मे घटो लम्बा लेक्चर दे डालती तुझ जैसा निकृष्ट कोई नहीं होगा दुनिया भर म कोई बहन के फलने फूलने पर जलता है! हर मा-बाप चाहते है कि उनकी बेटिया बडे घराने म जायें तू मेरी बेटी के पीछे क्या पडा रहता है तेरे बाबूजी ने तो इतना व्यवहार कर लिया है, तेरे दरवाजे पर तो

पाई थूकने भी नही आयेगा अभी तो कुछ है नही तब इतना घमड तुम्हारी औलादें होगी तब देखगी " माली लेक्चर के अत मे अपनी कोख का भी कोसती जिसने मुझ जैसा लडका पैदा किया।

दीदी की शादी के बाद मैं उनसे सिर्फ दो बार मिला हू। पहली बार रिंकू के जन्म पर और दूसरी बार पी० एस० सी० की परीक्षा के समय। वहा जाने पर हर बार बडा अजनबीपन सा महसूस होने लगता है। इसलिए मैंने इस बार बहुत आनाकानी की थी। माली को बहुत समझाने की कोशिश की थी, "क्या होगा मा जाकर ? वे लोग बडे आदमी है। रिश्तेदारी बराबर वालो से मेल खाती है।"

उनका काड आया है। काड की मान मर्यादा रखनी होगी।" माली अपने हठ पर डटी थी, 'हमने अपनी बेटी दी है हमे तो झुककर ही चलना होगा।"

"वहा जाने मे मेरा दम सा घुटता है। आखिर अपनी भी तो कुछ इज्जत है।" मुझे गुस्सा आ गया था, 'अगर तुम्हे जाना पडे तो कुछ पता चले।"

"बडे आये इज्जत वाले ! वहा तुम्हे लोग मारने लग जाते होगे ? तुम जवान होकर घर म बैठे रहो और हम ब्याह बाराता म जाये ?"

माली ने मेरी एक न चलने दी थी। सामने वाली गुप्ताइन चाची से रुपये उधार लेकर दो चालीस चालीस रुपये वाली धोतिया खरीद लायी थी। मुझे पच्चीस रुपये टिका दिये थे। लेकिन 'न जाने के सौ बहाने' के हिसाब म मैं अकड गया था, पच्चीस रुपये म इलाहाबाद तक का सफर मुमकिन न होगा।"

हालाकि मेरे पास पचास रुपये अलग से थे, जो मुझे एक नयी ट्यूशन की पेशगी म मिले थे। मेरी अकड पर बाबूजी की आखें मुझे घूरने लगी थी। उन्होने खाट पर लेटे लेटे अपनी मारकीन की बनियान की जेब म दस का एक तुडा मुडा नोट फेंका था। मुझे मजबूरी म तैयारी करनी पडी। रास्ते के पूरे सफर म मैं दीदी की सास के तमतमाये गिलौरी भरे चेहरे से आतकित रहा हू।

मैं पिछली बार बहुत बच-बचकर रहा था, फिर भी मेरी दीदी की

सास से एक इंटरव्यूनुमा मुलाकात हो ही गयी थी। मेज पर रखी चाय को उन्होंने हाथ के इशारे से पीने को कहा था। मैंने चाय को पीना शुरू किया था और उन्होंने लेक्चर देना, 'जाने कितने अच्छे अच्छे रिश्ता को मना करना पड़ा सजय बेटे की तकदीर ही खराब थी जो इतनी बड बदनाम शादी हुई मास्टर साहब ने हमारी बेइज्जती कर दी सने दन की बात तो छोड़िय, हमारे महमानो को सब्जी भी ढग की न खिला सके तुम्हारी बहन की सुदरता ने हमारे बेटे को फास लिया तुम लोग कायस्थ हो भी या नही तुम्हारा रहन-सहन तो कायस्थो जसा नही है।"

अपमान भरे न जाने कितने वाक्य चाय के साथ मेरे गले स उतरकर मेरे जिस्म म फैल गय थे। दीदी की शादी बड़े घराने म होना एक आकस्मिक सयोग था। बाबूजी उन दिनो इलाहाबाद के जी० आई० सी० मे लेक्चरर थे। जीजाजी का ट्यूशन पढान उनके घर जाते थे। कभी-कभी वे किसी-न किसी 'प्राब्लम' को लेकर घर भी पूछने आ जाते थे। न जाने कब उन्होंने दीदी को देख लिया और अपने मा-बाप स फरमाइश कर दी कि मैं मास्टर साहब की लडकी से शादी करना चाहता हू। शादी के लिए जीजाजी के अलावा कोई भी तयार नही था। इनके मा बाप को यह रिश्ता 'राजा भोज और गगू तेली' जैसा लग रहा था। बात बडे घराने की थी, इसलिए माती और बाबूजी भी डर रहे थे। दीदी की अवस्था भी सदिग्ध थी, क्योकि यह सब 'वन साइड अफेयर' जसा था। लेकिन लडकी होने की वजह से वे कुछ कहने की स्थिति मे न थी।

उसी बीच बाबूजी रिटायर हो गये थे। हम लोग दादाजी द्वारा बनवाये गये मकान म कानपुर आ गये थे। जीजाजी के पिताजी का शादी के लिए हा' वाला खत कानपुर ही पहुचा था।

बाबूजी ने प्राविडेंट फड और कुछ उधार का पसा मिलाकर अच्छी तैयारी की थी। लेकिन इज्जत धूल मे ही मिल गयी थी। शराब के नशे म धुत्त जीजाजी के पिताजी ने सब्जी की कटोरियो को फेंकना शुरू कर दिया था। बाबूजी उनके पैर पकडे घटो माफी मागते रहे थे। लेकिन उन्होंने तहसीलदार होने का पूरा रौब बाबूजी पर उतार दिया था।

बाबूजी फिर भी खुश थे। उनके सिर से दीदी का बोझ उतर गया

था। मैं मूक बना सामाजिक रीति रिवाजो के माध्यम से दीदी की सुन्दरता के अपहरण को देखता रहा था।

ससुराल वालो का सारा गुस्सा दीदी पर उतरा। शादी के बाद वे कभी माती, बाबूजी और छोटे भाई बहन का मुह नही देख पायी। बेजान खतो से ही अपने प्यार को जिन्दा रखने की कोशिश की

'साहब आगे बारात जा रही है। कहिये तो गलियो से निकाल ले चलू।" अचानक रिक्शे वाले ने चौकाया।

सोचने की शृखला टूट गयी। अतीत की स्मृतियो ने वर्तमान म लाकर पटक दिया। मुझे मन-ही मन शादियो के लिए मौसम बनाने वाले पर अल्लाहद हुई।

"चाहे जिधर से ले चलो यार।"

मैं यह कह तो गया, लेकिन मन ही मन डरा भी कि रिक्शे वाला बारात का बहाना करके कही और न ले जाय।

गलियो म खड़े पुराने मकान देखकर मुझे अपना मकान याद आ गया जो अब गिरने की स्थिति मे आ गया है। जिस स्थिति म दादाजी ने मकान सौपा था बाबूजी उस स्थिति को बरकरार न रख सके। पुताई के अभाव मे दीवाले धुधली हो गयी, छतो मे दरारे पड गयी। किसी जगह की इट उखड गयी या प्लास्टर हट गया, तो उसे दोबारा बनवाने की नौबत नही आयी। आर्थिक स्थिति ढुलमुल होने की वजह से सिर्फ इतना ही नही हुआ बल्कि सोफे और कुर्सियो की बुनाइया उधड गयी, जिन्हे कबाड म शामिल कर दिया गया। पलग से पलगपोश चिथडे बनकर हट गय। परिवार निम्न मध्यम वर्गीय सीढी से उतरकर निम्न वर्ग म आ गया। रोटी, कपडा और भाई-बहन की पढाई लिखाई आदि का खर्च बमुश्किल मरी और बाबूजी की ट्यूशन से निकलता मैंने दूर से ही देखा दीदी का हवेलीनुमा घर जगमगा रहा है। मेरे मन म एक तसल्ली-सी आयी कि रिक्शे वाल ने मुझे सही जगह पहुचा दिया। मुझे अब साफ दिखाई देने लगे हैं अंग्रेजी मे बल्वो से जगमगाते शब्द—वीना वेड्स सुदेश।

रिक्शे वाले को मैं वहा तक घसीट ले गया जहा तक भीड व्यवधान न बनी। उतरकर मैंने रिक्शे [illegible] ो को पैसे दिये। एयर बग का कधे पर

टाग मैं भीड को पाटता हुआ अन्दर चला गया। बिजली की सजावट से ऐसा लग रहा है जैसे यह शादी के लिए नहीं, बल्कि बिजली की नुमाइश दिखाने के लिए लगायी गयी हो। एक तरफ आर्केस्ट्रा पर फिल्मी धुन चालू है तो दूसरी तरफ लाउडस्पीकर पर फिल्मी गीत सुनाई दे रहा है। लाइन में पड़े सोफा पर बच्चे शोर मचा रहे हैं। काफी मशीन से काफी का मग भर भरकर लोग लुत्फ उठा रहे हैं। वातावरण में चहल-पहल, खुशी और उल्लास भरा हुआ है।

लेकिन मैं इस सबसे कटता हुआ किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करने लगा जो मुझसे परिचित हो। एकाएक मेरी नजर दीदी के ससुर पर पड़ी, जो तख्त पर बैठे किसीसे बात करने में व्यस्त थे। जैसे ही वे खाली हुए मैंने तुरन्त उनके पैर छुए। मुझे देखते ही उनके चेहरे पर आश्चर्य सा पुत गया। लेकिन उन्होंने आश्चर्य को मुस्कराहट में जबरदस्ती बदल दिया, "अमित! तुम आ गये और मास्टर साहब "

बाबूजी की तबीयत ठीक नहीं रहती है।" मैंने बहुत ही सहज होकर उन्हें टोका।

अरे नत्थू, इधर तो आ!" उन्होंने एक व्यक्ति को पुकारा।

'हां, बाबूजी!'" वह व्यक्ति यन्त्रचालित सा आकर खड़ा हो गया।

इन्हें संजय बाबू के कमरे में पहुंचवा दो।'

मैं उस व्यक्ति के पीछे पीछे चलने लगा। खुले आंगन में आकर उस व्यक्ति ने स्वर तेज किया "मालकिन! मालकिन!!'

उसके स्वर को सुनकर थोड़ी देर बाद ही भीड़ से छटकर दीदी की सास बाहर आ गयी।

मन न चाहकर भी तीव्र गति से उनके पैर छुए। मुझे देखते ही उनके चेहरे पर भी आश्चर्य सा पुत गया। गिलौरी भरे मुंह को उन्होंने चलाया, 'क्या अकेले आये हो?'

'जी।' मैंने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

दीदी की सास कुछ और पूछतीं, तभी वह व्यक्ति बोला, 'मालकिन, बाबूजी ने कहा है कि इनको संजय बाबू के कमरे में पहुंचा दो।

"अच्छा अच्छा, तुम बाहर जाओ।" दीदी की सास ने उस व्यक्ति को

उपेक्षा की दृष्टि से देखा।

दीदी की सास कुछ देर गुमसुम सी खड़ी रही। फिर उन्होंने आंगन के एक कोने में बैठी औरत को बुलाया। औरत के पास आते ही उन्होंने रोबीला स्वर फेंका, "ये बहू के भाईजी हैं, इन्हें बहू के कमरे तक पहुंचा आओ।"

'बहू के भाईजी!' उस औरत ने भी मुझे आश्चर्य से देखा।

मन की अजीब स्थिति में मैं उस औरत के पीछे-पीछे हो लिया। दो जीने का सफर तय करने के बाद उस औरत ने एक कमरे का दरवाजा खटखटाया, 'बहूजी, दरवाजा खोलो तुम्हारे भाईजी आये हैं।'

कुछ क्षणों बाद दरवाजा खुला तो देखा, दीदी खड़ी है। मैंने उनके भी पैर छुए।

"अमित तुम? आओ! आओ!!" उन्होंने एक सोफे पर बैठने के लिए इशारा किया। मुझे चमकीले कालीन पर चलने में संकोच हुआ, लेकिन दीदी के कहने पर बैठ गया। दीदी भी मेरे पास आकर बैठ गयी। मैं देखता हूं, दीदी की आंखों में ढेर सारा प्यार उमड़ आया है।

'अमित खत का जवाब क्यों नहीं देते हो?' दीदी बनारसी साड़ी में बहुत सुंदर दिख रही है।

'इधर कुछ ट्यूशन ज्यादा रही इसलिए बिजी रहा हूं।" मैंने एक बहाना बनाने की कोशिश की।

'माती कैसी है?' उन्होंने एक और प्रश्न किया।

"माती, बाबूजी राजेश और रजनी सभी ठीक हैं।' मैंने दीवाल पर लगी माडर्न आर्ट की पेंटिंग को समझने की कोशिश की।

'रजनी ने लिखा था कि मां को दीखता कम है।"

"माती की आंखों में मोतियाबिंद उतर आया है। डाक्टर का कहना है कि आपरेशन करना होगा। पूरे दो सौ रुपये का खर्च है।' मैंने पेंटिंग की ओर से नजरें हटा लीं।

तुम्हारी सर्विस कहीं नहीं लगी?" उनके चेहरे पर निराशा की पर्तें उभर आयीं।

"कई रिटन टेस्ट और इण्टरव्यू दे चुका हूं, शायद कहीं नाम आ

जाये ।" मैंने उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की ।

'एम० एस-सी० किये पूरे तीन साल हो गये हैं। लेकिन अभी तक ..." उन्होंने नजरें मेरे चेहरे पर गडा दी ।

'पी एच० डी० मे रुकावट न आती तो अभी तक डाक्टरेट मिल गयी होती । उससे लेक्चररशिप मिलने के चांस बेटर हो जाते ।" मैंने यह बेतुकी बात कहकर मन-ही मन अपनी गरीबी पर अपने-आपको कोस लिया । वातावरण में खामोशी तरने लगी । मैंने मेज पर रखी पत्रिकाओं मे से एक को उलटना पलटना शुरू कर दिया । दीवाल पर लगी घडी आठ बार टन-टन कर चुप हो गयी ।

रजनी के लिए कही बात चल रही है ?" पाच मिनट के बाद उन्होंने वातावरण की खामोशी तोडी ।

'हा, बात तो कई जगह चल रही है । अक्सर पसो पर आकर रुक जाती है ।" मैंने फीकी हसी बिखेरी, "आजकल क्लर्कों ने भी अपने रेट हाई कर दिये हैं ।"

"सच कह रहे हो अमित !" उन्होंने मेरी बात को समर्थन देते हुए कहा, 'वीना बीबी की शादी जिस लडके से हो रही है, वह भी रिजर्व बैंक मे सिर्फ क्लर्क है । और बात जाकर चालीस हजार और स्कूटर पर तय हुई ।"

'चालीस हजार और स्कूटर ! मेरे मन में कभी-कभी आशंका उठती है कि कभी रजनी अनब्याही न रह जाये ।'

'तुम्हारे जीजाजी ने तो बहुत झगडा मचाया । उनका कहना था कि इतने में तो आई० ए० एस० और पी० सी० एस० लडके भी तय किय जा सकते हैं ..."

लेकिन जीजाजी की बात क्यो नही मानी गयी ?' मैंने उन्हें बीच में ही टोका ।

अच्छा कायस्थ घराना है । काफी जमीन जायदाद है । पुराने रईस हैं । इन्ही सब बातो को देखकर पिताजी ने किसी की चलने न दी । एक बात तो माननी पडेगी वीना बीबी का भाग्य बहुत अच्छा है । इधर उनकी शादी तय हुई उधर पिताजी को डिप्टी कलेक्टर के लिए प्रमोशन आडर

मिल गया। पिताजी का शादी बिलकुल नहीं खली

"बहूजी, नीचे चलिये। मालकिन बुला रही है। जयमाल का वक्त हो रहा है। बिटिया को तैयार कर दो।" अचानक उसी औरत ने प्रवेश किया जो मुझे ऊपर तक छोड़ने आयी थी।

"अच्छा, अच्छा। तुम चलो, मै आती हू।"

कुछ देर की खामोशी के बाद उन्होंने कहा "अमित तुम भी ड्रेस बदल कर लो, अब बारात आने वाली ही होगी।"

"ड्रेस चेंज कर लू?" मैंने बात को मजाक म लेने की कोशिश की, "ऐसा ही ठीक हू। लड़की की शादी में क्या शो दिखाऊ?"

"नहीं ड्रेस चेंज कर लो।" उनकी आवाज सख्त हो गयी।

अचानक मेरे सिर पर बिजली सी टूट पड़ी। शब्दों का अम्बार मेरे गले में अटक गया। मैंने दीदी की ओर नजर घुमायी तो वहा मुझे सशय की पत दर-पत साफ सुलगती दिखाई दी।

"मेरे पास और कोई ड्रेस नहीं है।" मैंने स्पष्ट हो जाना ही बेहतर समझा।

उनके चेहरे का रग उड गया। मुझे लगा मेरी जबरदस्ती ने उन्हे परेशान कर दिया। वे महाशून्य म खोई हुई किसी बहुत बडी समस्या का समाधान खोजने लगी।

"मैं अभी आयी।"

व न जाने कब नीचे गयी। कमरे की खामोशी ने मुझे दबोच लिया। मैंने दीवाल पर लगी घडी के द्वारा कल सुबह जाने वाले आसाम मेल के बीच के घटो की गणना की। मुझे मन ही मन मानी पर गुस्सा आया जिन्होंने इस स्थिति मे फसाने को मजबूर किया। लेकिन सच तो यह भी है कि मेरे मन म भी दीदी के प्रति कहीं थोड़ा सा प्यार अटका हुआ था। पर इस प्यार म क्या हासिल होना था। एक खालीपन के अलावा क्या मिला। और अभी क्या पता सुबह तक की लम्बी रात मे क्या क्या जुल्म और सहने पड़ें?

"अमित, नाश्ता कर लो।" अचानक दीदी न कमरे मे प्रवेश किया। उन्होंने मेज पर पड़ी पत्रिकाओ को नीचे वाले खाने मे रखकर ट्रे को

"हा, उन्होने मुझे यहा भेजा है।"

"खन्ना साहब, मेरे ब्रदर इन ला से मिलिये।' जीजाजी ने सामने खड़े सज्जन से परिचय कराया, "एम० एस सी० थ्रू आउट फर्स्ट करने के बाद पी एच० डी० कर रहे है।"

'मुझे अमित कुमार कहते हैं।" मैंन उन सज्जन से हाथ मिलाया।

जीजाजी ने मुझे एकदम से बहुत सारे झूठ के नीचे दबा दिया जहा मे उभरकर मैं यह न सका कि एम० एस सी० फाइनल मे प्रैक्टिकल्स मे केवल पासिंग मार्क्स होने की वजह से कुछ मार्क्स से फर्स्ट क्लास नही पा सका। इस कारण थ्रू आउट फर्स्ट क्लास कहने का हक मुझे नही है। गरीबी के कारण पी-एच० डी० के सपने ने तो अब बदल देना भी छोड दिया है

"दीदी ने आपकी हैल्प के लिए भेजा है। बताइये मैं क्या करू?' मैंन जीजाजी से पूछा।

"यहा तो अरेंजमेंट हो गया। तुम अपने हालचाल सुनाओ।"

अब हम दोनो पक्तिबद्ध मेजो के बीच आ गये। एक मेज के पास रुक-कर उन्होने आवाज लगायी, "यहा एक क्वार्टर प्लेट और रखना।'

एक व्यक्ति ने आकर उस कमी को पूरा कर दिया।

"घर पर सब लोग कैसे हैं?" उन्होने पुलाव की खुली प्लेट को ढकते हुए पूछा।

"सब ठीक है।" मैंने सक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

अचानक उन्होने एक बच्चे को पुकारा, 'रिंकू, इधर आओ। अपने अमित मामाजी से मिलो।"

रिंकू मेरे सामने आकर खडा हो गया। आखो मे सहमा-सहमापन भरकर उसने अपने हाथ जोड दिये।

'किस क्लास मे पढते हो?" मैंन उसे गोद मे ले लिया।

"अभी तो के० जी० मे ही हू।' उसने अपने जुडे हाथो मे से सीधे हाथ को अपनी टाई की गाठ पर पहुचा दिया।

एक व्यक्ति ने बारात आने की खबर दी। सभी लोग फुर्ती मे आ गये। जीजाजी ने हरएक मेज पर सर्व करने के लिए आदमी खडा कर दिया। पान सिगरेट वाले को आगे की तरफ पहुचा दिया। इतना सब करा

लाल कुर्ता

पुन्नी सिंह



वह यह लाल रंग का कुर्ता पहनकर मेरे यहां एक बार आया था—सिर्फ पहले दिन। फिर भी न जाने क्या, मैं उसको लाल कुर्ते से बाहर शायद कभी नहीं देख पाया। वह अक्सर दो कुर्ते पहिनता था—ऊपर लाल कुर्ता और उसके नीचे भूरे रंग का कुर्ता। जब मेरे यहां आता था तब लाल रंग का कुर्ता उतारकर स्टेशन पर ही सोनू की चाय की दुकान पर रख आता था।

उन दिनों स्टेशन पर सिर्फ सोनू से ही उसकी पटती थी। सोनू उसके गांव के नजदीक के किसी दूसरे गांव का रहने वाला था। वह सोनू की दुकान पर कितने ही कप चाय पीने के बाद कभी यह अनुभव नहीं करता था कि मुफ्त की चाय पी है और सोनू उससे अपनी दुकान या घर पर कोई काम करवाने में नहीं हिचकता था। उसका लाल नया कुर्ता जब मिलकर आता था तब सोनू की दुकान पर ही रखा रहता था और जब वह पहना जाता तब पुराना कुर्ता भी बहुत दिनों तक वहीं रखा रहता था। तब वह कुर्ता उसकी जमा पूंजी सजोने के काम आता था। जो भी बचता, वह कुर्ते की जेब में ही रखता था। कभी वह दिन में जब सोनू से कुर्ता मांगता तो सोनू समझ लेता था कि आज आय से व्यय ज्यादा हो रहा है और दैनिक बजट की पूर्ति के लिए कुर्ते की जेब से कुछ निकाला जा रहा है। और जब शाम को कुर्ता मांगा जाता तब सोनू समझ लेता कि आज कुछ दैनिक बचत हुई। यह सब सोनू अनुमान से ही जानता था। उसने कभी उस विषय में उससे कुछ पूछा भी नहीं था और न उसकी अनुपस्थिति में अपने-आप टटो

लाल कुर्ते की जेब ही टटोली थी।

वह मुझसे बडा था—ठीक मेरे बडे भाई की उम्र और अनुहारि का। शुरू शुरू मे वह मेरे पढने की मेज की बगल मे बैठकर बीडी पीता रहता था—बोलता बहुत कम था। मैं जब कुर्सी या चारपाई पर बैठने को कहता तो सिर्फ हाथ हिलाकर मना कर देता था। मुझे बडी हैरानी होती थी। सिर्फ मैं ही नही और भी जो लोग उसको मेरे कमरे मे बैठा देखते वे इस बात पर आश्चर्य करते थे कि स्टेशन पर जो आदमी इतनी भाग दौड करता है और इतनी तेज-तर्रार बातें करता है वह यहा ऐसे चुपचाप क्यो बैठा रहता है। उसके घण्टा-आध घण्टा बैठने पर ही बीडी के धुए और उसके मौन से एक अजीब दमघोटू वातावरण बन जाता था। जली हुई माचिस की तीली और अधजली बीडी के टुकडो से सारा कमरा रुआसा हो उठता था।

वह उस समय स्टेशन पर बडा हेकड कुली माना जाता था। उसकी हेकडी की चर्चाए स्टेशन से निकलकर शहर के गली-कूचो तक मे प्रवेश कर गयी थी। जिन लोगो का उससे स्टेशन पर रोज वास्ता पडता था वे हमेशा उसको आतक की नजरो से देखते थे। उसकी कुछ हरकतें तो ऐसी थी जो किसी सवारी गाडी के समय प्राय रोज देखी जा सकती थी। किसी सवारी के भारी से भारी सामान को गाडी मे चढाने या गाडी से उतारकर रिक्शा तक पहुचाने का एक भी पैसा भाडा न लेना और कभी सवारी के द्वारा दिये गये भाडे मे पाच-दस पैसे की कमी होने पर उस सवारी की गर्दन तक पकड लेना मामूली बातें थी।

उसकी अपनी कोई समस्या नही थी, और यदि थी भी तो उसका कोई समाधान नही था—वह ऐसा मानता था। फिर भी वह रात दिन मानो समस्याओ के जगल मे रहता था। स्टेशन पर सोनू की दुकान के अलावा अन्य किसी स्थान पर उसको स्थिर नही पाया जा सकता है। कभी बुकिंग आफिस की खिडकी के सामने लाइन मे लगी किसी सवारी को लाइन तोडने के लिए झाडते हुए या उपदेश देते हुए मिलता तो कभी स्टेशन पर बिना टिकिट उतरे हुए लोगो के मामले मे उलझा मिलता।

वह स्टेशन से बाहर जाकर जिस सवारी का सामान गाडी पर चढाने को तय करके लाता, उसको प्लेटफार्म पर बिठाकर दूसरे झमेलो मे फस

जाता था—किसी का भारी सामान गाडी से नही उतर पा रहा है तो उस का उतरवाना, किसी का सामान नही चढ पा रहा है तो उसको चढवाना। कोई बीमार या अपाहिज गाडी से चढ या उतर रहा है तो उसकी मदद करना। इन सब बातो मे वह अपनी तय की गई सवारी को अक्सर याद भूल जाता। तब तक या तो वह सवारी अपना सामान खुद ही गाडी मे चढा लेती और उसको डिब्बे मे से खरी खोटी सुनाती या फिर वह खुद उसका सामान आखिर मे चढाता और तब तक गाडी चलने लगती। ऐसी हालत मे या तो वह सवारी चलती गाडी का फायदा उठाकर पैसे नही दे जाती या फिर पैसे देती तो गाडी की चाल से भी तेज गालियो की बौछार के साथ, लेकिन वह दोनो स्थितियो मे नीचे प्लेटफार्म पर खडा-खडा मुस्कराता रहता।

अगर कही वह व्यक्ति पैसे भी नही देता और गाडी की खिडकी से गालियां भी फेक जाता तो फिर उसके लिए यह बात बरदाश्त से बाहर होती। वह किसी भी डिब्बे मे दौडकर चढ जाता और चेन खीचकर गाडी को रोक लेता। फिर एक हगामा होता और गाडी तब तक खडी रहती। किसी सवारी गाडी पर अगर ऐसा हगामा न हो तो देखने वालो को ताज्जुब होता था और स्टेशन के अधिकारियो को राहत मिलती थी।

मैं जिस सवारी गाडी से उतरा था उस पर दरअसल कोई ऐसा हगामा नही हुआ। शायद लोग उसी की चर्चा कर रहे थे और थोडी दूर पर ओवर ब्रिज की रेलिंग पकडे खडे एक कुली को उडती उडती नजरो से देख रहे थे। मैं डिब्बे से उतरकर कुली की तलाश मे था ही। मैंने उसी कुली को सकेत से बुलाया और सामने की बेंच पर रखा अपना सामान उतारने को कहा। उसने पहली नजर मे तो सामान को देखा और दूसरी नजर मे मुझ को देखा और फिर बोला, "पहले गाडी से सामान उतारकर नीचे रखो, फिर बात करो।"

मैंने अब उसको एक कडुवी नजर से देखा और अपना सामान उतार-कर नीचे रख लिया। तब तक उसने अपने सिर की पगडी को खोलकर दुबारा बाध लिया और मुझसे बिना कुछ कहे मेरा बक्सा उठा लिया। मैंने उसको टोका, "ऐ, अपना नम्बर तो बताओ।"

अब की बार उसने मुझको बेहद कड़वी नजर से देखा और मेरा बिस्तरबन्द भी कंधे पर लटकाकर ओवर ब्रिज की ओर बढ़ चला।

इस नगर में मेरा उस समय तक दो बार आना हुआ था। कुछ यहां आकर आंखों से देखा था और ज्यादातर सुना हुआ था। देख और सुनकर किसी शहर की जो धारणा बनती है उसमें सबसे रद्दी धारणा यहां की बन चुकी थी। यहां के हर आदमी को शक की नजर से देखने का मानो मैं आदी हो चुका था। खासतौर से हर मेहनत करने वाला मुझे चोर नजर आने लगा था और हर गरीब फटेहाल उठाईगीरा दिखने लगा था। कुली का क्या भरोसा भीड़ में सामान लेकर कहीं सटक जाये। फिर तलाशते फिरो। लोग खुद को ही चूतिया बतायेंगे। पुलिस स्टेशन पर रिपोर्ट लिखवाओ तो वहां भी इस बात के लिए दरोगा की घुड़की सहो कि कुली का नम्बर क्या नहीं नोट किया।

यही सब सोचकर मैंने उसका लाल कुर्ता पकड़कर भीड़ में पीछे की ओर खींचा और चिल्लाकर कहा, "ऐ कुली तुमने सुना नहीं क्या? पहले अपना नाम-नम्बर बताओ, फिर सामान लेकर आगे बढ़ना!"

वह मुड़ा। मेरे सामने खड़ा होकर मुझको कुछ समय तक घूरता रहा और ठीक मेरे पैरों के पास उसने सामान ठसक दिया—ठसका नहीं, पटक दिया! वह उफनता हुआ सा प्लेटफार्म पर आगे की ओर चला गया। और कुछ कदम आगे जाकर फिर लौट आया। मैंने सोचा कि वह किसी दूसरी सवारी की तलाश में है। मैं भी किसी दूसरे कुली को देखने लगा। तभी वह मेरे सामने आकर बोला, "क्या, तुम्हें हम का चोर लगते हैं?'

मैं इस तरह के प्रश्न का उत्तर देने को पहले से ही तैयार नहीं था इसलिए थोड़ा हड़बड़ाकर बोला, "नहीं, इसमें चोर लगने की तो कोई बात नहीं है।"

"तो फिर और का बात है बोलो! तुम कुली के नम्बर के का मानी समझत हो? हम जो चोरी करनी होगी तो हम दूसरा नम्बर नहीं बता देंगे?

"नहीं, यो बात नहीं है।'

'तो फिर और का बात है समझाओ।"

मैं उसको क्या समझाता ? उस वक्त मैं तो चुप रहने मे ही अपनी कुशल समझ रहा था। एक छोटे म कस्बे से उस वष बी० ए० किया था। यहा एम० ए० की पढाई करने आया था। कस्बे की हैसियत से थोडा ज्यादा ही अपने-आप को बातूनी समझता था। परन्तु अपने सामन खडे एक मजबूत काठी के कुली की ओर देख देखकर मेरी सारी बातें गोल हो गई थी। वह मुझको बराबर पैनी नजरा से घूरे जा रहा था और मैं उसकी नजरा स कन्नी काट रहा था।

इसी बीच उसने बीडी जला ली थी और उसके दो चार लम्बे-लम्बे कश खीचकर दूर प्लेटफाम पर बीडी फेंक दी थी। उसके बाद उसक बालन मे कुछ-कुछ समझाने जैसा भाव था।

वह बोला, "तुम्हारे जैसे छोकरे इस प्लेटफारम पर राज हजार आते हैं, समझे ? बडे होने से पहले ही अक्ल को खीच-तानकर बडा मत करो। आदमी को पहिचाना करो।"

और फिर उसने मेरा सामान उठाकर अपने सिर पर रख लिया। तब तक वह बिल्कुल सामान्य हो चुका था—दिखन म भी और बोलन म भी। बोला, "कहा चलनो है ?"

"उस पार, रिक्शा पर "

"फिर वहा से कहा जानो है ?"

"बजीरपुरा !"

"हा, तो ऐसे कहो न कि बजीरपुरा जानो है। वहा कहा जानो है ?"

"काछियो की धमशाला के पास, गुप्ता के मकान मे !" मेरे मन म एक बात खटक रही थी। उसने पैस के बारे मे न पहले बात की थी और न अब कर रहा था। मैं सोच रहा था कि स्टेशन के उस पार रिक्श तक सामान पहुचाकर वह जरूर पैसा के लिए हुज्जत करेगा। इसलिए मैंने बात साफ कर लेनी चाही। मैंने पूछा, "पैसे कितने लोगे ?"

मानो उसने मेरी बात सुनी ही न हो।

वह ओवर ब्रिज को पार करके उस ओर नही गया बल्कि प्लेटफाम स उतरकर दूसरी ओर रेलवे लाइन के बीच से चलने लगा। मैं भी उसक पीछे-पीछे चलने लगा, लेकिन बहुत घबडाया हुआ और आम निश्चिनता की

स्थिति मे । मैं सोचने के अलावा और कुछ कर पाने की स्थिति म नही था। मेरा सोच भी सिफ दो वाता का लेकर था, सामान और प्रान ! उसक पीछे घिसटत घिसटते और सोचते सोचते मैं इस नतीजे पर पहुचा था कि अब सामान तो वचने वाला है नही प्रान वच जाय तो वडी वात होगी !

लकिन मेरा सामान और प्रान दोना बच गये ! सिफ बच ही नही गय बल्कि सुरक्षित स्थान रर पहुच भी गय ।

मरे कमरे पर सामान पहुचाकर वह तुरत नही लौटा था कुछ दर वठा था । उसने लगातार दो वीडी पी थी और एक लोटा पानी पिया था ।

बिना कुछ कहे जब वह चलने लगा तो मैंने दो रुपय का नोट देना चाहा । उसन नोट नही लिया और बोला, "इ ह अपन पास रखो, हम जब चाहियेगे तब ले लेंगे । अभी तो तुम स्टेशन पर बहुत बार आओगे जाओगे ?

वह चला गया और मैं अब इतनी देर बाद इस सिक्के का दूसरा पहलू उलटकर देख रहा था ।

अगले दिन जब आया तो उसके साथ सोनू भी था। दोना बिना किसी भूमिका के मेरी मेज के पास बठकर बीडी धौंकने लगे । मैं फिर मुश्किल मे पड गया। समझ नही पा रहा था कि आखिर उसका क्या इरादा है ?

वह बहुत देर बाद बोला, य सोनू पहलवान है। अपने गाव के पास के रहने वाले हैं। स्टेशन पर आओग तो चाय पिलायेंगे। खूब मीठी चाय ।

फिर वह थोडा हसा । सोनू ज्यादा हसा और बोला, 'और इ ह तो तुम पहिचान ही गय हो—ये तेजू पहलवान है । हम दोनो के अखाडे म अच्छे पेंच जमते है इसलिए स्टेशन पर भी अच्छी पटती है ।'

मैं फिर भी नही समझ पा रहा था कि आखिर ये दोनो मुझे ठगने का मसूबा बना चुके है या और कोइ मशा है। अगर इस कुली को ठगना था तो कल ही वडी आसानी से मुझे ठग सकता था, तब यहा तक सामान पहुचाने की क्या जरूरत थी ? और अगर यह मान लिया जाय कि इसका ठगने का कोई इरादा नही है तब फिर कल पस क्यो नहीं ले गया और आज

इस दूसरे हट्टे-कट्टे आदमी को लेकर क्या आ धमका है? बीड़ी के धुए से मेरा दम घुट रहा था लेकिन मैं कुछ भी नही समझ पा रहा था।

अन्त मे सोनू बोला, 'यह तजू बहुत अच्छा आदमी है। और हर अच्छे आदमी की कदर करता है। तुम्हारी कल शाम उसने बडी बडाई की ताही मे मैं तुम्हे देखने चला आया।'

मेरी उलझन की गुत्थी सुलझी नही थी और उसीको सुलझाने के उद्देश्य से मैंने पूछ लिया 'ऐसा मेरे अन्दर क्या है जो आप लोगो को अच्छा लगा?'

मेरे सवाल को दरकिनार करके तेजू बोला 'तुम गाव से आये हो और यहा की ठगी के तुमने बहुत सारे किस्से सुने है वाही म बहुत घबडाय घबडाय हो। तुम्हे हम ठगेंगे नही फिक्र मत करो।

उस दिन वे दोनो मुस्कराते हुए चले गये।

फिर वह मेरे यहा रोज आने लगा, बिना किसी नागा के, सोनू कभी कभी ही आता था—महीने म एक-दो बार। वह आता, बैठता, बीडी पीता, कभी-कभी चाय भी पी लेता। बहुत भूखा होता तो पराठे बनाने का कहता, लेकिन मुझे नही बनाने देता था—खुद ही बनाता था।

कभी जब मैं अपने कमरे स बाहर रहता तब वह दरवाजे पर बठकर चला जाता। जली हुई बीडी के ठठो एव माचिस की तीलियो स मैं अनुमान लगा लेता था कि वह कुल कितनी देर बैठा होगा। वह एक घण्टे मे औसत रूप से एक दजन बीडी पीता था यानी हर पाच मिनट मे एक। उन दिनो उसको सिनेमा से काफी चिढ थी और जब मैं बाहर जाता तब वह यही समझता कि सिनेमा देखने गया हू। दूसरे दिन मिलने पर हल्की डाट भी पिला देता था। बाद के दिनो मे तो मैं उसकी डाट का ठीक वैसे ही आदी हो गया था जैसे गाव मे अपने बडे भैया की डाट का आदी था।

वह जब फुर्सत म बैठता तो गाव के बारे मे बहुत कुछ सुनना चाहता और बहुत कुछ सुनाना चाहता था। पर अपने बारे म वह कम-से-कम सुनाता था। उसने जो कुछ अपने बारे मे मुझको सुनाया था वह छितरा और बिखरा हुआ था।

करीब आठ साल की उम्र मे उसके कक्का और अम्मा दोनो राम को

प्यारे हो गये थे। कलकत्ता में मरने से पहले गाव में अंधे चौधरी नत्रपाल से दो सौ रुपये और दस मन नाज उधार लेकर खा लिया था। उसीस उसका अंधे चौधरी के यहां भैंस चराने का काम रोटियों पर मिला था। सारे दिन भैंसों के पीछे डंडा लेकर घूमना, थोडी सी गफलत होने पर चौधरी की मार खाना शाम को आधे पेट खाकर अंधे की पैरचप्पी करना और फिर उस अंधे में एक बुरी आदत भी थी

अंधे चौधरी के यहा रहकर उसकी जिन्दगी घृणा और तिरस्कार म धजबजाने लगी थी। वह चौधरी को तो नहीं मार सकता था लेकिन खुद मर जाना चाहता था। पर उसके मरने की नौबत नहीं आई।

चौधरी का बड़ा लड़का इसी शहर म पुलिस का दीवान था। वह जब जब छुट्टी पर अपने घर जाता था तब उसकी हालत पर तरस खाये बिना नहीं रहता था। पुलिस विभाग की सारी निष्ठुरता उसकी हालत देखकर पिघलने लगती थी।

पुलिस का दीवान उसको अपने घर से छुड़ाकर यहा अपने साथ ले आया, और वह एक झटके मे अंधे चौधरी नेत्रपाल के चरवाहे से पुलिस दीवान का घरेलू नौकर बन गया।

दीवान अन्दर से जितना नम था उसकी बाहरी औरत उतनी ही पत्थर दिल थी। चौबीसों घण्टे किर किर करना उसका स्वभाव बन गया था। दीवान खुद उससे थर थर कांपता था। उसके यहा बाहर से आनेवाला हर आदमी ठीक वैसे ही घबडाता था जैसे कोई कटखने कुत्ते को देखकर घबडाता है। तेजू पर वह पहले दिन से ही हाथ साफ करने लगी थी। झाडू से लेकर डंडे तक और अपनी हवाई चप्पल से लेकर दीवान के भारी बूट तक से वह उसकी पूजा कर चुकी थी।

तेजू की हालत पर एक बार फिर दीवान को तरस आ गया और उसको अपनी पत्नी के अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए ए० एस० एम० घोष के यहा खाना बनाने की नौकरी पर लगा दिया—तीस रुपये महीना और खाना-कपड़ा अलग से।

घोष बाबू अच्छे आदमी थे। उसको शुरू शुरू मे खाना बनाना नहीं आता था। कभी दाल में नमक ज्यादा डालता था तो कभी सब्जी को जला

कर रख देता था। मास मछली का बनाना तो उसको आता ही न था। लेकिन घोष बाबू ने बुरा नही माना। उन्होंने खुद एक महीने म उसको ऐसा सिखाया कि वह सब कुछ ठीक-ठाक बनाने लगा। उसन जिन्दगी म पहली बार यह समझा कि बिना मार गाली के भी जिया जा सकता है। सोचता था कि ऐसे मालिक के साथ वह सारी उम्र बडी आसानी म बिता सकता है। लेकिन सारी उम्र घोष बाबू के साथ रहना तो दूर रहा, वह बमुश्किल कुछ महीने ही उनके साथ बिता पाया।

घोष बाबू को एक बहुत बडा रोग लगा था। दूसरे की औरत पर हाथ साफ करना उनकी आदत नही बीमारी बन गई थी। उनके बीबी-बच्चे कलकत्ते म रहते थे। वे यहा अकेले रहकर रेलवे की नौकरी करते थ, इसलिए परस्त्री गमन का रोग और भी असाध्य हो गया था। इस रोग म तीमारदारी तेजू को करनी पडती थी। कोई भी स्त्री अगर कमरे म होती तो उसको बाहर बठकर चौकीदारी करनी पडती और जब घोष बाबू किसी अधेरी रात मे किसी के घर म सेंध लगाने को निकलते तो उसको अंगरक्षक बनकर साथ रहना पडता।

ऐसी ही एक अधेरी रात मे घोष बाबू बाजीपुर के एक मकान म किसी महिला का उद्धार करते हुए रंग हाथो पकडे गये। खूब हल्ला मचा। तेजू मकान के बाहर गली म खडा था और घोष बाबू अन्दर पिट रहे थे। वह चाहता तो भागकर अपने आपको बचा सकता था। पर उसने ऐसा नही किया और घोष बाबू को बचाने के चक्कर म वह भी खूब पिटा। करीब चौबीस घण्टे उन्हीके साथ हरी पवत थाने की हवालात म भी उसको रहना पडा।

बात यहा तक आ पहुची कि घोष बाबू को नौकरी छोडकर कलकत्ता भागना पडा। और वह फिर सडक पर आ खडा हुआ।

इस स्टेशन के बडे बाबू म उसकी थोडी-बहुत पहचान हो गई थी। उनका करीब दो सप्ताह तक उसने सिर्फ रोटी खाकर काम भी किया था। इसलिए उन्होंने मेहरबानी करके उसको कुली के काम म लगा दिया। तभी उसने भूरे कुर्ते के ऊपर लाल कुर्ता पहना था। वह जिन्दगी के अन्तिम छोर तक उसके शरीर से चिपका रहा।

यह कोई बीस साल पहले की बात है। तब से वह निरंतर इस स्टेशन के प्लेटफ़ाम नम्बर तीन की एक ही बेंच पर अपना जीवन गुजार रहा है।

दिन भर कुलीगीरी या अन्य लोगो की सहायता से सम्बंधित काम करना, समय मिलने पर भागते भागते सोनू की दुकान पर चाय पी लेना, शाम को किसी घटिया होटल पर भर-पेट रोटी खा लेना और फिर उसी बेंच पर आकर सो जाना। उसकी जिंदगी का यही क्रम मेरे मिलने के बाद तक चलता रहा है।

उसने टुकडो टुकड़ो में अपने जीवन की ऐसी बहुत सारी कहानियां सुनायी थी। मैंने उनको क्रम में सजोया है। मैं जानता हू, इसमे बहुत कुछ छूट गया है पर यकीन मानिये मेरी तरफ से जुड़ा कुछ भी नही है। मैंने बहुत सारे लोगो को आपबीती सुनाते देखा है। वे अपनी जिन्दगी की घटनाओं के उतार चढाव के साथ खुश होते हैं, दुख व्यक्त करते है, मुस्कराते है आसू बहाते है, त्योरिया चढाते हैं आखें झपकाते हैं। लेकिन उसने ऐसा कभी कुछ नही किया। वह बहुत ही सामान्य भाव से यह सब बताया करता और कभी-कभी तो चुसकिया ले लेकर सुनाया करता, मानो इन सबका वह भोक्ता नही सिर्फ द्रष्टा मात्र रहा हो।

वह पहले मुझको बहुत गम्भीर लगा था। बाद में जब वह धीरे धीरे खुलने लगा तब उसका सही रूप मेरे सामने आया। वह बहुत ही संवेदनशील लेकिन पैनी दृष्टि वाला व्यक्ति था। वह हर चीज की गहराई में जाकर उसको समझने का प्रयास करता था। परिस्थितियां ने उसके साथ अजीब-अजीब खेल खेले थे लेकिन हर खेल मे परिस्थितियां हारी थी और वह जीता था।

मुझे सोनू ने बताया था कि पहले स्टेशन के सभी लोग या तो उससे घृणा करते थे या उसको पागल समझकर उसका यकीन नही करते थे। बाद में सभी उससे आतंकित रहने लगे और फिर मेरे ही सामने एक वक्त ऐसा भी आया कुछ इने गिने रेलवे और पुलिस के अधिकारियो का छोडकर अन्य लोग उसके एक एक शब्द के गुलाम हो गये थे। वह स्टेशन के कुलियों और रेलवे के छोटे कर्मचारियो का अघोषित नेता था।

इस स्टेशन के अतिरिक्त दूसरे स्टेशनों पर भी जब कोई कुलियों का मसला उठ खड़ा होता था तब उसकी अगुवाई तेजू ही करता था। कुलियों एवं रेलवे के कर्मचारियों के कई मसले इस दौरान हल हुए थे—उनके भाड़े की दरों में संशोधन हुआ था, बड़े रेलवे के अधिकारियों के घर पर बेगार देना बन्द हो गया था, रेलवे पुलिस की छेड़छाड़ बन्द हुई थी।

कुलियों को रेलवे कर्मचारी घोषित किये जाने सम्बन्धी उनकी एक बड़ी माँग थी जिसके कारण कई बार कुलियों की हड़ताल हो चुकी थी और तेजू सीधे रूप में कई बार अधिकारियों से टकरा चुका था।

वह जितना ज्यादा कुलियों और छोटे रेल कर्मचारियों का विश्वास अर्जित करता जाता था उतना ही अधिक बड़े रेल कर्मचारी और पुलिस अधिकारियों की नजरों में खटकता जा रहा था। उसका व्यक्तित्व दिन-प्रतिदिन किसी रंगमंचीय प्रकाशवृत्त की भाँति फैलता जा रहा था। मैं हर्षित भी था और सशंकित भी था।

तभी एक दिन सोनू मेरे यहाँ अकेला आया। वह मेरे कमरे में बैठते-बैठते बोला, "साब! आप तेजू को समझाओ।"

मेरे मुँह से उत्सुकतापूर्वक निकल गया "क्या क्या कोई नई बात है?"

"नई बात तो नहीं है, बातें तो सब पुरानी हैं लेकिन मामला इतना आगे बढ़ गया है कि उसने अपने को नहीं सँभारा तो कुछ भी हो सकता है।"

"कुछ क्या हो सकता है?"

"जान तक जा सकती है।"

मैं उसकी तरफ देखता ही रह गया। मैं पहले से ही आशंकित था लेकिन ऐसी बात सोनू के मुँह से सुनने की अपेक्षा नहीं करता था। कोई अजनबी भी देखने मात्र से बता सकता था कि सोनू के कसरती शरीर में एक भैंसे से कम बल नहीं था—तेजू के शरीर में उससे भी कहीं ज्यादा बल था। फिर सोनू को तेजू के प्राण जाने की आशंका कैसी? हो न हो मामला कहीं से गम्भीर है, यही सोचकर मैंने उससे अपनी बात स्पष्ट करने को कहा "सोनू! तुम ठीक-ठीक क्यों नहीं बताते, आखिर बात क्या है?

'बात लम्बी है और कई छोर से उलझी है। भाव, जैसे भी हो आप तेजू को स्टेशन पर जाने से रोको। अब किसी सभा-अभा में भी जाने से मना कर दो। वो आपकी बात मानेगा मेरी बात नहीं मानता है। अभी मेरे को जल्दी है, कल स्टेशन पर आओगे तब पूरी बात बता दूंगा," और वह जल्दी से चला गया।

उस दिन मैंने इन्तजार किया पर तेजू नहीं आया।

रात भर मुझको नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन सोनू से पता लगा। माजरा कुछ और ही था। स्टेशन के पीछे की ओर रेलवे यार्ड से लगी हुई एक लोहे की फैक्टरी है। उस फैक्टरी का पीछे का दरवाजा ठीक यार्ड में खुलता है। उसी में रेलवे के माल का कुछ गोलमाल होता था—खासतौर से कोयला और लोहे का। तेजू प्लेटफार्म की बेंच पर पड़ा-पड़ा यह सब देखता था। स्टेशन के अन्य कुली और पोटरों की भी नजर में यह मामला आ चुका था। बात तो सिर्फ इत्ती-सी थी लेकिन लोगों को करेंट यही गहरे तक रही थी और इसी से सोनू को तेजू का अनर्थ नजर आ रहा था।

मैंने स्टेशन पर ही तेजू से इस घटना के बारे में कुछ और पूछना चाहा लेकिन भीड़ भड़क्के और भाग दौड़ में वह कुछ भी नहीं बता पाया। मैं उसको शाम के समय अपने यहीं आने को कहकर स्टेशन से वापस आ गया।

उस दिन शाम को वह तो नहीं आया परन्तु एक अन्य अपरिचित आदमी मेरे कमरे में आया। पहिनाव ओढ़ाव और बात चीत के लहजे से कोई पैसे वाली आसामी स्पष्ट दिखती थी। वह कमरे में घुसते घुसते ही रोबीले स्वर में बोला 'तुम्हारा नाम पुनीत है?'

मैंने हामी भरी— हां मेरा नाम पुनीत है।"

तुम्हारे यहां तेजू रहता है?"

रहता तो नहीं है कभी कभी आता जरूर है।

'झूठ बोलते हो! कभी कभी क्यों वह तुम्हारे यहां रोज तो आता है।

हां, रोज आता है तो ?

"देखो, तुम उसको समझाओ! वह रोज स्टेशन पर उत्पात करता है। आजकल रेलवे के माल की चोरी बहुत हो रही है। अब सही झूठ तो राम जाने कुछ लोग तो कहते हैं कि रेल की चोरी म उसी का हाथ है। वह इसीलिए रात को स्टेशन पर रहता है।'

अब मुझे लगा कि उस आदमी की बातें सामान्य नही हैं। उन बातो म कुछ जाल फैलाने जैसा मुझे दिखा। उसकी बात से दिल म कही गहरा झटका भी लगा, क्योकि तेज पर लगाये गये और सब आरोप बरदाश्त किये जा सकते हैं लेकिन चोरी का आरोप तो किसी हालत म बरदाश्त नही हो सकता।

मैंने आखो म थोडी सुर्खी लाकर उससे कहा, 'देखिए वैसे लगता तो यह है कि उस पर चोरी का इल्जाम लगाकर आप शायद अपनी चोरी को छिपाना चाहते ह। फिर भी आपको जो कुछ कहना हो वह उसीसे कहिए। मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नही हू।'

मुझे यह कल्पना भी नही थी कि वह आदमी इतनी जल्दी नम पड जायगा। वह मुझसे समझौते क लहजे मे फौरन बोला "देखो, तुम नाराज मत हो। मैंने तुमसे कुछ नही कहा है। मैं तो सिफ यह कहने आया था कि तुम उसको समझा लो। वह स्टेशन पर रात को सोना बन्द कर। सब अधिकारी उससे नाराज है। यह रेल की चोरी का मामला है पुलिस उसको कभी भी अन्दर कर सकती है।"

'पुलिस उसको अगर अन्दर करेगी तो वह अन्दर चला भी जायगा। उसके यहा कौन बाल बच्चे हैं जो रोयेंगे।'

'आप समझ नही रहे है। सरकारी माल की चोरी का मामला बहुत ही खराब होता है। बस मैं जानता हू वह चोर नही है। फिर क्या लफडे म पडना है? शहर मे कही भी किराये का मकान लेकर ठाठ म रहे। प्लेटफाम पर क्या रखा है जो वहा पडा रहता है?'

उसको तुम से आप पर आते देखकर मैंने पैंतरा बदला और कहा, 'दरिद्र साहब! आप हम मत पढ़ाइए, हम अच्छी तरह जानते हैं कि रेलवे की चोरी कौन करता है? वह बेचारा तेजू तो चोर को देखता है यही उसका जुर्म है।'

'नही साहब। यह बात सही नही है। चोर को देखना जुर्म नही है, चोर को तो और भी बहुत सारे लोग देखते है—तमाम कुली देखते हैं और वक्त-बेवक्त चोर से लाभ भी लेते है। परन्तु यह तजू नाम का कुली न मालूम किस धातु का बना है? आप जब सब कुछ जानते ही हैं तो आपसे अब छिपाना क्या? मैं स्टेशन के पास वाली लोहे की फैक्टरी का मालिक हू। उसको आप राजी कर लो वह कुलीगीरी का यह धधा छोड दे। उसको मैं फैक्टरी मे गेटकीपर की पाच सौ रुपये महीने की नौकरी कल मे ही देने को तैयार हू।"

मैंने उसको रुक रुककर कई बार देखा। उसमे वायदा खिलाफी जैसा कुछ भी नजर नही आ रहा था। मैंने धीमे शब्दो मे उससे कहा, "प्रस्ताव आपका कोई गलत नही है। मैं कल उससे बात करके आपको बताता हू।'

उसने लपककर मेरे दोनो हाथ अपनी गदेलियो मे दबा लिये और बहुत ही आत्मीयता से बोला, "यकीन कीजिये, मैं आपको धोखा नही दूगा। आप कल ही उसको फैक्टरी मे लेकर आ जाइये, नौकरी पक्की है। मैं कोशिश करूगा कि मकान इत्यादि भी उसको फैक्टरी की ओर से मुफ्त दिया जाय। अच्छा अब मैं चलता हू। मैं कल आपका फैक्टरी मे इन्तजार करूगा।"

और वह आशा से ओत प्रोत होकर चला गया।

उस रात को भी तेजू मेरे यहा नही आया। मैंने तय किया कि सवेरे कालेज नही जाऊगा स्टेशन जाकर उसको नौकरी के लिए समझाऊगा।

मैं जानता था कि ऐसे मामलो मे मेरे और उसके सोच का किसी भी बिन्दु पर समकोण नही बनता था फिर भी मेरी दिली इच्छा थी कि वह सेठ के यहा नौकरी कर ले। पाच सौ रुपये महीने की नौकरी उस समय तो क्या आज भी कोई बहुत मामूली नही होती। और फिर सबसे बडी बात यह थी कि उस नौकरी के बहाने स्टेशन के सभी जजालो से बचा जा सकता था। उसमे कोई चोरी या बेईमानी की बात भी नही थी। रही रेलवे माल की चोरी रोकने या कुलियो की समस्याए सुलझाने की बात तो उसके लिए तजू ने कोई ठेका नही ले रखा था।

उस रात फिर मुझको नीद नहीं आयी।

सवेरे ही मेरे स्टेशन के लिए निकलने से पहले वह मेरे कमरे पर आ गया।

वह आते ही आते बोला, 'कल तुमने यहा आने को कहा था, पर, हम शाम को काम लग गया था। अब बोलो क्या बात है?'

"मैंने तुम्हारे लिए एक नौकरी तलाश ली है।'

"अच्छा, मेरे लिए नौकरी तलाशी है? अरे भया, तुम्हे अपने लिए नौकरी ढूढनी थी कि हमारे लिए? हम तो जैसी उलटी सीधी नौकरी कर रहे है वो ठीक ही है, तुम अपनी चिन्ता करो!"

"मुझे भी मिल जायगी, पहले तुम तो राजी हो जाओ।'

'कहा कौन नौकरी है हमारे लिए?"

"स्टेशन के पास वाली जो लोहे की फैक्टरी है न? उसी मे गेटकीपर की पाच सौ रुपये महीने की नौकरी है।"

मुझे लगा जैसे उसको किसी जहरीले कीडे न यकायक काट लिया है। वह पहल मुझको लगातार देखता रहा फिर खिडकी के रास्त बाहर शून्य मे देखन लगा।

मैंन उसको समझाने के उद्देश्य से फिर कहा, 'देखो तुम्हे शायद मालूम नही है, तुम्हारी जिन्दगी के इद गिर्द खतर घिरत चले आ रह है और तुम आज भी आराम स चद्दर तानकर प्लेटफार्म की बेंच पर सो रह हो। इसलिए सबस अच्छी बात यह होगी कि नौकरी कर लो और उन सब झझटो स बचो।"

अब की बार वह हसा—दिल खोलकर काफी देर तक हसता रहा। फिर शात होकर बहुत ही गहरे और जमाऊ शब्दो मे बोला, 'दखो, मैं तुम्हारे मन की जानता हू। तुम हमारे लिए इस बात को लेकर परेशान हो कि हमको कुछ हो सकता है—हम मर सकत हैं। आज कुली लोगो के साथ मिलकर हम जो कुछ करते हैं उसको वे हरामी अच्छा नही मानत और वहा से हटाकर कारखान म नौकरी पर लगाना चाहत, कल को हम कारखान के मजदूरो के साथ मिलकर वही करेंगे जो आज कर रहे हैं तब फिर उन लोगो को वही करना होगा जो वे आज करने वाले हैं। लेकिन इसस तुम्हारा कोई मामला हल नही हुआ। तुम जिस तरह से आज मेरे मरन पर

रोओगे ठीक वैसे ही तुम्हें साल दो साल बाद भी रोना पड़ेगा।"

'लेकिन मैं पूछता हू कि तुमने यह तय क्या कर लिया है कि तुम्हें मरना ही है।"

'वाह ! यह हमने कहा तय किया है यह तो तुमने और सोनू ने तय किया है। हम तो उन सभी हरामियो को मारकर भी जियेंगे जो हमे मारने की तिकड़म लगा रहे हैं !"

'तुम अकेले उन सबको मार पाओगे ?"

उसने मेरे कधे पर एक हल्का सा धौल जमाया और मुस्कराता हुआ बोला 'तुम्हे हम अकेले कैसे लगते हैं बच्चू। आख खोलकर देखो तेजू अकेला नही है—तेजू अनेक हैं तेजू असख्य हैं। तुम फिक्र मत करो कुछ नही होगा।"

और फिर वह एक झटके के साथ मेरे कमरे से निकलकर चला गया।

अगले दो दिन मेरे लिए बड़े उलझन के रहे। उस दिन और अगले दिन फैक्टरी वाले सेठ का आदमी कई बार आ चुका था लेकिन मैं उसको कोई स्पष्ट जवाब नही दे सका था।

तीसरे दिन नगर के सभी अखबारो म उसी लोहे की फैक्टरी मे पुलिस के छापा का समाचार था जिसमे रेलवे का बहुत सारा कोयला और लोहा बरामद हुआ था।

मेरे मन पर भय और आशका की एक पत और चढ गई। और ठीक चौथे दिन मेरे मन की आशका हकीकत बन गई और भय एक गहरे दद म बदल गया।

सवेर कोई साढे सात बजे सोनू दौडता दौडता मेरे कमरे पर आया। वह हाफते हाफते बोला था, "भाव ! जल्दी चलो, तेजू रेल से कट गया !

सोनू का चेहरा पीला पड गया था। उसके होठ काप रहे थे। शायद कुछ और कहना चाहता था लेकिन कह नही पा रहा था। वह लगातार पर पटक रहा था और मैं कुछ क्षणो के लिए मानो चेतनाशून्य हो गया था।

मैं सोनू के साथ जब स्टेशन पर पहुंचा तब तक प्लेटफार्म पर और यार्ड मे मानो लाल सलाब उमड पडा था। जिधर भी नजर जाती थी उधर लाल कुर्ते और पगडी वाले कुली ही नजर आते थे। बीच बीच में स्टेशन के खलासी और कुछ पुलिस भी दिख जाती थी।

तेजू की लाश यार्ड में एक पटरी के अन्दर और बाहर बिखरी पडी थी। सीने के नीचे का भाग कुचलकर इकट्ठा हो गया था, दोनो पैर उसमे उलझे पडे थे। सीने का कुछ हिस्सा, गर्दन और सिर पटरी से बाहर लुढककर औंधा पडा था। खून पटरी के साथ-साथ नीचे की ओर काफी दूर तक बह गया था। उसके लाल कुर्ते का पिछला भाग रेल के पहिये के साथ सटकर कुछ दूर तक उलझा चला गया था जो अब पटरी के ऊपर पडा था।

वह मजबूत काठी वाले कुली तेजू की लाश का अटूट घेरा बनाये हुए खडे थे। मेरे वहा पहुचने से पूर्व पुलिस के द्वारा लाश उठाने की कोशिश की गई थी लेकिन कुलियो ने पुलिस को लाश के पास तक नही जाने दिया था। पुलिस, दरोगा और वहा का स्टेशन मास्टर बहुत परेशान थे।

मेरे लिए कुलियो ने अपना घेरा तोडकर रास्ता बनाया था। मैं और सोनू लाश के बिल्कुल नजदीक पहुच गये थे। उसी जगह से जब दरोगा ने हम लोगो के पास तक पहुचना चाहा तो भीड ने उसे वहा तक हरगिज नही आने दिया। दरोगा घेरे के उस पार खडा मुझसे इस स्थिति मे कुछ मदद करने का आग्रह कर रहा था।

मैंने तेजू के मुंह को एक बार उलटकर देख लेना चाहा। जब मैंने उलटा तो मैं सन्न रह गया।

तेजू का चेहरा किसी तेजधार वाले औजार से पूरी तरह गुदा हुआ था जो उसके रेल से कटकर मरने की बात को बिल्कुल झुठला रहा था। देखते-ही देखते अब की बार सोनू का चेहरा पूरी तरह लाल पड गया और वह अब पहले से अधिक कांप रहा था।

वह मुझसे बिना कुछ कहे आगे की ओर बढ गया और पटरी पर पडे तेजू के लाल कुर्ते का टुकडा उठा लाया। उसने मेरी ओर देखते हुए वह लाल टुकडा तेजू के चेहरे पर बडे करीने से ढक दिया। उसके होंठ अब तक कांप रहे थे।

मैंने चारों तरफ नजर घुमाकर देखा, लाल भीड़ और अधिक गहरा गई थी।

बहुत सारे चेहरों को गहराई से देखा—वही तेजू वाली पैनी नजर और तीखी अनुहारि।

उसका ठीक तीन दिन पहले कहा हुआ वाक्य मेरे कानों में घुमड़-घुमड़कर गूंजने लगा, "तुम्हें हम अकेले कैसे लगते हैं बच्चू! आंखें खोलकर देखो, तेजू अकेला नहीं है—तेजू अनेक हैं, तेजू असंख्य हैं।"

सुनो पालनहार

मालती



"रोशन ! रोशन ! !" अनिल ने दरवाजे पर फुसफुसाहट भरी दस्तक दी। रोशन ने दरवाजा खोलकर देखा—अनिल हांफ-सा रहा है। उसके चेहरे पर घबराहट है।

'अरे, तू इतना घबराया हुआ क्यों है ?"

"रोशन, आज अपन मेला देखने चलेंगे ना, पर मैं घर से मम्मी डैडी से पूछकर नहीं आया। चुपके से भाग आया हूं।"

"अच्छा, अन्दर आ, मैं तब तक कपड़े बदलता हूं। तू अम्मा के पास बैठ।' कहकर रोशन अनिल को रसोईघर में ले आया। अम्मा रोटी सेंक रही थी।

'तुम दोनों रोटी खाकर जाना।' अम्मा का स्वर स्नेह से भीगा था।

"हां, अनिल! चल हाथ पैर धो, आज मक्की की रोटी और अरहर की बघारी दाल बनी है। तुझे पसंद है ना !"

अनिल को लगने लगा कि अचानक जैसे उसे तेज भूख लग आयी है। अम्मा के हाथ की रोटी एक बार पहले भी खा चुका था वह। उस दिन भी मक्की की रोटी और अरहर की दाल बनी थी। तब से यह उसकी पसंद बन चुकी है। अम्मा के कहने पर वह हाथ मुंह धोकर रोशन के पास बैठ गया।

अनिल और रोशन खा रहे थे। मुस्कराती हुई अम्मा परोस रही थी। अनिल देख रहा था—आग की रोशनी में दमकता अम्मा का चेहरा और खपरैल की छत से आता एक नन्हा-सा धूप का टुकड़ा, जो अम्मा के रोटी

वेलते समय हिलने पर उसकी एक गोल काच की बिंदी पर पडता और बिंदी की चमक सतरगी होकर दीवार पर इद्रधनुष बना देती। मम्मी तो ऐसी बिंदी नही लगाती, वे तो लिपस्टिक की ही बिंदी लगाती है। वे यदि ऐसी बिंदी लगाए तो कैसी लगें

"अनिल ! क्या सोच रहा है बेटा, तू तो कुछ खा ही नही रहा है ?"

"खा रहा हू अम्मा मुझे तो तुम्हारे हाथ का खाना बहुत अच्छा लगता है।" उसकी बात सुनकर अम्मा हस पडी थी। उनके मोती जैसे दात चमक उठे थे। मम्मी तो टूथपेस्ट करती है पर उनके दात तो एस नही चमकते।

"क्या सोचन लगा फिर, ले एक रोटी और ले। कहते हुए अम्मा ने जबरन एक रोटी और डाल दी।

खाना खाकर रोशन कपडे बदलने चला गया और अम्मा बतन समेटने लगी। वह बाहर कमरे म पलग पर आकर बैठ गया और दीवारो पर लगी तस्वीरो को देखने लगा। पूरे कमरे मे दो ही तस्वीरें थी। एक लकडी की छोटी टेबल और दो कुर्सिया। एक निवाड का पलग, जिस पर धुली चादर बिछी हुई थी। कमरे का फश कच्चा था और छत कवेलू की। कही कोई सजावट नही थी फिर भी न जाने क्या उसे रोशन का घर बहुत अच्छा लगता है। उसका बगला तो बहुत बडा है। आसपास बगीचा भी है। घर का हर कमरा सजा हुआ है। फिर भी, उसे अपने घर म घुटन महसूस होती है। घर एक अजीब से खौफनाक सन्नाटे मे डूबा रहता है। ऐसे वातावरण म वह कसे हसे, कैसे बोले और कसे खेले ? और बोले भी तो किससे और खेले भी तो किसके साथ ? वह चुपचाप दीवारो को ताकता रहता है या अपनी किताबें खोले घटो सोचता रहता है बस।

"चल, मैं तयार हो गया।" कहता हुआ रोशन उसके पास आकर खडा हो गया। रोशन ने नई कमीज पहन रखी थी और सलीके से बाल सवार लिए थे।

"अम्मा ! हम लोग जा रहे हैं।" रोशन ने बाहर से ही चिल्लाकर कहा। अम्मा गीले हाथ पोछती हुई आ गयी थी।

"देखना, मेले मे बहुत भीड होगी। दोनो भाई हाथ पकडे रहना और

ये लो पाच रुपये, कुछ खरीदकर खा-पी लेना।"

अनिल और रोशन सडक पर आ गये थे। रोशन बहुत उत्साहित था लेकिन अनिल का मन सहमा सहमा सा था।

"सच रोशन ! तू नही होता तो मैं क्या कभी यहा का मेला देख भी पाता।"

"हरदम मुह मत लटकाये रहा कर अनिल, अम्मा-बाबू कहते है कि बच्चो को हमेशा हसते रहना चाहिए। हसते बच्चे हमेशा अच्छे लगते है। मुझे तो वे लोग कभी उदास नही देख सकते।"

'रोशन ! मुझे तो डर लग रहा है, कही मम्मी डैडी न देख लिया तो "

"यहा मम्मी-डैडी कैसे आयेंगे ? तू तो कहता है कि उन्हे मेला देखना अच्छा नही लगता।"

"कोई जान पहचान का मिल गया और उसने शिकायत कर दी तो '

"कोई नही देखेगा, भरोसा रख।" अनिल ने रोशन का हाथ कसकर पकड लिया था। रोशन के साथ वह अपने को सुरक्षित महसूस करता है, जबकि रोशन भी उसी की उम्र का है। फिर भी कितना साहसी है ! और उसे पता नही कैसा भय साथ रहता है।

वे दोनो मेला ग्राउड पर आ गये थे। वहा रग बिरगी दूकाने सजी हुई थी। अनिल के लिए तो यह सब नई चीजें थी। उसे वहा की रोशनी और चहल-पहल बहुत अच्छी लग रही थी।

वे लोग सबसे पहले झूले मे बैठे। फिर जादू का खेल देखा। आलू की टिकिया और पानी बताशे खाये। रोशन ने दो गुब्बारे और दो सीटिया खरीदी। एक अपने लिए और एक अनिल के लिए। अम्मा के लिए एक रूमाल खरीदा। सारे पैसे खत्म करके वे लोग मेला घूमने लगे। अनिल को रोशन के साथ इस तरह घूमना बहुत अच्छा लग रहा था। यह सब उसके लिए नया अनुभव था। जीवन मे इस तरह वह कभी पैदल नहीं घूमा। बहुत बडे आफिसर का लडका था। सो कभी-कभी मम्मी-डैडी के साथ ऐसा लगता, जैसे वह कैदी हो और वे लोग सिपाही। उसका मन परकटे पछी की तरह फडफडाकर रह जाता। इटरवल मे नौकर उसे बाहर ले

देखने हैं उससे आधा जान तो वैसे ही निकल जाती है। और मम्मी, बाप रे, पूरी हिटलर है। घर म इतना आतक रहता है कि वह ठीक से सास भी नही ले पाता। हमेशा डर रहता है कि कही कुछ हो न जाए। इतनी सावधानी के बावजूद कुछ न कुछ हो ही जाता है। परसो के दिन वह टेबल से टकरा गया तो उस पर रखे जापानी गुलदस्ते के टुकडे टुकडे हो गये। उसके हाथा म किरचे चुभ गई थी। कोहनी और घुटनो से खून निकल आया था, यह देखकर मम्मी पर तो मानो भूत सवार हो गया था। उसके खून की परवाह किये बिना ही मम्मी उसे पीटती चली गयी थी। पीटते पीटते थक गई तो डैडी क पास शिकायत करने चली गयी, पर डैडी शायद व्यस्त थे इसलिए बच गया, लेकिन मम्मी हार मानने वाली नही थी। एक घटे तक बडबडाती रही।

नौकर उसे पकडकर रसोईघर म ले आया था। उसने उस हल्दी-चूना लगाकर सक कर दी थी। सेंक करते समय वह भी बडबडाता रहा, 'अनिल बाबू, तुम इतनी ऊधम काय को करते हो ?"

वह चुपचाप आसू बहाता रहा। उसने कुछ जवाब नही दिया, पर अपने कमरे म फूट फूटकर रोने लगा। सबको गुलदस्ता टूटने की चिंता थी लेकिन उसके बहते खून की तरफ किसीका ध्यान नही था। उसकी जगह यदि रोशन का घर होता ? उसकी अम्मा होती ? और रोशन को इस तरह चोट लग जाती तो

अम्मा और मम्मी म कितना फर्क है। मम्मी को बच्चे बिलकुल अच्छे नही लगते। वह तो मम्मी की साडी भी छू दे तो उनका पारा आसमान छूने लगता है। उसे तो अपने घर की किसी वस्तु को छूने का अधिकार नही है। और अम्मा की साडी पर हल्दी-तेल क दाग लगे रहते हैं। उनसे आती महक उसे बहुत अच्छी लगती है। अम्मा को बच्चे अच्छे लगते है। अम्मा तो रोज बच्चो को कहानी सुनाती है। मम्मी को तो कहानी आती ही नही और उसे कभी कोई कहानी की पुस्तक भी नही पढने देती। बस, हमेशा 'पढो-पढो की रट लगाये रहती है। क्या कोई दिन रात पढता ही रहे ? खेले भी नही ? दोस्तो के घर भी न जाय ? बात भी न करे ? रोशन तो खूब खेलता है। स्कूल मे आने वाली पत्रिकाए भी पढता है। भाषण भी

"अरे माली ! देखना तो, यह कौन भिखारी अंदर घुस रहा है ?" मम्मी चीखते हुए बोली थी।

"मम्मी ! यह तो रोशन है।" उसने सहमते हुए कहा।

"कौन रोशन ?"

"मेरे साथ पढ़ता है।"

"तो यहां क्या आया है ?"

"कुछ काम होगा" कहकर वह स्वयं गेट पर पहुंच गया, पर लग रहा था कि जैसे मम्मी की नजरें उसकी पीठ पर चुभी जा रही हैं। उसे मन ही मन बड़ी ग्लानि हो रही थी। रोशन पहली बार उसके घर आया है, पर इतने बड़े घर में अपने दोस्त को बिठाने तक की भी जगह नहीं है। मम्मी अभी-अभी रोशन को भिखारी कह चुकी है। तब वे कैसे बर्दाश्त करेंगी कि वह अपने सजे धजे ड्राइंग रूम में उसे बिठाए।

"अरे अनिल तू सुबह कहां चला गया था ? हम सब होली खेलने आये थे।"

"हम लोग बाहर गये हुए थे," कहते हुए अनिल को लगा कि जैसे उसके गले में कुछ अटक-सा रहा है। उसने देखा—रोशन की कनपटी पर अभी तक रंग लगा हुआ है वह धुली हुई पर पुरानी कमीज पहने हुए था।

"अम्मा ने तुझे बुलाया है आज होली है ना अम्मा ने खूब पकवान बनाए हैं और तुझे मावे की गुझिया और नमकीन मेरे अच्छे लगते हैं ना !"

अनिल की आंखें भर आयीं। किसी तरह अपने को रोककर उसने कहा, "अम्मा से कहना, कल आऊंगा। आज तो पढ़ने का समय हो गया है।"

"आज भी तू पढ़ेगा ?"

"हां रोशन ! मम्मी डैडी ने समय बांध दिया है। इतने समय पढ़ो, इतने समय खाओ।"

जब रोशन चला गया तो उसने संतोष की सांस ली। रोशन के छोटे-से घर में भी उसके लिए जगह है और वह अपने इतने बड़े बंगले में उसे बिठा नहीं सका। उसकी मम्मी ने रोशन से बात तक नहीं की, खिलाने पिलाने

की तो बात दूर है, जबकि अम्मा का वह स्नेहिल स्पर्श और उनके हाथ का खाना वह एक अपराधबोध से बोझिल अपनी कुर्सी पर गिर पडा। उसने मम्मी की ओर आख उठाकर देखा तक नही।

"यह लम्बा तेरे साथ पढता है ?"

"हा।"

"किसका लडका है ?"

'इसके पिताजी स्कूल मे टीचर हैं।"

बाप रे ! कैसा गदा लडका था ! तू ऐसे लडको से दोस्ती रखता है ?" उनकी आखो से चिनगारिया सी निकल रही थी।

उसके आसू निकल आये। उसकी इच्छा हो रही थी कि चीख-चीखकर कहे, 'यह रोशन नही होता तो मैं कभी खुश नही रह सकता था। यह रोशन नही होता तो मैं गणित की परीक्षा मे पास नही होता। रोशन नही होता तो तो " उसके पास रोशन की महानता बताने के लिए शब्द नही थे।

वह चुपचाप उठकर पलग पर फूट फूटकर रोने लगा। काश, मम्मी समझ पाती कि रोशन क्या है ? कभी स्कूल आकर देखें, उसके घर जाकर देखें कि रोशन क्या है ? उसकी अम्मा क्या हैं ? तब पता चले कि भिखारी कौन है ?

रोशन के पास क्या नही है ? वह अपने घर पर अधिकार से अपने दोस्त को बुला तो सकता है, खिला तो सकता है लेकिन मैं एक बडे अफसर का लडका होकर भी कुछ नही कर सकता।

'क्या, क्या है एसा !" उसकी इच्छा हो रही थी कि चीख चीखकर अपन पालनहारो से तमाम सारे सवालो के उत्तर मागे जो उसके मन म वर्षो न घुमड रहे हैं पर इस घर मे हसना, रोना, चीखना और सवाल करना, सब कुछ मना है। तब फिर वह अपने सवालो के उत्तर कहा तलाश करे ? इन सवालो के उत्तर कहा हैं ? किसके पास हैं ? कौन देगा उसके सवालो के जवाब ?

फंदा

मनोज तिवारी



यह प्राडक्शन रूम है। कच्ची रबर से ट्यूब बनने तक की सारी प्रक्रिया यहीं पर पूरी होती है। भारी भरकम मशीनों से रुंधा हुआ यह डिपार्ट पूरी फैक्टरी में अपनी खास अहमियत रखता है। मशीनों के चलने की घरघराहट, सामान की उठा पटक और मजदूरों के बतियाने की धीमी-तेज आवाजों का मिला जुला शोर दिन रात यहां पर उठता रहता है। सामने ही रोला मशीन है। इसमें रबर की पिसाई हो रही है। कच्ची सख्त, चमड़े के पट्टे जैसी रबर मशीन में लगे लोहे के दो मोटे रोलरों के बीच से कचूमर बन-कर निकलती है। यह रबर नरम और लचीली होती है, जिसे किसी भी सांचे में आसानी से ढाला जा सकता है। रोला मशीन में ही लगी आटो-मेटिक आरी इस रबर की बराबर की पट्टियां काटती जा रही है। अब ये पट्टियां एक्सट्रूडर में डाली जायेगी और बस ट्यूब तैयार। शुरू-शुरू में उसे ट्यूब बनाने की इस प्रक्रिया के प्रति बहुत उत्सुकता रहती थी। यहां से निकलते वक्त अक्सर वह किसी न किसी मशीन के पास ठहरकर उसे गौर से देखने लगता था। पर धीरे धीरे सब कुछ मामूली सा होता गया। और अब तो यहां का माहौल उसकी रोजाना की जिन्दगी का एक खास हिस्सा बन चुका है।

आसपास बेतरतीब ढंग से नजर डालते हुए, मशीनों के बीच से बने संकरे रास्ते में निकलकर वह गैलरी में आ गया। गैलरी खासी लम्बी-चौड़ी थी, पर इस समय वहां पर रखने की भी जगह नहीं थी। पूरी गैलरी में एक तरफ सिलसिलेवार ट्यूबें टंगी हुई थी। बाकी जगह में तमाम

तरह का अगड-खगड पडा था। इन सबके अलावा जो थोडी-सी जगह बची थी, वहा फिनिशिंग डिपाट के कुछ मजदूर बैठे हुए आपस मे बतिया रहे थे। वह उनके बीच स सभल सभलकर निकलते हुए फिनिशिंग डिपाट के पहले दरवाजे से भीतर आ गया। दूसरे दरवाजे के पास सिंह की मेज थी। वह इस समय किसी रजिस्टर म लाइनें खीचन म मशगूल था। उसने सिंह के पास आकर दोना चालान उसकी मेज पर रख दिये। सिंह लाइनें खींचना बद करके रजिस्टर पर कुछ नोट करने लगा।

यह बहुत बडा कमरा है। लम्बा अधिक, चौडा कम। पहले जब फैक्टरी लगी लगी ही थी, यहा पर सिर्फ फिनिशिंग का काम होता था। तब इसे फिनिशिंग डिपाट कहते थे। पर अब, पिछले करीब आठ नौ महीने से, इसीको स्टोर के काम म भी लिया जाने लगा है। अब इसके दो नाम हैं—फिनशिंग डिपाट और स्टोर रूम। हालाकि जितने पुराने लोग हैं अभी भी इसे फिनिशिंग डिपाट के नाम से ही जानते-पुकारते हैं।

माल की रसीद बनाकर सिंह ने उससे उसपर दस्तखत कराये तब एक रसीद फाडकर उसे दे दी। उसने रसीद और चालान वापस अपनी जेब म रखे और सिंह से जल्दी माल बाहर निकलवाने को कहकर गैलरी से होता हुआ आफिस म आ गया। आफिस यानी एक बडे से कमरे म बेतरतीब लगी चार मेजें, आठ कुर्सिया, दो हाफ रैक, एक गोदरेज की आलमारी। सामने मित्तल बाबू की मेज खाली पडी है। कुशल और शरद अपने-अपने काम म जुटे हुए है। और बायी तरफ पडी छोटी सी मेज पर बैठा वर्मा टाइप मशीन पर कुछ खटर पटर कर रहा है। उसके आने से वहा के माहौल म कोई परिवर्तन नही हुआ। सब अपने अपने काम म लगे रहे। वह चुपचाप आफिस के बाहरी दरवाजे पर आकर खडा हो गया। बाहर एक स्टूल पर रामराज बैठा है। अपनी मिचमिची आखो से वह सडक के दोनो ओर बडे ध्यान से देख रहा है। यह उसकी ड्यूटी है। बिजली विभाग की कोई जीप, कोई अफसर या कर्मचारी देखते ही फौरन अन्दर खबर करे। वह बहुत चौकन्ना सा है। काम जो बहुत खतरे का है। उसकी जरा सी असावधानी पर पूरी फैक्टरी का चालान किया जा सकता है। तब अभी जो बिजली चुरायी जाती है, वो तो कटेगी ही साथ-ही साथ जितनी बिजली

मिलती है, वा भी कट जायेगी। उसे याद आया, एक बार तो बडी मजेदार बात हो गयी थी। उसका एक मिलने वाला आया था। वह बैंक मे चपरासी था और खाकी रग की वर्दी पहने हुए था। तब उसे बिजली विभाग का ही कोई आदमी समझकर, उसके फक्टरी तक पहुचने से पहले ही, रामराज ने भीतर आकर मेन स्विच आफ कर दिया था। एकाएक सारी फैक्टरी म सन्नाटा छा गया था। प्रोडक्शन रूम के मजदूरा ने चटपट मशीना पर टाट के टुकडे डाल दिये थे जिससे मशीनो मे फमी रबर उसी क नीचे मुद गयी थी। सारा काम एकदम मशीनी ढग मे हुआ था। और जब पता चला कि वह बिजली विभाग का कोई आदमी नही है तो फिर उसी मशीनी रफ्तार से सब कुछ हरकत मे आ गया था। मशीनो की थरथराहट का कानफाड़ू शोर सारी फक्टरी म गूजने लगा था।

फक्टरी स निकलकर सारी पटिया सिलसिलेवार एक ढेर की शक्ल मे गट के सामने जमा हो गयी थी। वह करीब आकर उनकी गिनती करने लगा। कई पेटिया ठीक से बद नही थी। उन पर कसी हुई टीन की पत्तिया ढीली थी। कोई-कोई तो बिलकुल उखडी हुई थी। उसने सोचा सिंह को बुलाकर अभी उन्ह ठीक से कसवाय। पटिया की ठीक स पकिंग भी नही करवाता। उसका क्या है, फक्टरी से निकलवाकर माल उसके सुपुर्द कर दिया, बस, काम खत्म। पर परेशानी तो उसे होती है जब रास्ते म किसी पेटी से ट्यूबें निकलकर बाहर झाकने लगती हैं या कभी कभी दुकान तक उठाने धरवाने के बीच ही कोई पेटी खुल जाती है। तब ट्यूबा की गिनती रखना और उन्ह सभालना उसके लिए बहुत मुश्किल हो जाता है।

सिंह को बुलाने के ख्याल से ही वह फक्टरी क भारी भरकम गट म दायी तरफ लग हुए आफिस के गट की तरफ बढा। पर फिर कुछ सोचकर दो तीन कदम चलकर ही रुक गया। उसन वहा से पटियो की तरफ मुड़कर देखा, तब जेब से चालान निकाल लिय। कुल बारह पटिया थी। सात चड्ढा साइकिल स्टोर को जानी थी और पाच मट्रो साइकिल कम्पनी का। तभी उसे ध्यान आया, चड्ढा वाले की अभी रिप्लेसमट बाकी है वो भी लिए जाय, नही तो फिर किसी दिन दौडना पडेगा। यह भी हो सकता है कि रिप्लेसमट न पहुचने पर वह यह माल भी न ले। आजकल इनकी

मार्केट की हालत बडी डावाडाल चल रही है।

चालान लिए हुए वह आफिस मे घुस गया। शरद अब खाली बठे थे। उनके पास आकर वह बोला, "शरद बाबू चड्ढा वाले की रिप्लेसमट है, उसका चालान भी बना दीजिए। माल के साथ ही चली जायगी।"

शरद रजिस्टर निकालकर उसम कुछ ढूढने लगे। फिर कुछ देर बाद हिसाब लगाकर बोले "यार, रोडिंग ट्यूब हैं। बगैर मित्तल बाबू से पूछे कैसे भेज दू ?'

'पर देनी तो है ही। करीब महीना भर हो गया है। उधर स निकलन पर वह कई बार इसके लिए टोक चुका है।

सो तो ठीक है यार । मगर मित्तल बाबू न रोडिंग के लिए रोक दिया है न।' शरद ने अपनी मजबूरी जतायी और उसे भाटिया का बिल पकडा दिया यार बिरहना रोड जा ही रह हो, उधर से भाटिया का पेमट भी लेत आना।"

उसन बिल मोडकर जेब मे रख लिया और कुशल की तरफ मुडा, "कुशल बाबू रिक्शे के लिए पैसा दीजिए।"

कितने ?"

पाच रुपय दीजिए। बचेंगे तो लौटा दूगा।

पर पाच रुपये तो इस समय मेरे पास है भी नही। चार हैं।"

उन्होने चार रुपय उसकी तरफ बढात हुए कहा, 'य लिय जाआ। और लगें ता अपन पास से लगा देना। लौटकर ले लेना।"

वह कुछ नही बोला। चार रुपये लेकर जेब मे रखे और चुपचाप बाहर निकल आया। भुक्खड कम्पनी है। सालो के पास रिक्शे तक के पसे नही ह। पिछले महीने की तनख्वाह भी अभी नही दी है। आज सत्तरह तारीख हो रही है। कायदे स सात तारीख को तनख्वाह बट जानी चाहिए थी। इस बात का पता लेबर आफिस को चल जाये तो अभी इनको लेने क देने पड जायें। पर लेबर आफिस तक यह खबर कौन पहुचाय ! मुश्किल तो यही है। सभी को अपनी नौकरी प्यारी है। मजदूर तो खर आफिस वाला सामने बडबडा भी लेते है। मगर आफिस वाले किससे कहे ! चुपचाप अन्दर ही अन्दर घुटते रहते हैं।

मजीवन दो रिक्शे लिवा लाया था और रिक्शे वालों की मदद से रिक्शा पर पटिया लदवा रहा था। वह रिक्शा के पास आकर, जब स चालान निकालकर उनकी पीठ पर रिक्शों के नम्बर नोट करने लगा। पिछले महीने भर स उसके काम करने में तमाम सारी बंदिशें और कानून लगा दिये गये हैं। उन्हीं में से एक यह, रिक्शा के नम्बर नोट करना भी है। हालांकि इससे उसी की सुरक्षा हो जाती है इसलिए उसे संतोष होना चाहिए काम में सतर्कता बरतनी चाहिए। पर इसके विपरीत, अब वह कोई भी काम करते हुए बहुत सुस्त-सा रहता है। जानता है उसे जिस अंधेरी खोह में छोड़ दिया गया है वहां से निकलने के बाद भी वह अंधेरे में ही भटकता रहेगा। आंखें तब उस अंधेरे की इतनी अभ्यस्त हो चुकी होंगी कि हर चीज का बस अंधेरे की शक्ल में ही देखेंगी। इसीलिए परिस्थितियों के सामने उसने घुटने टेक दिये हैं। बल्कि घुटने टेकने के लिए वह मजबूर हो गया है। हवा के खिलाफ कोई नहीं चल सकता। जो चलेगा गिर पड़ेगा। जो कुछ होना है होने दो। जो कुछ पड़ती है, चुपचाप सहते जाओ। अब तो बस यही उसकी नियति बन चुकी है।

माल लद गया तो रिक्शे चल दिये। उसने अपनी साइकिल उठायी और उनके पीछे हो लिया।

फैक्टरी में काम करते हुए उसे तकरीबन दो साल हो गये। यहां से पहले वह रोडवेज बस में कण्डक्टर था। नौकरी सरकारी थी। अच्छी थी। खासी तनख्वाह थी। पर वह नौकरी कुछ समय तक ही चल पायी। करीब सात-एक महीने बाद ही आर० टी० ओ० ने उसे चेकिंग में घेर लिया। उसने उसपर सवारियों से नाजायज पैसे वसूलने टिकट नहीं देने और डिसिप्लिन तोड़ने आदि के चार्ज लगाये थे। तब वह 'टम्परेरी' ही था। कोई दो एक महीने बाद उसे मुस्तकिल होना था। आर० टी० ओ० की रिपोर्ट पर उसे नौकरी से निकाल दिया गया। पर वह जानता है उसने सवारियों से कोई पैसा नहीं खाया था और न ही कोई डिसिप्लिन तोड़ा था। सब आर० टी० ओ० की ही बदमाशी थी।

तब वह नया नया लगा था। वहां के रस्मो रिवाज के बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था। आर० टी० ओ० की खुराफाती बुद्धि की खबर तो उसे

करीब महीने सवा महीने बाद लगी थी जब एक दिन चौहान उसके पास आया था। वह खुलासा आर० टी० ओ० का चमचा कहा जाता था। चौहान ने आते ही कहा था, "मुझे ढींगरा साब ने भेजा है, गुरु।"

वह यही बात कहने आया है, यह तो वह जानता था, पर शुरू में ही इस टापिक पर आ जायेगा, ऐसी उसे उम्मीद नहीं थी। उसने संयत होकर पूछा, "किसलिए?"

"तुम्हारी ड्यूटी हमीरपुर रूट पर है न? काफी 'नफा' हो जाता होगा।" चौहान धीरे धीरे मुस्करा रहा था।

"नफा कैसा? मैं कुछ समझा नहीं।"

"नफा माने फायदा। फायदा माने ओवर इनकम। गुरु, यह तो खुदा का शुक्र मनाओ कि तुम्हें शुरू में ही तरावटदार रूट मिल गया है। अब ऐश करोगे ऐश! सब तरसते रहते हैं इसके लिए। तुमने तो बगैर दौड़ धूप, पूजा पत्तर के ही हथिया लिया। लकी हो गुरु।"

"वो तो ठीक है पर ढींगरा साब ने आपको...?" सब कुछ जानकर भी वह अनजाना बन रहा था।

"ढींगरा साब न?" चौहान ने उसकी तरफ प्रश्नात्मक नजर से देखा, "गुरु अपने ढींगरा साब भी खूब हैं। मस्त आदमी हैं। अपना ख्याल रखते हैं और साथ-साथ दूसरों यानी हम लोगों का भी। तुम अभी नये हो, इसलिए तुम्हें कुछ मालूम नहीं।" चौहान ने कहा, फिर जैसे कुछ याद करके बोला, "हां, तो तुमने अभी पूछा था, उन्होंने क्या कहा है? गुरु, वह क्या कहेंगे। बस, अपने हिस्से वाली बात बोली है।"

"साफ-साफ कहो।" उसका टोन कुछ बदला हुआ था।

"साफ-साफ कहूं तो गुरु बात यह है, तुम महीने में दो सौ रुपया मुझे दिया करोगे और मैं उन्हें ढींगरा साब तक पहुंचा दिया करूंगा। बाकी तुम जितना कमा सको, कमाओ।"

"मुझे ऊपरी आमदनी नहीं करनी। नफा नहीं कमाना। समझे! यह सब तुम और तुम्हारे साब को ही मुबारक।" उसने चौहान की बात बीच में ही काट दी थी। गलत बात उसे कभी बर्दाश्त नहीं होती, यह उसकी शुरू की आदत थी। पर जाने कैसे अभी तक वह सारी गलत बातें अपने में पचा

गया था। पर अब उससे चुप नहीं रहा गया। आखिर में यह भी लगा दिया, "तुम्हारे जसे लोगो ने ही तो देश को चौपट कर रखा है।" इतना कहकर वह वहा से उठ गया था। जाने जाते चौहान न बशर्मी स हसत हुए कहा था, "एक बार फिर सोच लो गुरु। जिन्दगी म फसले इतनी जल्दी नहा किया करते।"

पर वह उसकी बाता पर ध्यान न देकर वहा से चला गया था। तभी से चौहान उमस दूर हो गया था और ढींगरा साब भी सामने पड जान पर भेडिय की तरह उसे घूरने लगते थ। पर उसन इस बात की कतई फिकर नही की थी। वह अपनी जिद पर डटा रहा था हालाकि इस जिद की वजह स उसके साथ चलन वाले ड्राइवर भी उससे काफी नाराज थे, क्योंकि उसकी वजह से वे भी तरीदार रूट का फायदा नही उठा पाते थे। एकाध बार किसी ड्राइवर ने दो-एक सवारिया बैठा लेने का कहा भी तो उसने बस 'ओवर लोड' होने का बहाना बना दिया। वह दरअसल ढींगरा का कोई भी मौका नही देना चाहता था। और उधर वह मौका ढूढ रहे थे। आखिर एक दिन जब बस कानपुर स्टाप से छूटकर पतारा पार कर गयी थी, आर० टी० ओ० ने बस रोक ली। चेकिंग शुरू हो गयी। तब वह चालान तयार कर रहा था, इसलिए पतारा से चढे नये यात्रियो के टिकट नही देख पाया था। इसीमे गडबड हो गयी। चेकिंग मे एक बगैर टिकट मिला। ढींगरा ने उससे टिकट के लिए पूछा, तो उसन बात उसी पर थोप दी कि कडक्टर ने पैसे लकर टिकट ही नही दिया। उसकी इस बात की कई लोगो ने पुष्टि भी कर दी। ड्राइवर शर्मा न भी कहा कि वह अक्सर इसी तरह लोगो को बैठा लिया करता है, उसके मना करने के बावजूद। बाकी लोगो ने इस मामले म अपनी अनभिज्ञता जाहिर की थी। शायद वे इस पचडे म नही फसना चाहते थ।

और हफ्ते के भीतर-ही भीतर उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। फिर राडवेज की तरफ से उस पर मुकदमा दायर किया गया था, जो वह अभी तक लडता आया है

उसन देखा, रिक्शे अब परेड पार करके हास्पिटल रोड पर आ गए हैं। यही पर चड्ढा साइकिल स्टोर है। वह तेजी से साइकिल चलाता हुआ

"काट दीजिए। पर तारीख कल की ही डालियेगा।

"कल की तारीख!" भाटिया ने उसकी तरफ देखा, 'अब कभी इतनी जल्दी पेमेंट मिली भी है तुम लोगों को! दस दिन बाद का चेक कहो तो काट दूं।'

वह कुछ देर सोच में डूब गया। दस दिन बाद का चेक न ले या न ले। पिछली बार रामनाथ से पांच दिन बाद की तारीख का चेक ले गया था, तो मित्तल बाबू ने उसे अच्छी तरह फटकारा था।

'रहने दीजिए।" उसने कहा और चालान फाइल में लगाकर बाहर निकल आया। पीछे भाटिया के बड़बड़ाने की आवाज आ रही थी "साले जब देखो चले आते हैं—पेमेंट, पेमेंट, पेमेंट "

भाटिया के यहां से निकला, तो रिक्शा वहां से गायब था। उसके भीतर धक्क-सा हुआ। कहां चला गया? उसने रिक्शे की तलाश में इधर-उधर नजरें दौड़ायीं। रिक्शा थोड़ी दूर पर खड़ा था। साइकिल लिये हुए वह तेजी से रिक्शे के करीब आ गया। 'यहां क्या चले आये?" उसने रिक्शेवाले को संदेह से देखते हुए पूछा।

रिक्शेवाला सकपका गया, "वो पुलिस वाला किनारे होने को बोला था।"

'ठीक है चलो!" रिक्शेवाला चल दिया। वह भी अपनी साइकिल पर पीछे हो लिया। अभी भी वह रिक्शेवाले की बात से सन्तुष्ट नहीं हो पाया था और उसे पूरी तरह अपनी नजर में कैद किए हुए था। रिक्शेवाले से वह अब काफी सतर्क रहने लगा है, जब से उसके साथ यह घटना घटी है। यह कोई महीने भर पहले की बात है। तब कोई दो बरस तक बराबर लड़ते रहने के बाद, रोडवेज वाले मुकदमे में उसकी जीत हुई थी। फैसले के हफ्ते भर बाद ही, रोडवेज से उसे रि-अप्वाइंटमेंट लेटर भी मिल गया था। महीने की बारह तारीख को उसे दोबारा सर्विस ज्वाइन करनी थी। पर इसी बीच यह घटना घट गयी, जिसने उसकी सारी इच्छाएं-आशाएं खाक में मिलाकर रख दीं। उस दिन की बात अभी भी बिल्कुल ताजा है

मंगलवार का दिन था। तारीख चार। दिन भर वह बहुत व्यस्त रहा था जाने कहां से तमाम सारा काम आ पड़ा था। और मित्तल बाबू

काप गया था। शरीर में अजीब-सी कपकपी तिर गयी थी।

वह बदहवासी की हालत में फक्टरी पहुंचा था। आफिस में सिर्फ कुशल था। उसकी हालत देखकर पूछने लगा, "क्या हो गया?" उसे बोलता न देख फिर पूछने लगा, "क्या बात है अजिंदर?" फिर उसने कुशल को सिलसिलेवार ढंग से सारी घटना कह सुनायी थी। कुशल ने मित्तल बाबू को फोन किया था। पर वे घर पर नहीं थे। सुबह आफिस आए, तब उन्होंने उसको कसकर डांटा फटकारा था। फिर उसे कार में अपने साथ बैठाकर पुलिस थाने लिवा ले गये थे। उस रोज वह पहली बार कार में बैठा था, पर वह कार भी उसे बेहद खटारानुमा गाड़ी लग रही थी, जिसके हर झटके पर वह भीतर से कराह रहा था।

पुलिस थाने में बारह सौ रुपयों की ट्यूबों की चोरी की रिपोर्ट लिखी गयी थी। उस पर मित्तल बाबू के दस्तखत हुए थे। मित्तल बाबू के जाने के थोड़ी देर बाद ही, एक सिपाही ने उसके हाथों में हथकड़ियां डाल दी थीं। उसने उससे इसका कारण पूछा, तो वह उसके चूतड़ पर दो-तीन डण्डे जमाते हुए बोला, "साले, चोरी करता है और हल्ला मचाता है!" उसे लगा था, अब वह बेहोश हो जायगा। पर वह पूरे होश-हवास में रहा था। आदमी किस कदर टूटता है, यह उसे उस रोज पहली बार मालूम हुआ था। यह सब कैसे हुआ, यह बात उसके पल्ले नहीं पड़ सकी थी।

सवेरे मित्तल बाबू उसके पास आये थे। वह फर्श पर पड़ा सो रहा था। सारी रात वह फूट-फूटकर रोता रहा था, अपनी लाचारी पर। बिल्कुल वैसे ही, जैसे बचपन में कभी-कभी वह भइया को मारने दौड़ता था और नहीं मार पाने पर, जमीन पर पसरकर रोने लगता था। तब अम्मा उसे फुसलाने के लिए भइया को पकड़कर दो एक चपत लगा देती थी और उससे संतुष्ट होकर, उसके चेहरे पर एक बदली मुस्कान बिखर जाती थी। पर यहां तो झूठ मूठ के लिए ही सही चुप कराने वाला कोई नहीं था।

भारी काया, मोटे कांचों वाला चश्मा लगाये और मन्थर गति में शरीर को थरथराते हुए मित्तल बाबू अपनी सफाई दे रहे थे, "तुम्हें जाने क्या फांस दिया अजिंदर। थानेदार बता रहे थे, चोरी तुम्हीं ने की है। मुझे ऐसा मालूम होता, तो तुम्हें कल यहां हर्गिज नहीं छोड़ता।" फिर एक फाइलनुमा

कागज बढाते हुए बोले थे, "इस पर सिगनेचर कर दो । मैंने थानेदार से तुम्हारे लिए बात की है। वह कुछ लेकर रफा दफा कर देगा।"

उसने वह कागज लेकर पढा। वह एक बाड था, जिसमे पाच साल की नौकरी को वदिश और बारह सौ रुपया की अदायगी—ये दोना शर्तें थी। उसने एक बार खाली खाली नजरा से मित्तल बाबू की तरफ देखा था, और फिर बगैर कुछ सोचे समझे उसपर दस्तखत कर दिये थे। इसके बाद मित्तल बाबू उसे छुडवा लाये थे। तब तो वह उन सारी परिस्थितियो के बीच बिल्कुल संयत बना रहा था। पर अब उनका ख्याल करता है तो अनायास ही शरीर मे झुरझुरी सी दौड जाती है। रोडवेज से मिला रिअप्वाइटमेट लेटर अभी भी उसके पास है। पर अब वह बेकार हो चुका है। उसके लिए अब हर वह चीज बेकार है, जिसपर अब से पाच साल तक की तारीख पडी है। पाच साला के लिए वह बधक बन चुका है। बल्कि पाच साल क्या जिंदगी भर के लिए, अभी उसकी उम्र सत्ताइस की है। पाच साल बाद बत्तीस हो जायगी। तब वह क्या करेगा? उम्र की सारी हदें तो वह पार कर चुका होगा। तब यही इसी फैक्टरी मे बैल की तरह जुता रहेगा न।

फैक्टरी मे आकर उसने रिक्शे से पटिया उतरवायी और पैसे देकर रिक्शे वाले को विदा किया। उसका दिमाग फट रहा था। भीतर आकर एक कुर्सी पर बैठ गया। आफिस मे इस समय कोई नही था। शरद और वर्मा खाना खाने गए थे और कुशल वकील के पास।

थोडी देर बाद उसे बीडी की तलब लगी तो वह आफिस से बाहर निकल आया। बीडी पीकर आफिस मे लौटा तब तक शरद आ गए थे। उन्होंने उसे दो चालान फिर पकडा दिये। माल बाहर का था और ट्रासपोर्ट मे बुक कराना था। चालान लिए हुए वह प्रोडक्शन रूम मे घुस आया। वहा पर अभी भी बराबर उसी रफ्तार से काम चालू था। मशीनो की भरभराहट का शोर कान के परदे फाड रहा था। वहा के माहौल पर खास ध्यान न देते हुए वह फिनिशिंग डिपार्ट मे आ गया। सिंह अपनी मेज पर नहीं था। शायद खाना खाने गया था। उसने सिंह की मेज के पास आकर

एक रजिस्टर के नीचे दोनो चालान दबाकर रख दिये।

मेज के पास ही तमाम सारे नटो का ढेर लगा हुआ है। ढेर के बगल मे ही एक थक्कर मशीन से ट्यूबों मे नटो को कस रहा है। दायी तरफ ग्राइंडिंग मशीन पर ट्यूबो की घिसाई हो रही है। एक तरफ ट्यूब फुला कर उनकी जाच की जा रही है। सामने दीवार के पास ट्यूबो का एक ऊचा ढेर लगा है। वह ट्यूबो के ढेर के पास ही खडा था, तभी सिंह आ गया। उसने सिंह से माल बाहर निकलवाने को कहा और वहा से बाहर निकल आया।

शाम का देर से छुट्टी मिली। ट्रांसपोर्ट नगर से वह कोई सात साढे सात बजे लौटा, तभी पुरी का टूर प्रोग्राम बन गया और उसका, मय सामान के, स्टेशन छोडने का काम भी उस पर लाद दिया गया। उसे नौ बजे वाली गाडी पकडनी थी। पुरी को स्टेशन पहुचाकर लौटा, तब कोई दस बजे होंगे। खाना बनाया, खाया और लेट गया। दिन भर का थका-मादा था, लेटते ही नीद ने घेर लिया। यह उसका रोज का रुटीन है। फैक्टरी से लौटते लौटते लगभग इतना समय रोज ही हो जाता है। फिर अपने हाथों थोपना खाना। उसके बाद किसी भी काम के लिए फुरसत नही बचती। शुरू शुरू मे वह दो एक ट्यूशन किये हुए था। पर कुछ दिनो बाद वे भी आप ही छूट गए। फैक्टरी मे छुट्टी मिलने का कोई निश्चित समय तो है नही। कभी पाच, तो कभी नौ-दस तक बज जाते हैं।

दूसरे दिन घूमते घूमते ही वह उस कमरे मे घुस गया। वहा पर तमाम तरह का अगड खगड फैला हुआ था। एक तरफ टूटी पेटिया के पटरे पडे थे। तभी उसे ध्यान आया उसके कमरे मे एक भी आलमारी नहीं है इससे सामान वगैरह रखने मे बहुत दिक्कत होती है। जमीन म सीलन लगी हुई है, सो वहा रखने पर भी सामान खराब हो जाता है। यहा से दो-तीन पटरे लेता जाय। दीवार मे कीलें गाडकर उन पर पटरे रख लेगा। कम-से-कम थालू इतजाम तो हो जायेगा।

यही सोचकर वह उस ढेर के करीब आ गया। ढेर म अधिकतर छोटे-छोटे पटरे ही थे। समूचे पटरे एकाध ही दिखाई दे रहे थे। वह ढेर को एक

पटरे से खखोलने लगा। तभी उसकी नजर ढेर मे से झाकते एक पटरे के टुकडे पर पडी। उस पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ था। उसने झपट-कर उसे उठा लिया। उसपर लिखी इबारत देखकर उसका दिमाग चकराने सा लगा। उसपर एक चालान नम्बर लिखा हुआ था। वही चालान नम्बर, जिसकी पेटिया उससे चोरी चली गयी थी। उसने एक बार फिर उसे गौर करके देखा। शायद उसे ही भ्रम हो रहा हो। पर वह टुकडा उन्ही पटिया का था।

भवावेश मे उसका शरीर कापने सा लगा। उसकी आखो के सामने पाच साल की नौकरी का बाण्ड और रोडवेज का रि-अप्वाइटमेट लेटर घूम गया, जिसकी मियाद गुजरे एक अरसा हो गया था। अनजाने ही पटरे पर उसकी गिरफ्त सख्त होती गयी।

श्राद्ध

हृषीकेश सुलभ

□

सुबह जब मगरू ने मोहना को जोर जबरदस्ती ससुराल जाकर बहू को लिवा लाने के लिए भेजा मौसम ठीक था। मीठी धूप खिली थी। हफ्ता भर पहले वर्षा हुई थी। पर उसके बाद दिन भर धूप बिखरी रहती थी और रात को कलकतिया टिकुली की तरह आकाश में चनरमा चमकता रहता था। मगरू को इस बात का एहसास बिलकुल ही नहीं हुआ था कि मौसम इस तरह अचानक बिगड़ जायेगा। मोहना भी जाना नहीं चाहता था। मगरू जब भी बहू को लाने की बात करता, वह झुंझला उठता 'हमहीं फालतू पड़े हैं का कि बुलाने खातिर दउड़ल जाय। नइहर के गुमान पर इतराईल फिरती थी ठेंगुरा पर चलती थी। बाबू हम तो बुलाने नहीं जायेंगे। जवना पाव से अकेले गयी थीं, वो ही पाव से अकेले काहे नहीं आ जाती?'

मगरू उसे समझाने की कोशिश करता, 'मरद मेहरारू में तो रगड़ा-झगड़ा चलता ही रहता है। अपनी औरत भी कोई छोड़ देता है भला? हितई-नहुनाई की बात है ... सब समझेगा कि लगा-लुच्चा है इसलिए हिया खदेड़ दिया। इसमें इज्जत का नास होगा। इसमें भलमानसियत नहीं है। बेटा, बहुत मान हो चुका ... दु दिन बाद भादो शुरू हो जायगा, फिर बिदाई नहीं होगी'

इसी तरह की लंबी बहस और हील-हुज्जत के बाद मोहना जाने को तयार हुआ था। दो माह पहले मोहना की बहू सास से लड़ झगड़कर मायके भाग गयी थी। ससुराल जाते समय मोहना ने मगरू से रात में खेत की

अगोरवाही करने के लिए कई बार चिरौरी की थी। खेत में मकई की डाठें छाती भर ऊंची उठी खड़ी थीं। मोहना रात भर मचान पर बैठकर रतजगा किया करता था, क्योंकि साड भैंसा का डर हमेशा बना रहता और इस जमाने में आदमी भी साड भैंसों से कम खतरनाक नहीं। कब कौन दुश्मनी निकाल ले कोई नहीं जानता। मोहना ने खून-पसीना बहाकर फसल खड़ी की थी। उसने मगरू से जाते जाते कहा था, "बाबू हो, सिरिफ रात भर मचान पर जगना है। बारह दुपहरिया तक हम आ जावेंगे "

मोहना के जाने के चार पांच घंटा के बाद ही आकाश में भूरे बादल मंडराने लगे थे। भूरे बादल लाल हुए, फिर धीरे धीरे काले हो गये—जामुन की तरह और बूंदा बांदी शुरू हो गयी। पानी कुछ देर तक जोरों से बरसकर खुल जाये तो चैन मिल जाता है, पर लगातार टिपिर टिपिर बरसात और साथ में तेज पुरवा जानलेवा होती है। टाट-माटी के घर-दुआर के ढह धस जाने का भय हमेशा बना रहता है। आदमी अपनी फिकर करे, खेती-गृहस्थी करे, या माल मवेशी के लिए घास भूसा जुटाये! जीना मुहाल हो जाता है। मगरू को अगर बादल का एक टुकड़ा भी भोर में दिख गया होता तो वह मोहना को नहीं भेजता क्योंकि वह जानता था कि अगर भादों में पानी और पुरवा दोनों एक साथ शुरू हो जायें तो हफ्तों नहीं टलते। ऐसे मौसम में मवेशियों के लिए घास भूसा जुटाना और रात भर मचान पर बैठकर खेत की अगोरवाही करना इस बुढापे में मगरू के बस की बात नहीं थी।

सद पुरवा का तेज झोंका आया और मचान पर गुदड़ी में घुकी मारकर सोये बूढ़े मगरू को रीढ़ की हड्डी के भीतर तीर की तरह चुभ गया। उसकी नींद उचट गयी। शरीर को गरमी देने के लिए खैनी रगड़कर उसने होंठों में दाबी और गुदड़ी में दुबककर जाड़ा भगाने का जतन करने लगा। मगरू के मन पर छायी चिंता की परतें घनी होने लगीं—पता नहीं, बुढ़िया झोपड़ी में कैसे होगी, मोहना कैसे पहुंचा होगा और इस हालत में बहू को लेकर कैसे लौटेगा! अगर वह दो चार दिन रुक गया तो खेत की अगोर-वाही कौन करेगा? मगरू इन्हीं सारी चिंताओं के बीच डूबा हुआ था कि

खेत के पूरब कोने से हड़हड़ाहट की आवाज आयी। वह चौंकना होकर उठा। पूरब कोने में किसी मवेशी के होने का आभास उसे मिला। वह मचान से लाठी लेकर उतरा और मुंह से तरह तरह की आवाजें निकालता हुआ पूरब की ओर भागा। मगरू की आवाज सुनते ही अगल बगल के खेतों में खड़े मचानों से आवाज उभरने लगी। मगरू फसल की बधार के बीच सनसनाता हुआ पूरब की ओर भागा जा रहा था।

उस खेत के पूरब तरफ कोई फसल नहीं लगी थी। मेड़ से ठीक सटकर सती माई की डीह थी और डीह के पार पोखर, जिसकी जवानी का वेग सावन भादो में बांधे नहीं बंधता था। जलकुंभी और दियुनी से पूरा पोखर पटा रहता था। डीह और पोखर के बीच में पीपल का एक विशाल पेड़ था। इसी पेड़ के नीचे चैत में सती माई का मेला लगता था। लहलहाती फसलों के दुश्मन सांड़ भैंस यहीं डेरा डाले रहते थे। पेड़ के ऊपर वानर-हनुमान घात लगाये छिपे रहते थे। पोखर के चारों ओर उगी झरबेरी की झाड़ियों के बीच सियार हुआ हुआ करते फिरते थे और सती माई की डीह में मांद बनाकर कटीले साही घुसे रहते थे।

मगरू जब हांफते हुए नजदीक पहुंचा तो उसकी आंखें छितरा गयीं। बबुआन टोली का मरखहवा सांड़ फसल को माथ चर चर मरोड़ रहा था। अपनी आशा के सामने खून पसीने की कमाई को माटी में मिलते देख मगरू का खून खलबला उठा। उसने लाठी घुमाकर सांड़ की पीठ पर जमा दी। चोट खाकर सांड़ पीछे मुड़ा और उसने मगरू को सींग पर उठाकर पटक दिया। भीगी जमीन पर उसके गिरते ही भदाक की आवाज हुई। माटी नम्र होने के कारण उसे खास कोई चोट नहीं लगी। मगरू देह झाड़-कर उठा और लाठी संभालना ही चाह रहा था कि सांड़ ने दूसरी चोट की। उसका सींग अब मगरू के पेट में था। सांड़ के सींग और चेहरे पर मगरू की देह और खेत की भीगी माटी पर गरम गरम लहू फैल गया। सांड़ पीछे मुड़ा और डीह की ओर भागा। दूसरे मचानों पर से आनेवाला शोर धीरे-धीरे कम होता गया। लोगों ने समझा कि मगरू ने सांड़ को खदेड़ दिया है। बुधना ने अपने मचान से एक बार आवाज भी लगायी, "मगरू काका हो !" कोई उत्तर न पाकर उसने समझ लिया, काका को शायद बीड़ी

की तलब लग गयी है और वे सुभगवा के मचान की ओर चले गये हैं।

भोर पहर जब लोग हाथों में लोटा लेकर दिशा मैदान को निकले और कुछ लोग अगोरवाही करके मचानों से लौटे तो उन्हें मगरू की खून में सनी लथपथ लाश दिखी। पहले तो किसी के पल्ले कुछ नहीं पड़ा, लेकिन फिर खेत की माटी में खुरों के निशान और चरी हुई फसल को देख बबुआन टोली के मरखहवा साँड़ के प्रति संदेह पैदा हुआ। साँड़ सती माई की चौर के पास पेट में मुँह छुपाये पड़ा था। उसके माथे पर लहू के छींटों के दाग फैले थे। मक्खियाँ उन दागों पर थोक-की-थोक बैठ रही थीं, उड़ रही थीं।

साँड़ ने जब लोगों को अपनी ओर आते देखा तो फोंफ मारते हुए उठा और झूमते हुए पोखर के किनारे में होता हुआ भाड़ियों में जाकर बैठ गया। लोग वापस लौट गये। साँड़ ने पीपल के तने की छाल को सींग से रात भर रगड़ा था। अपने खुरों से सती माई की चौर की माटी बित्ता भर कोड़ दी थी। बबुआन टोली के मरखहवा साँड़ ने मगरू धानुख के पेट में सींग भोंककर उसकी जान ले ली, यह बात सुनते ही लोगों का रेला बढ़ गया।

लाश को खटिया पर लादकर धानुख टोला वाले ले गये। मोहना को खबर देने के लिए बुधना उसकी ससुराल दौड़ा। मोहना की माँ छाती पर मुक्के मार मारकर चीख रही थी। टोले भर की औरतें सुबक रही थीं और बच्चे सहमे दुबके सब कुछ घूर रहे थे।

टोले के मरद रामबिरिछ काका के लौटने की राह देख रहे थे। रामबिरिछ काका धानुख टोला के सरदार थे, बुजुर्ग थे। मगरू की लाश के पास खड़े होकर वह फूट फूटकर रो रहे थे कि सुभगवा आकर बोला, काका हो भरो बाबू दुआर पर पहुँचे ला कहे हैं, तुरंत। कह रहे थे कि हमसे बिना पूछे कवनो काम नहीं होवेगा।

रामबिरिछ काका ने आँसुओं को गमछे में पोंछ लिया था और बबुआन टोली की ओर चले गये थे। बूँदा-बाँदी बंद हो गयी थी और बरसाती पुरवा ठहर गयी थी पर सूरज अभी बाहर नहीं निकला था। आकाश में बदरी के ऊँचे ऊँचे पहाड़ बने थे, जिनके ऊपर चढ़कर सूरज का उगना असंभव सा

लग रहा था।

चार पाच घटा के बाद बुधना मोहना, उसकी बहू और ससुराल के लोगो को साथ लेकर लौटा। आते ही मोहना की बहू लाश से लिपटकर रोने लगी। औरतो ने उसे खीचकर अलग किया। मोहना का काठ मार गया था। वह लाश के सिरहाने चुपचाप खडा था। रामविरिछ काका भी भरो बाबू के यहा से लौट आय थे। उन्होने कफन के लिए कपडा और अरथी के लिए बासा का इतजाम कर दिया था। आनन फानन मे लोग लाश लेकर मुरदघटिया के लिए चले गये।

भरो बाबू पहले जमीदार थे राजा थे और गाव की जनता उनकी परजा थी। देश मे आदोलन हुआ, सत्याग्रह हुआ। फिरगी लोग लौटकर सात समुदर पार चले गये। आजादी मिलने के पाच छह वर्षो के बाद भरो बाबू बडका खेतिहर बन गय और उनकी परजा मजूर कहलाने लगी। जमीदारी का कागज एस० डी० ओ० के कोर्ट मे जमा करके लौटने के बाद शाम का भरो बाबू न गाव भर के लोगो को बटोरकर कहा था, "भाइ लाग पाच-छह बरिस स अब अपना राज आ गया है—मतलब भारत का राज—और फिरगी लोग अपना देश चला गया। राजिन्दर बाबू राजा हुए ह। अपना जिला के, अपना गांव जगह के आदमी ह। जीरादइ मे पैदा हुए थ। सिवान टीसन से घटे भर का रास्ता है जीरादेई ई सब बात आप भाई लोग का मालूम होगा। ई हम लोगा के लिए गरब की बात है कि अपना गाव-जवार का आदमी समूचा देश का राजा हो गया। अब हम लोगा का काम है कि उनके राज को मजबूत बनायें। त भाई, अभी देश कमजोर है, सब धन फिरगी लोग लूट ले गया है। देश को धन चाहिए, राजिन्दर बाबू का राज चलान खातिर धन चाहिए, सो इस साल वसूल का रेट दुगना होगा। एतना तियाग त हम लोगा को करना ही होगा। ई हम लागा का फरज है "

इसके बाद देश की सरकार को मजबूत करने के लिए, राजिन्दर बाबू राजा के पास धन भेजन का काम गाव के लोगा न शुरू किया था। कई वर्षों तक अनाज की वसूली दुगुनी दर से हुई थी। लोगा न अपनी कमाई से भरो बाबू की बखरिया और डेहरिया भर दी थी। भैरो बाबू भी गाव

जवार म तियागी पुरुष कहलाने लगे थे ।

गाव म चालिस-पचास घर धानुखा के, दस-बीस कहारा और चमारा के, चार-पाच ब्राह्मणा क तथा सात आठ राजपूता के थे। भैरो बाबू दो भाई थे। उनके छोटे भाई का नाम दुरगा बाबू था। जमीदारी म दोना भाइया की आठ आठ आने की हिस्सेदारी थी। इन्ही दोना घरा के इद गिद पूरा गाव चौबीसा घटे नाचा करता था। जब सर्वे का काम शुरू हुआ, तो भैरो बाबू न अधिकाश जमीन अपने और दुरगा बाबू के नाम करा ली। जो जमीन बची, वह अन्य राजपूत परिवारो तथा ब्राह्मणो के हिस्से आयी। बाकी लाग जस पहल थे वैस ही रह गये और आज भी वैस ही हैं। उस समय भी खुरपी हसुआ के बल पर जीते थे, आज भी वसे ही जीते हैं। माघ और भादा महीने मे कई दिन सिर्फ पानी पीकर काटते थे, आज भी वही हाता है।

दुर्गा बाबू का घर-दुआर तो बाल-बच्चो से भरा-पूरा है, पर भैरो बाबू को भगवान् न यही एक कमी दी है। उनके सिर्फ एक ही बेटा है— किरातीसिंह। जब आजादी के लिए देश म क्राति हो रही थी, उन्ही दिना भैरो बाबू के बेटा हुआ था। गाव भर के लोग उसे किरातीसिंह कहने लग। किरातीसिंह की शादी पच्चीस साल की उम्र मे हुई। शादी के पहले चार पाच बरस ता ठीक गुजरे, पर जब उसके बाद भी बहू के पाव भारी नही हुए तो भैरो बाबू को बेचैनी हुई। वश कसे चलगा और इस धन-दौलत को कौन भागगा, यही चिंता उन्ह खाये जा रही थी। किराती की बहू की आखें सावन भादा के आकाश की तरह बरसती रहती थी। किराती की बहू बाझ रह, यह उसकी सास के लिए असहनीय बात थी। पूजा-पाठ और ओझाई-गुनाई के लिए पडित और ओझा दूर-दूर से बुलाये जाते। भैरो बाबू के आगन म हर रोज काइ-न काई अनुष्ठान चलता ही रहता। देवी देवताआ की मनौती मागते मागत किराती की मा थक चुकी थी। एक दिन किसी औरत न साड दगवाकर छोडने की मनौती मानने की राय दी। किराती की मा ने गुहार की 'हे काली मइया, किराती का अगर वश हो गया ता छठियार के दिन साड दगवाकर छोड दूगी "

किराती की बहू सब असलियत जानत हुए भी चुप थी। वह जानती

थी कि इस पूजा पाठ और ओझाई गुनाई से कुछ भी नहीं होने वाला है, क्योंकि किराती ही बाप बनने के लायक नहीं है। धीरे धीरे मास ने तेवर बदलना शुरू कर दिया था। वह किराती की दूसरी शादी की योजना बनाने लगी थी। किराती की बहू जान रही थी कि अगर वह बच्चा नहीं पैदा कर सकी, बाझ रह गयी तो उसे इस घर की ड्योढ़ी से निकाल दिया जायगा और एक विधवा की तरह सारी जिंदगी मायके म काटनी होगी।

सोहरइया कहार भैरो बाबू की बखरी म अनाज रखने निकालने के काम पर स्थायी नौकर था। एक दिन किराती की बहू न उसे धर दबोचा। सोहरइया की जान सासत मे फस गयी। लाख हाथ-पाव जोडन पर भी उसे मुक्ति नही मिली। हा और ना, दोनो म जान का खतरा था। सोहरइया कई दिनो तक जीवन और मौत के बीच लटका रहा था। किराती की बहू के पाव भारी होने के महीने भर बाद ही सोहरइया मर गया था—एक दिन बहू ने सोहरइया को रोटी और साग खाने को दिया था, वह वही खाकर रात मे सोया और फिर कभी नही उठा। किराती की बहू ने इस खतरे को हमेशा के लिए मिटा दिया था।

भैरो बाबू को जिस दिन पोता हुआ पूरे गाव म बधाव बजा था। औरतें गोल बाधकर सोहर गाने आयी थी। तेल-सेनुर बटा था। आचल मे चावल, हल्दी के टुकडे, दूब और दुअन्नी डाल डालकर हर औरत को बबुआइन न बिदा किया था। छठियार के दिन भैरो बाबू ने विधवा सोहरइया बो के दुआर से उसका बछडा खुलवा लिया था—किराती की मा ने साड दगवाकर छोडने की मनौती मानी थी। विधवा सोहरइया बो छाती पीटकर रह गयी थी।

भैरो बाबू के घर म बधाव बज रहा था और सोहरइया बो अपनी झोपडी म सिसकती बिलखती पडी थी। उस दिन भैरो बाबू के यहा सुबह से शाम तक जलसा हुआ था। सुबह सोहरइया बो के बछडे को पूजा गया था। काली स्थान ले जाकर धूप-दीप दिखाया गया, आरती उतारी गयी, माला पहनायी गयी, लोहा गरम करके उसकी पीठ पर त्रिशूल का निशान बनाया गया और तब उसे खुला छोड दिया गया था। चमरटोलीवाला ने

पखावज का नाच बेगारी मे नाचा था। पूजा के बाद ड्योढी पर दो गिरोहो मे लौडा का नाच जमा और रात मे छपरा की शिवगली वाली पतुरिया का नाच हुआ था। गाव जवार के लोग काम म धा छोडकर भरो बाबू के यहा डटे हुए थे। लोगो ने खूब छककर पूरी-बुदिया खायी। सोहर इया का दस साल का बेटा किसुना भी पत्तल मे पूरी-बुदिया लाया था आर अपनी रोती हुई महतारी से खा लेने के लिए आग्रह करता रहा था। सोहरइया वो सिफ रोती रही थी। फिर उसका बटा भी रोते रोत उसकी गोद मे चिपककर सो गया था। बेटा और बछडा, यही दोना उसके पति की निशानी थे।

सोहरइया वो का बछडा उस दिन से गाव म खुला घूमने लगा था। हर रात किसी-न किसी की फसल चर जाता। साड का मारना किसी के बूत की बात नही थी। वह काली की मनौती मानकर छोडा गया था। उस पर हाथ उठाकर कौन पाप का भागी बनता! और फिर भैरो बाबू का भय अलग। धीरे धीरे साड का आतक पूरे गाव म छाने लगा था। चार वर्षों स इस साड ने गाव म आफत मचा रखी थी। खवर म घुस जाता तो बीघे भर की फसल चर जाता। पिछले साल इसी साड के चलते बुधना के पूरे परिवार की भूखा मरने की हालत हो गयी थी। बुधना ने दुरगा बाबू का बीघे भर खेत बटाई पर आबाद किया था। अगहनी धान की फसल स खेत के चारो कोने बराबर हो उठे थे। ब्लाक स बीज आर खाद कज पर लकर बुधना ने खेती की थी। धान के गोफा से बालिया अभी फूट ही रही थी कि आधा खेत सांड चर गया। फसल कटने के बाद दुरगा बाबू न सारे बोझे खलिहान से उठवा लिय थे। बुधना ने अपना कसूर पूछा—तो गालिया और जूते मिले। दुरगा बाबू बाले थे, "आधा खेत साड चर गया—त हम का करें? रात भर मेहरी साथे रास लीला रचाओग त साड ताहर बाप के डर स फसल थोडे छोड देगा! अब जाओ टगरी पसार कर सूतो! हम काहे घाटा सह? ताहरे हिस्से का साड चर गया अऊर बाकी बचा सो हमारा!"

बुधना कलेजे पर पत्थर रखकर वापस लौट आया था।

बुधना की तरह न जाने कितने घरा का दाना साड के पेट म हर वर्ष

चला जाता, पर कोई मुह नही खोल सकता था। भैरो बाबू या उनके पटटीदारो की अधिकतर जमीन म य लोग ही चौथी की बटाईदारी पर फसल उपजाते थे और साड का नुकसान इन्हो लोगो के हिस्स जाता था। उधर अगर भैरो बाबू जैसे खेतिहर के सौ-सौ बीघे म स दो चार बीघा हर साल साड चर भी जाता तो उन्हें कोई खास फक नही पडता था।

गाव से लगभग डेढ कोस दूर, चवर पार करने के बाद जहा थोहटा की धारा ताल मे गिरने के लिए मुडती है, वही धानुक टोला वालो का अतिम सस्कार होता है। मसान को फूक तापकर वहा से लौटते हुए रात हो गयी। जैसे ही लोग मुरदघटिया से लौटे, मोहना की माई और बहू बिलखने लगी। कुछ देर तक मोहना की झोपडी के सामने भीड लगी रही फिर एक एक करके लोग अपने अपने घर की ओर लौटने लगे। मोहना के पास रामबिरिछ काका बैठे थे। वह दुनियादारी की बातें समझा रहे थे। सब कुछ भूलकर जीने का सदेश दे रहे थे। भैरो बाबू ने बैसे हाट से कफन के लिए पस दे दिये थे और अपनी बसवारी से अरथी के लिए बास कटवाने को कह दिया था। उन्होने इस घटना की सूचना थाना-पुलिस मे न देने की सख्त हिदायत दी थी इसीलिए रामबिरिछ काका ने थाना पुलिस की बात करने वाले छोकरो को डाट दिया था। थाना-पुलिस करती भी क्या? भैरो बाबू कहते, वही न! रामबिरिछ काका की आखें भर आयी थी और जुबान तिलमिला रही थी। मोहना आखें मूदे सब कुछ सुनता रहा था। उसकी बहू और माई की रोने की आवाजें थमने लगी थी। रामबिरिछ काका कुछ देर और बठे रहन के बाद बोले, "मोहना, अईसा टेम म आदमी का मगज खराब हो जाता है। बिपत पडने पर भला-बुरा नही सूझता, आदमी गलती कर बैठता है। बेटा, गलत काम मत करना! कल भोर मे जाकर भैरो बाबू से भेंट करना। सौ-पचास मे इनकार नही करेंगे। सराध का रसम रिवाज तो करना ही होगा"

रामबिरिछ काका अपनी झोपडी की ओर चले गये। मोहना का झबरा पिल्ला उसकी गोद म आकर चिपक गया। मोहना ने एक गहरी सास भरी और आखें मूद ली। उसकी उगलिया अनायास ही झबरा के बालो मे

बीच घूमने लगी। झबरा अपने जबड़े को मोहना की देह में रगड़ते हुए कूँ कूँ करने लगा। अचानक झबरा उछला और झोपड़ी से बाहर जाकर अंधेरे में गुम हो गया। मोहना के उठकर बैठने तक झबरा बड़ी तेजी से दुम हिलाता हुआ लौट आया। उसके पीछे-पीछे बुधना और सुभगवा के साथ धानुक टोली के आठ-दस जवान हाथों में भाला बरछी लिये आ रहे थे। इन लोगों के साथ साथ सोहरइया का किशोर उम्र का बेटा किसुना भी था, जिसकी मूँछें अभी सावली भी नहीं हुई थीं। मोहना की थकान-टूटन एक एक न जाने कहाँ गायब हो गयी। वह झटके से उठा और कोने में रखा भाला उठाकर बाहर निकल आया।

आकाश में बादल कल रात की तरह फिर छाने लगे थे। पुरवा सरसराने लगी थी। मोहना, बुधना, सुभगवा, किसुना और उनके साथी हाथों में भाला लिये सती माई की डीह की ओर चले जा रहे थे—सरपट, तेज कदमों से।

दूसरे दिन गाँव में फिर एक नया हंगामा उठ खड़ा हुआ। बबुआन टोली का मरखहवा साँड़ सती माई की डीह पर टाँगें छितराए मरा पड़ा था। उसके शरीर पर भाले के दस बारह घाव थे। दिन के दस बजते-बजते पुलिस की दो लारियाँ गाँव में आ पहुँचीं। धानुक टोला में उथल-पुथल मच गयी। झोपड़ियों के टाट बन्द हो गये। मोहना, बुधना, सुभगवा, किसुना और टोले के कई जवान गिरफ्तार हो गये। कुछ घर-दुआर छोड़कर फरार भी हो गये। पुलिस ने धानुक टोला को रौंद डाला। बूढ़ों औरतों और बच्चों के गाल तमाचों से लाल हो गये, बेंतों की मार से चूतड़ की चमड़ी उधड़ गयी और बेपरदा गालियों से कलेजा छिल गया। पुलिस ने रामबिरिछ काका को भी पीटा। गाँव जवार में शोर मच गया। पुलिस वाले गिरफ्तार जवानों को एक लारी में ठूसकर थाने ले गये। दूसरी लारी भैरो बाबू की ड्योढ़ी के सामने लगी थी। दारोगाजी जलपान कर रहे थे।

भैरो बाबू के पुरोहित मथुरा दूबे दूसरे गाँव में किसी जजिमान के यहाँ पुरोहिताई में गये थे। गाँव में आते ही उन्हें खबर मिली और वह भाग-

भागे भैरो बाबू के यहा पहुचे। दारोगाजी को सलाम ठोका और फिर बहुत चिंतित स्वर मे उन्होने भरो बाबू से किराती के बेटे के भविष्य के विषय मे अपशकुन की आशका प्रकट की, क्योंकि साड उसी के बेटे की मनौती मानकर छोडा गया था। दोना काना पर हाथ रखते हुए उन्होने दारोगाजी से कहा, "राम राम! पापी मोहना को कवनो कठोर सजा दिलवाइय। धानुख टोला का ई छोकरा ससुरा राछस है राछस! भला देवी दवना की मनौती जानवर पर भी कोई हाथ उठाता है? गोसाईंजी भला कह गय हैं कि ढोल, गवार, शूद्र, पशु, नारी, ई सब ताडन के अधिकारी! निस्पीटर साहब, ई सबको फासी चढवा देने मे कवनो पाप नही है। आप हिंदू हैं, उसम भी राजपूत राजपूत का तो काम है, जात धरम की रखवाली करना!"

फिर भैरो बाबू की ओर मुखातिब होकर बोले बाबू साहेब, इसका पराछित करना होगा। ई कवनो मामूली पाप नही है। देवी देवता का बात है। इसका फल तो पूरे वश पर पडेगा, इसलिए पराछित बहुत जरूरी है। साड का सराध करना होगा। कम से-कम सालह पडित को भोजन कराना होगा, दान करना होगा, तब छुटकारा मिलेगा।"

दारोगाजी ने हामी भरी। वह जलपान पूरा कर चुके थे। भैरो बाबू उठकर अदर गये और नोटा के एक बडल के साथ वापस लौटे। बडल को दारोगाजी के हाथो मे थमाते हुए बोले, "बडे साहब खातिर है। आपका हिस्सा शाम को थाने मे आकर सौंप दूगा। बाकिर ई छाकडवन का मरम्मत पूरा होना चाहिए ताकि करेजा का हड्डी चटक जाय फिर कहियो छाती नही तान सकें अब आपसे का कहना! घरेनू आदमी हैं। हा, सराध म आना मत भूलियगा। जब सराध होगा, तो खाली सोलह ब्राह्मण खिलाकर कसे काम चलेगा। हित-नाता गाव-जवार सबको पूछना ही होगा! सराध के दिन के खातिर आपको आज ही नवता दे रहे हैं।"

और जब तेरह दिना के बाद साड का श्राद्ध हुआ, तो माहना, बुधना, सुभगवा, किसुना और उनके साथी जेल मे थे। धम के नाम पर कही बलवा न हो जाये, इस डर से अदालत ने जमानत की अर्जी नामजूर कर दी थी। पूर गाव जवार म शोर था कि भरो बाबू अपने पाते की मनौती रखें गय

साहब का श्राद्ध बड़ी धूम धाम से कर रहे हैं। भैरो बाबू के सगे सम्बन्धियों और परिचितों से उनका घर भरा हुआ था। उन्होंने अपने गाँव के हर आदमी को भोज में खाने के लिए आमंत्रित किया था। गाँव के और लोग तो खाने गये पर धानुक टोला वाले कहारों और चमारों के घर से एक आदमी भी उनके दरवाजे पर खाने के लिए नहीं गया। उधर भोज हो रहा था और इधर धानुक टोला में सभा हो रही थी। रामबिरिछ काका सभा में उपस्थित हर एक आदमी को कसम दिला रहे थे, "अब इस जिन्दगी में चाहे जो भोगना देखना पड़े, पर मरते दम तक लड़ा जायगा टोला के जवानों को छुड़वाया जायगा कल से मजूरी का रेट दुगुना बटाईदारी चौथाई की नहीं आधा काश्तकार का और आधा मजूर का और "

आठवें दशक की हिन्दी कहानी

गिरीशचंद्र श्रीवास्तव

□

यह उल्लेखनीय है कि समकालीन कथाकारों ने अपने चारों तरफ फैले व्यापक सामाजिक परिवेश से जुड़कर अपनी सार्थकता प्रमाणित की, लेकिन यह कहना ही होगा कि रचनाकार की यह सार्थकता अधूरी है। किसी भी रचना की सार्थकता केवल इसमें नहीं है कि वह यथार्थ के बदलते परिप्रेक्ष्य को आत्मसात करे। उसकी सार्थकता इसमें भी है कि वह शोषण पर आधारित हमारी सामाजिक संरचना को बदलकर एक शोषणमुक्त समाज के निर्माण में सहायक हो। आपातकाल के बाद अनेक कहानियां विशेष तौर से पहल, युग-परिबोध, निष्कर्ष, नई कहानी, उत्तरार्द्ध, उत्तरगाथा, संभावना, परिवेश, प्रतिमान, भंगिमा, भूमिका, कथानक, ऋतुचक्र, मंच (सं० मोहदत्त), मंच (सं० राकेश वत्स) जैसी लघुपत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आयीं जिन्हें पढ़ने से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि रचनाकार नये समाज की रचना के लिए साहित्य को एक कारगर हथियार के रूप में प्रयोग करने के अपने गंभीर दायित्व के प्रति सचेष्ट हो रहा है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध रचनाकार से अपेक्षा की जाती है कि वह हमारे समाज के विशाल जन समुदाय से जुड़े, उसके दुख-दर्द, आशा—आकांक्षा को अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित करे। साथ ही उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि उस पूंजीवादी शोषण को वह बेनकाब करे, जिसने हमारे देश में एक गंभीर आर्थिक संकट उत्पन्न कर दिया है और जिसने मेहनतकश मजदूर किसान को गरीबी, भुखमरी और बेराजगारी की आग में झोंक दिया है। निश्चय ही यह जोखिम भरा दायित्व है। हम मा

विषय है कि सामाजिक बदलाव के प्रति प्रतिबद्ध रचनाकार इस स्वच्छा ■ वरण कर रहे हैं। यह कहना कि साहित्य से सामाजिक बदलाव की आशा करना व्यर्थ है, एक पूजीवादी साजिश है। वस्तुत साहित्य का जीवन और समाज से अलग करने की साजिश बराबर की जाती रही है। आज क रचनाकार को इस साजिश के प्रति सतक रहना है। यह सही है कि साहित्य स किसी बहुत बडे विप्लव की आशा नही की जा सकती, लेकिन विप्लव के लिए यह खाद का काम अवश्य करता है।

यह कहना अप्रासगिक नही होगा कि आपातकाल के पहले भी रचनाकारो ने लेखन के प्रति अपन गभीर दायित्व का परिचय दिया था। उन्होन भी जनसमुदाय की तकलीफा तथा उनसे उबरने की उनकी अदम्य आकाक्षाओ को अपनी रचनाओ म प्रतिध्वनित किया था, परन्तु साथ ही यह भी कहना होगा कि यथाथ की उनकी समझ अधकचरी और विकृत थी, जिससे उनकी रचनाए प्रभावहीन और 'फेक' लगने लगी। मूल बात यह है कि रचना को विश्वसनीय होना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि रचना यथाथ जीवन के विकासशील नियमो तथा उसके ठास तथ्यो पर आधारित हो। यह तभी सभव है जब रचनाकार के पास जीवन की गहरी समझ हो। कहना न होगा कि आपातकाल के बाद जो नय रचनाकार उभरे हैं, उनके पास जीवन की गहरी समझ तथा वैज्ञानिक दृष्टि है और उन्हे समाज के अतर्विरोधो की सही पहचान है।

'जन्म (मदनमोहन श्रीवास्तव) का नायक नित्यानद पुलिसवाला के कुचक्रो से अवगत है। इसीलिए जब कोतवाल भय दिखाकर उसके लडके से उसके साथियो के नाम उगलवाना चाहता है ता वह बडी निर्भीकता से उस कुछ भी बतलाने के लिए मना करता है।

जिस व्यवस्था म हम सास ले रहे हैं, वह पूजीवादी शोषण पर आधारित है। हमारी पुलिस इस शोषण का भ्रष्टतम साधन है। पुलिस का आतक और अत्याचार आय दिन की घटनाए हैं, जिनसे जनता त्रस्त रहती है। य भ्रष्ट पुलिसवाले एक तरफ ता सही अपराधिया को छोडकर अपराध वत्ति को बढावा देते हैं, दूसरी तरफ भोली भाली, बेगुनाह जनता पर जुम के झूठे इल्जाम लगाकर तग करत हैं। *वगरह वगरह' (ओम गोस्वामी),*

'दूसरा भगतसिंह' (राजकुमार गौतम) विभेद (हरिहर सिंह), 'इज्जतदार' (विनोद शाही) आदि कहानियां पुलिस के अत्याचार और शोषण की सच्ची तस्वीर पेश करती हैं। इस आचरण को बेहतर तरीके से अपनी कहानी 'छोटे गांधी' में कुमार संभव ने अभिव्यक्ति दी है।

इस पूंजीवादी व्यवस्था में शोषण का दूसरा साधन अफसरशाही है। इन अफसरों को विशेष सुविधाएं और नाजायज ढंग से पैसे कमाने की खुली छूट देकर इन्हीं के माध्यम से गरीब एवं निरीह जनता का शोषण किया जाता है। कहना न होगा कि अफसरशाही हमारे सामाजिक विकास के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के मार्ग में सर्वाधिक बाधक तत्त्व है। अफसर चाहे कितना भी भ्रष्ट क्यों न हो, हमारे समाज में इसका रुतबा बरकरार है। यह आश्चर्य की बात है कि अफसरशाही के रूप में हमारी सामंती-साम्राज्यवादी मानसिकता अभी भी विद्यमान है। अतः यह स्वाभाविक है कि एक सजग रचनाकार की हैसियत से आज का कहानीकार हमारी सामाजिक प्रगति में बाधक तत्त्व भ्रष्ट अफसरशाही का बेनकाब करे। 'स्थिति' (कुमार संभव) में अफसरशाही के काले कारनामों को लेखक ने बड़ी कलात्मकता से उद्घाटित किया है। 'विदाई समारोह' (स्वयं प्रकाश) में भी इस भ्रष्ट अफसरशाही के दबदबे की प्रामाणिक तस्वीर मिलती है।

आपातकाल के बाद सत्ता को हथियाने की राजनेताओं की घुड़दौड़ ने उनके वैचारिक दिवालियेपन को उजागर कर दिया है। देश के कर्णधार कहे जाने वाले इन राजनेताओं की कुर्सीवादी नीतिपरक चालाकियों की कलई खुलने लगी है। तुर्रा तो यह है कि जिस जनसमुदाय के वोटों के बल पर ये राजनेता सत्ता में आते हैं उसकी गरीबी दूर करने की बजाय उलटे वे पुलिस अफसर की मिली-जुली साजिश से उसका शोषण करते हैं। दूसरे शब्दों में उनका 'गरीबी हटाओ' का नारा एक धोखा बनकर रह गया है। और तो और वे निरीह, भोली-भाली जनता को यह घुट्टी भी पिलाते हैं कि "हिंदोस्तान में कहीं कोई गरीब नहीं। गरीबी लोगों के मन में है।" ('वगैरह-वगैरह', ओम गोस्वामी) सत्ता में हो अथवा सत्ता के बाहर, अगर इन राजनेताओं के छल छद्म को देखना हो तो कहीं और जाने की जरूरत

नहीं वे हर कहीं मिल जायेंगे। अपने निहित स्वार्थों के लिए इन्होंने संविधान, जनतंत्र तथा कानून का मखौल उड़ाया है। 'विस्फोट' (विजेंद्र अनिल) का रमुआ यह जानता है कि 'इस मुल्क में गरीब और कमजोर आदमी नहीं रह सकता।' करिश्मा (नीरज सिंह) में भी नेताओं के तिकड़मी चरित्र को लेखक ने बड़े निकट से देखा है। यह कहने में किंचित भी अतिशयोक्ति नहीं है कि हमारे देश में सबसे ज्यादा चारित्रिक पतन इन राजनेताओं का हुआ है। यही वजह है कि इस देश की राजनीति में सर्वाधिक गिरावट आयी है जिसका उद्देश्य मानव हित न होकर सत्ताहरण के लिए तिकड़म करना रह गया है। अतः कहना न होगा कि राजनीति की इस गिरावट का शिकार निरीह और विपन्न जनसमुदाय है। राजनीति के राक्षस उसे निगलने के लिए हर क्षण चतुर्दिक मुंह बाये खड़े हैं। राजनीति के इस जन विरोधी चरित्र की सही पहचान आज की अधिकांश कहानियां प्रस्तुत करती हैं। रचनाकार के लिए राजनीति की ओर उन्मुख होना इसलिए स्वाभाविक है क्योंकि राजनीति हमारे संपूर्ण सामाजिक जीवन पर हावी है। अतः एक सजग लेखक के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह अपने युग के सर्वव्यापी विषय राजनीति से अपने को संबद्ध करे, लेकिन इस राजनीतिक संबद्धता के मूल में जनहित की उसकी उद्दाम कामना निहित है। लेखक की राजनीति भी यही है। जिन नये कहानीकारों में राजनीतिक संबद्धता पायी गयी है उनमें प्रमुख हैं स्वयं प्रकाश, विजयकांत विजेंद्र अनिल, सुरेंद्र कुमार कुमारसंभव, सच्चिदानंद धूमकेतु रमेश बतरा, नीरज सिंह, बलराम राजकुमार गौतम तरसेम गुजराल मदन मोहन श्रीवास्तव सुरेंद्र मनन नमिता सिंह नवेंदु अवधेश श्रीवास्तव, अखिलेश तथा श्रीकांत आदि।

लेखक की राजनीति उसे विवश करती है कि वह दलित, पीड़ित जनसमुदाय में राजनीतिक चेतना जगाये ताकि वे अपनी गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी के जिम्मेदार अपने वर्ग शत्रुओं की सही सही पहचान सकें। यही कारण है कि आज के अधिकांश कथाकारों ने मेहनतकश किसान मजदूरों के दुख दर्द को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। 'आज' (विजेंद्र अनिल) में लेखक ने गांवों की ज्वलन्त समस्या बंधुआ मजदूरी को उठाया

है। जितेंद्र अनिल की ही एक अन्य कहानी 'मान मवेशी' है जो गांव की साधन-हीना, विपन्न फुलेसरी के दुख-दर्द के कारणों को खानती है। इसी प्रकार उग्र वेद (मिथिलेश्वर), दो बीघा जमीन (मोहरसिंह यादव), 'छलांग (मदनमोहन श्रीवास्तव) 'साबुन' (रामदेव शुक्ल) शिक्षावाल' (बलराम), 'चक्रवर्ती सम्राट' (कमार मभव), 'अकालदंड' (शिवमूर्ति), एक न एक दिन (नवेंदु), परोट' (नरेंद्र निर्मोही), 'होरी टाला' (सुरेंद्र सुकुमार) टूटता हुआ भय (बादशाहहुसेन रिजवी) इत्यादि सशक्त कहानियां इस दौर म लिखी गयी जिनमे गावा की बदली हुई मानसिकता, तेनिहर मजदूर किसानो की तकलीफ इनका शोषण करने वाले भूपतियो, महाजनो सरपचा आदि का चित्रित किया गया है। इन कहानियां को पढने म गावा म मजदूर किसान के वास्तविक श्रम की पहचान हो जाती है, जिसस उन्हे नारकीय जीवन जीने के लिए विवश किया गया है।

मजदूरा की एक बहुत बडी सख्या शहरा की मिल फैक्टरियो म काम करती है। मिला के मालिक अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की तिकडम मे इन साधनहीन मजदूरा का मनमाना शोषण करते हैं। यही वजह है कि आठवें दशक के उत्तरार्द्ध मे पजीपतिया की पूजी मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। मिल मालिका के शोषण पर आधारित कई कहानिया लिखी गयी। सूहे की करामात (सुनील कौशिश) मे मिल मालिका की धाधली 'पहली हार' (विजयकान्त) म प्रेस कर्मचारियो का शोषण के खिलाफ सगठित अभियान तथा इस अभियान को कुचलने के लिए प्रेस मालिका की साजिश का प्रतिबिम्बित किया गया है। बाहर आये लोग (तरसेम गुजराल) म भी प्रेस कर्मचारियो के शोषण की ज्वलत समस्या को उठाया गया है। इसी प्रकार राजकुमार गौतम नमिता सिंह अवधेश श्रीवास्तव इत्यादि कथाकारो न मिल मालिका तथा मजदूरा के बीच टकराहट की स्थिति की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति दी है। मजदूरा को काफी सख्या फैक्टरियो म काम करती ह और जिन्ह अपने वगशत्रु की सही पहचान भी है। इसीलिए अपने हक के लिए मिल मालिका के खिलाफ एकजुट होकर सघर्ष करने म उन्ह किसान मजदूरा की तुलना म अधिक सुविधा भी है।

लेकिन इस पूजीवादी व्यवस्था म निरतर पिटते रहने के बावजूद

आदमी ने टूटना नहीं सीखा। 'आदमी नहीं टूटता' (अखिलेश) में जहीर मियां टूट चुके हैं फिर भी उनका हौसला बुलंद है। 'एक न एक दिन' (नवेंदु) का 'छिमना' यह जानता है कि "इन जालिमों के खिलाफ एक न एक दिन हथियार अपने हाथ में उठाना ही पड़ेगा।" 'मुर्दा चेहरा के लिए' (अब्दुल बिस्मिल्लाह) का बच्चू छोटे साहब के धमकाने के बावजूद 'कालू' का साथ देने का निर्णय लेता है क्योंकि वह जानता है कि 'कालू' उन जैसे तमाम मजदूरों के हक के लिए लड़ रहा है। 'विस्फोट' (विजेंद्र अनिल) में गांव के सभी हरिजन सभी मजदूर उपाध्याय के खिलाफ एकजुट हो जाते हैं क्योंकि उनकी समझ में आ जाता है कि हमारी तकलीफें तब तक कम नहीं होंगी जब तक गांव के सभी मजदूर एक नहीं हो जाते। जब तक हम तैयार नहीं, तब तक उपाध्याय हमारा खेत जोतेगा। हम चाहकर भी उसे नहीं रोक सकते।

कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी खस्ता हालत में तंग यह विपन्न जनसमुदाय अब चेत रहा है, जाग्रत हो रहा है, क्योंकि अपने वर्गशत्रु को वह अब पहचानने लगा है। अब वह अपनी गरीबी और पिछड़ेपन के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करने के लिए सक्रिय भी हो रहा है। यह द्रष्टव्य है कि आठवें दशक के उत्तरार्द्ध में जनसमुदाय में संघर्षशील चेतना का जो अभ्युदय हुआ है वह उनकी इस सक्रियता की स्वाभाविक चरम परिणति है। साथ ही यह भी देखना होगा कि इस संघर्षशील जनचेतना को कुचलने की पूंजीवादी साजिशें भी की जा रही हैं, क्योंकि इसके अभ्युदय से पूंजीवादी व्यवस्था के अस्तित्व के लिए खतरा है। यह संतोष का विषय है कि एक संवेदनशील बैरोमीटर की तरह आज के कथा साहित्य ने इस संघर्षशील जनचेतना को आत्मसात कर इसे सशक्त सर्जनात्मक अभिव्यक्ति दी है। यह संघर्षशील जनसमुदाय अपनी दयनीय परिस्थितियों को परिवर्तित करने के लिए इतना बेचैन हो उठा है कि वह अब आक्रामक रुख भी अपनाने लगा है। इधर की कहानियों से जनसमुदाय का जो आक्रामक तेवर देखने को मिला है, वह इसी यथार्थ का प्रतिबिंबन है और जिससे यथार्थ का सर्वथा नया और अछूता आयाम उद्घाटित हुआ है। 'बांके मिला' (सुरेंद्र सुकुमार) का बधु अंत में भ्रष्ट प्रकाशक की हत्या कर

डालना है। 'जंगलदंड' (शिवमूर्ति) में हरिजन बस्ती की सुरजी अपनी अस्मत की रक्षा के लिए भ्रष्ट 'सिक्रेटरी बाबू' का अग ही काट लेती है। 'पहली जीत' (विकेश निझावन) में चंदन की लड़ाई में अगल बगल के नौकर भी उसके साथ हो जाते हैं। चंदन बेधड़क अपने मालिक पर चोट करता है "जिस घर में अपनी सारी जवानी निछावर कर दी वह हमसे पूछ रहे हैं—हम इस घर के क्या हैं?" 'दारा' (रामकुमार त्रिपाठी) की 'मिसज जैदी' अपने नपुंसक पति पर आक्रामक हो उठती हैं "उल्लू की तरह मुंह क्या लटकाये हो? बात तो समझो वह आदमी नहीं, कुत्ता था, लेकिन तुमसे समझदार—किसी ट्रक पर झपट पड़ा होगा और दब गया।" 'छोटे गांधी' (कुमार संभव) का रमजान रिक्शा चालक अदालत में जज के सामने कह देता है "मुझे आपका कानून कबूल नहीं है।" इसी प्रकार 'निर्णय' (मातादीन खरवार,) 'उसकी कमाई' (प्रचंड) 'हक के लिए' (श्रीकांत), 'चक्रवर्ती सम्राट' (कुमार संभव) 'दूसरा भगतसिंह' (राजकुमार गौतम) आदि कहानियों में आक्रामक तेवर की अभिव्यक्ति हुई है।

यहां ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि इन कहानियों में जन समुदाय की संघर्षशील चेतना तथा उसके आक्रामक तेवर की अभिव्यक्ति कहीं से भी आरोपित नहीं लगती, बल्कि ये परिस्थितियों के घात प्रतिघात से स्वाभाविक रूप से उपजती हैं। इसलिए अधिक विश्वसनीय हैं और हमें प्रभावित भी करती हैं। यह तथ्य इस बात का द्योतक है कि ये कहानीकार मात्र अपने उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए ही आकुल नहीं हैं, बल्कि अपने उद्देश्य के सशक्त सम्प्रेषण के लिए प्रयत्नशील भी हैं। यही कारण है कि वे अपनी कहानी के 'फार्म' के प्रति उतने ही सजग हैं। वे यह भली भांति जानते हैं कि बिना अनुकूल 'फार्म' के उनका उद्देश्य अप्रभावी होकर नारा या प्रचार बनकर रह जायगा। आठवें दशक के पहले जनवादी तेवर की जो अधिकांश कहानियां प्रकाश में आयीं वे अपने कमजोर 'फार्म' के कारण प्रचारात्मक हो गयीं। हमें यह बात समझनी चाहिए कि साहित्य प्रचार का कोई मंच नहीं, बल्कि सर्जनशील अभिव्यक्ति का कलात्मक माध्यम है। आज का कथाकार यह भली भांति समझता है। वह यह जानता है कि उसका उद्देश्य तभी प्रभावोत्पादक होगा, जब वह कथात्मकता से

अभिव्यक्त हो परंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह 'फार्म' के प्रति आग्रही है बल्कि अपने उद्देश्य की प्रभावशाली अभिव्यक्ति के लिए वह उपयुक्त नये-नये फार्म' का अन्वेषण करता चलता है। 'वाके विला' (सुरेन्द्र सुकुमार) का आक्रामक तेवर सशक्त 'फार्म के कारण ही प्रभाव छोड़ता है। जंगली जुगराफिया (रमेश बतरा), कुचक्र (अखिलेश) 'युगे युग (कुमार-संभव), 'दूसरा महाभारत (मिथिलेश्वर) जैसी कहानियां उपयुक्त फार्म' के कारण ही अपेक्षित प्रभाव छोड़ती है, अन्यथा इनका उद्देश्य निष्प्राण होकर आरोपित सा लगने लगता। कहने का तात्पर्य यह है कि ये कथाकार 'फार्म के प्रति उतने ही सजग है, जितना कां टेंट के प्रति।

साहित्य का मूल उद्देश्य जनहित में निहित है। इसी जनहित को दृष्टि में रखकर इन कथाकारों ने यथार्थ को ऐतिहासिक विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में, उसके अंतर्विरोधी तत्त्वों के साथ पूरी समग्रता में, जीवन के समानांतर चलकर नहीं बल्कि जीवन में सम्मिलित होकर देखने की कोशिश की है। इसलिए इन कहानियों का यथार्थ अधिक विश्वसनीय एवं प्रभावशाली है परंतु यह कहना ही होगा कि इन कथाकारों की सबसे बड़ी उपलब्धि इसमें है कि उन्होंने समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए आत्मक संघर्षशील जन चेतना के आक्रामक तेवर को आत्मसात किया है। यथार्थ के इस नये आयाम का अन्वेषण अपने समय का एक ऐसा प्रामाणिक दस्तावेज है जो भावी पीढ़ियों को अनुप्राणित करने के लिए अक्षुण्ण रहेगा।

हिन्दी कहानी का आठवा दशक

विनय दास



आठवें दशक की कहानियो की प्रवत्तिया का मूल्याकन करते समय यह बता देना आवश्यक समझता हू कि यहा मेरा अभिप्राय किसी खास गुट के कथा-कारो की रचनाओ या इस दशक म जिन्होने एक खास तरह स अपनी छवि बना ली है, मात्र उन्ही की रचनाओ से नही है बल्कि उन रचनाकारो की रचनाओ से भी है, जो किसी भी आयु वग के है किन्तु इस दशक की कथा प्रवत्तिया के अनुरूप उनकी रचनाओ का आचरण रहा है, और एक विशेष समझ के अनुसार उन्होने कथा प्रवत्तिया के विकास का माग प्रशस्त किया है।

पहली बात यह है कि हमारे मूल्याकन का यह प्रतिमान पूणतया भ्रामक है कि साहित्य की नयी प्रवृत्तिया के आकलन के लिए दस वष की अवधि की लक्ष्मण रेखा पर्याप्त है। क्या हम लाग भूल रहे ह कि वाल्मीकि जैसा कविरवहीन हृदयवाला व्यक्ति एक ही पल की घटना से द्रवित हो, विराट कवि हृदयत्व से युक्त हो ससार के कवियो का सिरमार बन गया ? बाणभट्ट की कादबरी गद्य की कसौटी कितनी अवधि म बनी ? क्या वाल्मीकि ने एक दशक मे 'रामायण' की रचना की ? क्या बाणभट्ट की कादबरी या हषचरित मात्र दस वष की अवधि म रची गयी ? इसलिए हम निर्विवाद रूप से यह सकते ह कि कोई भी कृति किसी समय जन्म लेकर उस दशक की प्रवत्तियो की नियामक बन सकती है और यह भी सभव है कि वातावरण आदि के रहते हुए भी कोई दशक नयी साहित्यिक प्रवत्तिया से बिलकुल विहित हो, क्योकि साहित्य कोई मशीन नही है और न हो

कम्प्यूटर जो कि बिना श्रम किये बटन दबाते ही एक जैसी रचना सामग्री उगलने लगे बल्कि यह एक शुद्ध सात्त्विक रूप से मानव मन मस्तिष्क पर आधारित क्रिया है। इसलिए साहित्य में अचानक या किसी घटना के घटने की तरह से कुछ नहीं होता है। जो कुछ होता है धीरे धीरे विकसित होता है एक कलिका से पुष्प बनने की अवस्था सा।

आठवें दशक की रचनात्मक प्रवृत्ति अधिकांशतः अहिंसात्मक साधना के विपरीत हिंसात्मक रूपों की ओर बढ़ती गयी है। उसकी मूल चेतना में शांति की बजाय उग्रता सहिष्णुता की जगह विरोधात्मकता का गुण क्रमशः प्रमुखता पाता गया है। उत्तरोत्तर ये बातें इस हद तक बढ़ती गयी हैं कि कहानियों में बड़बोलापन तथा वाचालता अतिरिक्त रूप से स्थान पाती गयी है। कहना न होगा कि इस बीच व्यक्ति की मानसिक सोच और चरित्र में भी किसी सीमा तक इन गुणों का सन्निवेश हुआ है और कहानी रचने वाले कहानीकारों ने अपनी आत्मा की आवाज के रूप में पहचाना है। उसे एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में महसूसा है। इसलिए कहानियों में भावप्रवणता की जगह, बौद्धिक-सामाजिक-आर्थिक आग्रह मर्मस्पर्शिता की जगह व्यक्ति की मानसिक चेतना में विचारोत्तेजनागत उथल पुथल उत्पन्न करना रहा है। एक तरह से व्यक्ति को जागरूक और अपने चतुर्दिक चौकसी बरतते हुए इंसान के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है। यह इंसान अपने परिवेश के प्रति खासा आलोचनात्मक रुख अपनाए हुए है। कहना न होगा कि इस प्रकार के आदमी की तस्वीर हम नई कहानी तथा अकहानी के दौर में नहीं प्राप्त होती है। यह उन दशकों से यहां भिन्न है, लेकिन ऐसी प्रवृत्तियों के विकास और प्रस्थान बिंदु के रूप में ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह दूधनाथ सिंह और गिरिराज किशोर की उत्तरवर्ती कहानियों को रेखांकित कर सकते हैं जिन्होंने अकहानी की कुप्रवतिमार्गी पथ को त्यागकर अपनी उत्तरवर्ती कहानियों में समाज की इस बदलती चेतना को रेखांकन का प्रयास किया है। कहना न होगा कि इस दशक तक पहुंचते-पहुंचते गांधी चरित्र और विचारधारा के प्रति जो आकर्षण स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों बाद तक था, वह शनैः शनैः धूमिल होता गया। उसके स्थान पर इनके प्रति रचनाकारों का दृष्टिकोण आलोचनात्मक होता

गया। विश्वास संशय में परिणत हो गया। गांधी नीति और दर्शन से समाज में कोई बदलाव आता न देखकर कतिपय लेखकों ने इसे अपनी द्वि अन्वेषणी प्रवृत्ति से निकम्मा तक साबित कर दिया। इसकी वजह थी कि यह दर्शन भी कुछ कांग्रेसियों के हाथ में पड़कर सत्ता और समाज को राहत देने के स्थान पर कुर्सी बचाओ तथा समाज के शोषण का हथियार बन गया। चूंकि उनके भी सफेद झक खादी के भीतर घुन लग गया था। खादी की सादगी तथा सहजता नेताओं के मिथ्याडंबर और मिथ्याचार का पर्याय बन गया। इसलिए आठवें दशक की अधिकांश रचनाएं राजनीति और नेताशाही को अपना व्यंग्य का लक्ष्य मानकर लिखी गयी है। क्या ७० के पूर्व गांधी चरित्र के माध्यम से गांधी के मूल दर्शन की मुद्राराक्षस की 'नाखून या पत्थर, हिमांशु जोशी की 'कोई एक मसीहा' जैसी उन पर तीक्ष्ण टिप्पणी करती कहानी मिल पायगी?

नाखून या पत्थर' फैंटेसी शिल्प में लिखी कहानी है जिसमें गांधी ही प्रमुख पात्र हैं जो अपने में चरमकोटि के अहिंसावादी और सत्याग्रही हैं। और सत्तापक्ष के पाखंड को मिटाने के लिए युवा लोगों का समर्थन या विरोध प्रदर्शन करते हुए सत्ता पक्ष की पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं और अंततः उन्हें समाज के इस बिगड़े हुए माहौल में चमकती रिवाल्वर निकाल हिंसा की नीति का शिकार होना पड़ता है अर्थात वे हिंसा के पक्षधर हो जाते हैं। कैसी विडंबना है? व्यंग्य का पैनापन इस कहानी को नयी अर्थवत्ता देता है। यहां जितना व्यंग्य भावात्मक है उससे कहीं अधिक गांधी के कार्यव्यापारों में मुखर है। इस कला में मुद्राराक्षस को महारत हासिल है।

इसके विपरीत इस दशक में कहानीकारों का जिस विचारधारा के प्रति सर्वाधिक आकर्षण बढ़ा है वह है—मार्क्स और लेनिन अर्थात द्वंद्वात्मक भौतिकवादी जीवन दृष्टि के प्रति आग्रह जो वामपंथी चिंतन के नाम से पुष्पित और पल्लवित हुआ है जिसमें मनुष्य की कल्पना मात्र सामाजिक, आर्थिक और भौतिक जीव के रूप में की गयी है। इस मनुष्य में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना के स्तरों का अभाव है। (ऐसी कल्पना अध-कचरे वामपंथियों की हो सकती है, सच्चे वामपंथियों की नहीं।—सं०) इस-

लिए इस दशन म एक सपूण भारतीय मनुष्य की कल्पना साकार होनी नही दिखती। यही इसका एकागीपन है। इस प्रवृत्ति की छवि भारतीय परिवेश से प्रसूत नही लगती, बल्कि यह मनुष्य [illegible] औद्योगिक नगर तथा सभ्यता का वशज प्रतीत हाता है। वर्शर्ते स्वत[illegible] भारत का द्रुत गति से औद्योगीकरण हुआ है। पूजीवादी ताक्तें दिन प्रतिदिन सुरसा सा मुह वढा सव कुछ लील लेन को तत्पर हुई ह। उसी अनुपात मे व्यावहारिक और रचनात्मक दोना स्तरो पर इसका विरोध वढा है। फिर भी हम यह मानने म जरा भी सकोच न हाना चाहिए कि हमारे देश म अन्य देशा जैसा न तो पूजीवाद विकसित हुआ है और न औद्योगिक सभ्यता ही। यहा पर पूजीवादी प्रवत्ति अथवा ताक्ते सामतशाही का ही परिवर्धित सस्करण है। इसलिए नव सामतवाद भी उतना ही आलाचना का पात्र है जितना कि पूजीवाद। यह भी कम आश्चयकारी नही है कि भारत म जिस गति स औद्योगीकरण नही हुआ उससे कही अधिक तीव्र चाल मे उद्योगहीन नगरो म औद्योगिक सभ्यता क गुण मनुष्य म पनपे है। अभिप्राय यह है कि हमारा रचनाकार इन प्रवत्तियो की इस असगति पर ध्यान नही दता ह। वह उस प्रवत्ति को ज्यो का त्यो उतार लेना चाहता है। यह कहना यहा अनुचित न होगा कि इस विचारधारा का प्रत्याख्यान भारतीय सभ्यता और मनुष्य क परिवेश की नियति के साथ जाडकर कम ही देखा गया है। फलत एक औसत भारतीय मनुष्य की तस्वीर कहानी म कद हाते हाते रह गयी। उसकी जगह पर हमन एक ऐस मनुष्य का चित्र गढ डाला, जा मात्र औद्योगिक नगरो या शहरा म ही दिखता है। इसलिए उसका सघष भी किसी वड समाज का प्रतिनिधि नही बन पाता है। वह मात्र उद्योगशालाओ के भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपन परिश्रम का उचित हक लेने तक सीमित होकर रह गया। यही पर लडाकू नायक की सष्टि हुई। यह नायक इतना सघषधर्मी हो गया है कि व्यक्तिगत जीवन के राग विराग उसके लिए नगण्य हो गय। अत मानने का विवश होना पडता है कि आधुनिक समाज का मनुष्य क्या इस हद तक व्यक्तिगत जीवन के सुख दुख स रहित हो गया है ?

अध्यात्म के नाम पर हाने वाल धार्मिक मिथ्याडबर हमारी आला

चना के केंद्र हैं, किन्तु देखते हम यह है कि इस सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य का झुकाव अध्यात्म की ओर बढा है। साथ ही धार्मिक मिथ्याडंबर भी, लेकिन कोई भी कहानी इस विजन को लेकर पूरे दशक में चिराग लेकर ढूढने से भी नही मिलती जो इस धार्मिक पाखड पर करारा प्रहार करती हो। सच तो यह है कि मार्क्स ने भी कही आध्यात्मिक-सास्कृतिक चेतना के विपरीत विचार व्यक्त नही किये है।

यह वामपथी रुझान इस दशक की सर्वाधिक कहानियो में दिखायी देती है, लेकिन यह प्रगतिशीलता नई कहानी के जमाने मे मानव की भावानुकूल जीवन स्थिति के प्रति एक रोमांटिक एटीच्यूड को लेकर आया था। इस बार मनुष्य के जीने के सामाजिक-आर्थिक सघर्ष के रूप में आया है। इस चेतना को दर्शाती इस दशक मे कई एक उल्लेखनीय कहानिया लिखी गयी हैं। किन्तु यहा हम केवल चार कहानिया पर ही चर्चा करेंगे—धीरेंद्र अस्थाना की 'लोग हाशिए पर', कामतानाथ की 'तीसरी सास', उदय प्रकाश की 'टेपचू' तथा सजीव की 'तीस साल का सफरनामा'।

'लोग हाशिए पर' 'तीस साल का सफरनामा' कहानी के परपरागत रूपबंध की लीक से हटकर उसे एक चुनौती सी देती प्रतीत होती है। दोनो में एक सनक किस्सागो का अदाज है। इनके शिल्प में नवीनता है निपुणता नही। शिल्प का कच्चापन एक सीमा तक आकर्षक भी लगता है कि रचनाकार का अनुभव ससार बहुत व्यापक है जिसके लिए कहानी का परपरागत ढाचा उसे अपर्याप्त लगता है। वह छूट चाहता है, इस छूट लेने की प्रक्रिया में रचना में स्वत सतर्कता का गुण बढता गया है। यदि हम इन गुणो के कारण मुक्तिबोध को सराहते नही थकते तो हम इन दोनो कथाकारो की सराहना करनी होगी।

'लोग हाशिए पर' में प्रेस को प्रतीक मानकर पूजीवादी तानाशाही तत्र भीषण दमनचक्र से छटपटाते प्रेस कर्मचारियो की पीडा को आवाज दी गई है। और इन सबके बीच एक लेखक है जो सभी दशाओ को लिपिबद्ध करता है। अनत जीवन की इस बीभत्सता से वह पागल हो जाता है। यहा रचना के माध्यम से रचनाकार की प्रतिबद्धता का प्रश्न, कहानी के परपरागत स्वरूप की आलोचना, रचनाकार की सामाजिक छवि को लेकर धूमिल जमा

कुछ साहस और प्रयास दिखता है जो इसे उल्लेखनीय बनाता है, किन्तु जितना आग्रह रचनाकार का प्रेम का प्रतीक बनाने का है, उस हद तक एक कुशल रचनाशिल्पी की तरह प्रेम प्रतीक बन नहीं पाता है और न ही कल्पना प्रवणता के माध्यम से पाठक को उसके वृहत्तर आयामों में ले जा पाता [redacted] । यही इस कहानी की सीमा भी है। अपनी सम्पन्न आलोचनात्मक दृष्टि के कारण कहानीकार अपने पक्ष विपक्ष को भी प्रकट करता चलता है। उदाहरणार्थ अधिकारियों के कक्षों में भगतसिंह की बगल में नंगी औरत का चित्र, गांधीजी की नाक के ठीक नीचे शराब का ठेका। अकहानी, निर्मल वर्मा की रचनात्मक प्रवृत्तियों का अस्वीकार, कमलेश्वर का स्वीकार आदि हैं। सारांशतः जीवन को गति को उसके विविध विरोधाभासों में पकड़ने की चेष्टा है, किन्तु निर्मल वर्मा पर प्रहार इसलिए है कि धीरेंद्र भी नामवर सिंह के कथन के चश्मे से उन्हें देख रहे हैं। सच तो यह है कि बाहर से विदेशी से दिखने वाले ताने बाने के बीच उनकी रचनाओं में भारतीय मनुष्य के मन और आत्मा की पवित्रतम संवेदनाओं लगाव-अलगाव के स्वर ही झंकृत एवं मुखर हैं। संस्कृत हिंदी साहित्य के क्लासिक से प्राप्त गुण, प्रकृति और जीव जगत के प्रति अतिरिक्त आत्मीयता तथा इसीके परिप्रेक्ष्य में मानव जीवन की धड़कनों को सुनने समझने की उनमें ईमानदार कोशिश हैं। उस दौर में निर्मल के अतिरिक्त अमरकांत और थोड़ा-बहुत ज्ञानी भी इस दशक में सक्रिय रहे हैं।

सजीव की 'तीस साल का सफरनामा' स्वातन्त्र्योत्तर भारत के बनते बिगड़ते स्वरूप का हल्का फुल्का लेखा है। इसे वे इत्तफाक से सुरजा के जन्म से जोड़कर देखते हैं। यह कहानी अपनी शिल्पगत चारुता और वस्तुगत व्यापकता के कारण प्रशंसनीय लगती है। इसमें सरकार द्वारा चलाये जाने वाले आम जनता के लिए राहत कार्य, योजनाएं, उस बीच में गड़प करने वाले लोग तथा इन सबके बीच में सुरजा की एक किसान से मजदूर बनने की नियति, फिर उसे मिरगी आने पर नबरदार का जूता सुंघाया जाना सुरजा ही नहीं, भारतीय कृषक जीवन के जबर्दस्त हॉरर को सामने लाता है। सुरजा के चरित्रांकन में रचनाकार की कल्पना प्रवणता कहीं-कहीं कविता की ऊंचाइयों को भी छूती है। मसलन सुरजा ने देशभ्रमण

नहीं किया, किंतु वह बता सकता है कि समुद्र और रेगिस्तान कैसा होता है। लेकिन इस कहानी म जो अमात है वह है कथ्य का तारतम्य सम्यक रीति स उसके प्रस्तुतीकरण और निर्वाह का अभाव। हालांकि यह दोष तीव्र कथा प्रवाह के कारण ढक जाता है। तीस साल का कालखंड कम नहीं होता, फलत रचनाकार की दृष्टि बहुत को तीस वष है किंतु उनका ब्योरा ही यथाथ मात्र वर्षों के हवाले का प्रस्तुत कर चूक जाता है। होना यह चाहिए था कि उस लम्बे कालखड की कुछ विशिष्ट घटनाओं, स्थितियों और ब्योरों को एकत्रित कर फिर चरित्रों के माध्यम स आजादी के बाद की विसगति को उभारा जाता। 'टेपचू' और 'तीसरी सास' कहानी के परंपरागत ढाचे म रहते हुए नख से शिख तक चुस्त-दुरुस्त भाव की कहानियां हैं। कदाचित इसलिए इनम किसी जायगी का आभास नहीं होता है। किन्तु 'टेपचू' जहा गाव का पष्ठभूमि पर विकसित होते नायक के जीवन की इतिवत्तात्मक सघष गाथा है, वहीं तीसरी सास' एक केबिनमन के साधारण जीवन की असाधारण हरकत और सघष की कहानी है। दोनों ही आम आदमी और प्रभूत सघर्षी है। किन्तु इनकी पराजय म भी जयघोष के चिह्न छिपे हैं। यहीं रचनाकार अपनी कल्पना प्रवणता से नयी अभिव्यक्तिया का आविष्कार करता है। मसलन, टेपचू को पुलिस सघष म मत घोषित किये जाने पर जाच के अन्तिम मोड पर वह अचानक जीवित होकर कहता है, "मुझे बचा लो डाक्टर। मुझे इन्हीं कुत्तों ने मारा है।" उसका यह कथन विपक्षियों को हैरान कर देता है। उसके इस कथन म जिजीविषा और आशा है। इसी तरह 'तीसरी सास' का केबिनमन पुल के बन जान म अपने भविष्य को असुरक्षित महसूस करता है और उद्घाटन के अवसर पर जब मंत्री आते हैं तो दोनों ओर फाटक बदकर ट्रैफिक जाम कर विरोध प्रकट कर मत हो जाता है। ऐसे प्रसग जो पढ़ने में थोडा अतिरजित और अस्वाभाविक स लगते हैं, किन्तु ऐसी घटनाओं की कल्पना द्वारा रचनाकार न शोषित मानवता का विद्रोह और उनके सघष की अजेयता का व्यक्त कर उस पक्ष पर अपनी आस्था व्यक्त की है किन्तु 'टेपचू' का इकहरापन जहा उसे कमजोर साबित करता है, वहीं 'तीसरी सास' की सश्लिष्टता-अथ सांकेतिकता उसे विशिष्ट बनाती है। कहा जा सकता है कि साधारण

मे असाधारण गुणो की खोज इस दशक की प्रवृत्ति रही है। हबीब कैफी की 'मजमबाज, इब्राहीम शरीफ की कई सूरजा के बीच', आलमशाह खान की किराय की कोख, स्वदेश दीपक की 'तमाशा', कमलेश्वर की इतने अच्छे दिन ऐसी ही कहानिया है। इनम आर्थिक, सामाजिक विसगति और उनके प्रति व्यग्य ही प्रमुख है। किन्तु मुझे लगता है कि आलमशाह खान, स्वदेश दीपक और सुरेश सेठ अपनी तमाम जनपक्षीय प्रतिबद्धता के बावजूद स्मार्ट लेखक अर्थात प्रदशनात्मक ही अधिक है।

आठवें दशक म रचनाकारो की यह दृष्टि और मानव जीवन के राग-विरागा की समझ केवल शहरी परिप्रेक्ष्य म विकसित न होकर कस्बा और गावा के परिप्रेक्ष्य म भी विकसित हुई है। किन्तु गाव और कस्बे की यह समझ रेणु, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह की उत्तरवर्ती कहानियो की मूल चेतना से पथक न होकर उन्ही के विभिन्न अभिनव जीवन आयामो को आविष्कृत करते हुए उनसे जुडती है। कि तु इन रचनाकारो की रचनाओ मे गाव, कस्बा के जीवन की समस्याए राजनीतिक मनोभावो की गुत्थियो को उनके इकहरेपन म न पकडकर सश्लिष्ट और जटिल जीवनानुभवा के मध्य पकडनी है। जटिल जीवनानुभवो की यह पकड हम जितनी मार्कण्डेय म मिलती है उतनी शिवप्रसाद सिंह की रचनाओ म नही।

बलराम की 'शिक्षाकाल' तथा ओम गोस्वामी की 'दद की मछली' गाव के जीवन सघप और समस्याओ का अपनी तरह से साक्षात्कार कराती ह। यो तो बलराम न गाव को लेकर कई कई कहानिया लिखी है, किन्तु जो बात 'शिक्षाकाल म है वह उनकी बहुप्रशसित कहानी 'कलम हुए हाथ म भी नही है। क्योकि कलम हुए हाथ' पराभुक्त अनुभव की कहानी है, जबकि 'शिक्षाकाल' गाव म बालक की शिक्षा की समस्या, वजीफा और परिवार द्वारा बालक के शोषण की कथा कहती है। इसमे एक नया दृष्टिकोण है। यदि गाव के परिवेश के ताने बाने को इसमे से हटा द तो यही कहानी आधुनिक समाज म बालक की शिक्षा की समस्या को गम्भीरता स बडे पैमाने पर दर्शाने लगती है। विनोद दास की 'चिडिया इसी समस्या से सघष करते पात्र के मानसिक तनाव को व्यक्त करती है। तनाव का बिंदु सवेदना की सघनता से इस कविता के निकट ले जाता है।

शिवमूर्ति ने बहुत कम कहानिया लिखी है, किन्तु कम लिखकर भी उल्लेखनीय कथाकारो की श्रेणी मे आने का कारण उनकी सम्पन्न कथा-दृष्टि है। 'कसाईबाडा' एक प्रतीक है उस गाव का, जहा के सम्पन्न उच्चवर्गीय लोग तथा अधिकारी आदि सब कसाई है। जो सामूहिक विवाह का खेल रचा गाव की बहन-बेटियो को अमीरजादो की शय्या सगिनी बना देते हैं। बहू को बलात् देह बेचने वाली नारी का पर्याय्य बना देते हैं। इससे नृशसतापूर्ण और मानवता की हत्यारी भला और कौन भावना हो सकती है। लेकिन मानवता के इन हत्यारो के विरुद्ध शनिचरी एक आदोलन छेडती है, जिससे एक बार वह तत्र काप उठता है किन्तु जब सभी हाथ खीचने लगते हैं तो जनता अपना निर्णय स्वय करती है और एक चिता की रचना कर उसमे प्रधान और उनके लडके के पुतले को जलाती है। इस तरह एक प्रतीक द्वारा मानवता विरोधी ताकतो का प्रतिकार प्रकट हुआ है। इसमे अधुनातन नेताओ की टच्ची प्रवत्ति पर भी प्रहार है। यह कहानी अपने कथा प्रवाह और निर्वाह दोनो ही कारणो से, गहरी अर्थ छवियो के कारण उल्लेखनीय बन पडी है।

यहा तक आते आते जनता का विश्वास न्यायतत्र, प्रशासन की व्याय निवरण व्यवस्था, पुलिस के सुरक्षा कवच के नीचे छिपी सुरक्षा की भावना से डिग गया। देश मे आपातकाल किस तरह से विवेकवान होने का ढिढोरा पीटता विवेकहीन आचरण कर रहा था इन सब भावनाओ को वीर राजा की 'मैं वह तिलकराम नहीं हू', रमेश बतरा की 'लडाई जारी हैं' राजकुमार गौतम की 'दूसरा भगत सिह' आदि कहानिया व्यक्त करती हैं।

मैं वह तिलकराम नही हू' आपातकाल मे अधिकारियो की मदाधता और उनकी विवेकहीनता, डर पर तीक्ष्ण टिप्पणी है। अपराधी तिलकराम की जगह निरपराध तिलकराम को पुलिस हिरासत मे-से उसे वही तिलकराम साबित करना चाहती है। इसमे पुलिस की क्रूरता और आम आदमी की आवाज का इस तत्र मे घुटकर दम तोडने की नियति की अभिव्यक्ति मिली है। फॅटेसी के द्वारा तिलकराम की' त्रासदियो को बडी सघन अभिव्यक्ति रचनाकार ने दी है। शायद यही उद्देश्य भी इस कहानी का है किन्तु रचना का पाजिटिव एप्रोच एक सकेत द्वारा उभारे गया है कि दलत

कार तिलकराम के हाथ म एक पत्थर को दिखाता है जिससे वह अपने अत्याचारो का प्रतिकार करना चाहता है, लेकिन अन्तत वह पाता है कि वह अपने पक्ष म अकेला अश्वत्थामा है और विपक्ष म पूरा तत्र खडा है और वह बुझ जाता है।

कुवरनारायण की 'जूते', प्रदीप पत की 'आम आदमी का शव' अच्छी फैंटेसी हैं किन्तु कुवरनारायण की कहानिया तमाम गुणा और विशिष्टताओ के होते भी दशक की रचनाओ पर कोई प्रभाव नही डाल पाती हैं। इसका कारण उनकी सख्या की अत्यल्पता और प्रकाशन म अवधि का लम्बा अन्तराल है। जवाहर सिंह की 'गुस्से मे आदमी', वल्लभ सिद्धार्थ की ब्लैक आउट', मनोपराय की 'श्मशान से लौटते हुए' ऐसी ही कहानिया हैं।

दूसरा भगतसिंह आधुनिक युग म भगतसिंह के जीवन स्तरा पर विरोध करते इसकी कल्पना को साकार करती है। जसे 'कसाईवाडा' अपनी मूल भावना मे 'विजयदशमी' की कहानी के ट्रेंड से मिलती जुलती है, उन्ही सस्कारो को जगाती है। इसमे भगतसिंह उचित न्याय न पाने के कारण न्यायाधीश तायल साहब की हत्या को विवश होता है किन्तु यह प्रतिकार है किस स्तर का? मुझे लगता है कि यह प्रतिकार स्थूल और आवेग जन्य बदले की भावना से प्रेरित है। समाज मे भी इसे निम्न कोटि का साहस माना जाता है और रचना म तो है ही। यदि थिरचित्त से रचनाकार विचार करता तो इस भावना के लिए वह रचनात्मक स्तर पर नयी अन्विति या का आविष्कार कर लेता।

यह कहना अत्युक्ति न होगी कि आठवें दशक की रचनाओ म थिर भावनाओ सवेगो की जगह अधिकतर स्थूल और उनका आवगजन्य प्रतिकार ही अधिक मुखर है। फिर भी अनत कथा सभावनाओ के द्वार भी इसी दशक मे खले हैं।

हिन्दी कहानी, गाव और भाषा

बलराम



गाव के बदलते हुए परिवेश और रिश्तो को पकड पाने के लिए जरूरी है कि गाव के उन खास शब्दो को पकडा जाय, जिनकी जडें देश की माटी म बहुत गहराई तक धसी हुई हैं और ग्रामीण मुहावरो तथा लोकोक्तियो के सदर्भो को समझदारी स समकालीन परिवेश से जोडकर कहानी मे प्रयुक्त किया जाय। यह तभी सम्भव है, जबकि लेखक को उस परिवेश की खासी समझ हो और उस जिन्दगी के साथ पूरी सवेदना के साथ साझेदारी भी।

कभी कभी ऐसा करने की सायास और ऊल जलूल कोशिशें भी की जाती हैं। तब लगने लगता है कि भाषा बनावटी है और वह आरोपित-सी लगने लगती है। जिंदगी के बीच से उठायी गयी भाषा म अपनी एक आब होती है अपना एक रग होता है और तब वह भाषा कई कई आयाम खोलती है। बनावटी भाषा से आयाम नही खुलते, अर्थों की धक्का-परेड होती है और वह भाषा भी थिगली की तरह चिपकायी हुई लगने लगती है। मेरी समझ स किसी भी लेखक की निजता और पहचान मे भाषा मुख्य रोल अदा करती है। सदर्भ चाहे भाषा का हो या कथ्य का वह जनसपर्क स ही उपलब्ध होता है। एक लेखक की हैसियत से उस भाषा और कथ्य को सस्कार देने भर का काम लेखक को करना होता है और जो लेखक ऐसा नही करते, उनकी रचनाओ से जनमानस मे कोई खास प्रतिक्रिया नही होती।

भाषा के माध्यम से कोई लेखक अपनी अलग पहचान भी कायम करता है। ग्रामीण परिवेश के लेखक के पास खासतौर से ऐसी शब्दावली और मुहावरे होने चाहिए कि वह गाव, गाव के आदमी और उसकी जिंदगी का

लेखक मे कहानी को कलात्मक परिणतियो तक पहुचाने की क्षमता भी होनी चाहिए। तभी एक सही और यथार्थवादी कहानी लिखी जा सकती है। पिछले दिनो डॉ० रामविलास शर्मा का एक वक्तव्य मेरी नजरो से गुजरा, जिसे उदधृत करने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हू। उन्होने कहा था, "भारत म यथार्थवादी लेखन करने के लिए किसानो के जीवन का जीवत चित्रण जरूरी है।" प्रेमचद इसी चित्रण के बल पर महान यथार्थवादी रचनाकार है। जो लेखक किसानो और मजदूरो के जीवन का यथार्थवादी चित्रण नही करता, वह अच्छा लेखक नही हो सकता। किसानो और मजदूरो के जीवन को जाने बिना और उनका जीवत चित्रण किये बिना प्रगतिशील लेखन सभव नही है। किसी लेखक का मार्क्सवादी होना या किसानो मजदूरो के आदोलन से जुडा होना इस बात की गारटी नही है कि वह प्रगतिशील लेखक होगा ही। अगर यह बात होती तो हर ट्रेड यूनियनिस्ट प्रगतिशील लेखक होता। हर मा अपने बच्चे को प्यार करती है लेकिन उस प्यार के बारे मे कविता या कहानी नही लिख सकती।

साहित्यकारो से समाज चाहता है कि वे उसे सही बात बताए और सही बात को सही ढग से बताए। इसके लिए धरती की पकड, आदमी की पहचान और अभिव्यक्ति की क्षमता—ये तीनो चीजे निहायत जरूरी हैं।"

डॉ० शर्मा के इस कथन के आलोक मे हालाकि तीन चौथाई कहानीकार अपना आसन डगमगाता हुआ महसूस करेंगे, पर बात यह खरी है, जिस पर गभीरता से विचार किया जाना चाहिए। यह एक खुली सच्चाई है कि हमारे लेखको ने ग्रामीण परिवेश पर अधिक ध्यान नही दिया और दिया भी तो उतना नही दिया, जितना देना चाहिए था और उतनी ईमानदारी से नही दिया, जितनी कि अपेक्षित थी। भारत अतत एक ग्राम प्रधान देश है। पिछले कई दशको म हमारी कहानिया से गाव लगभग नदारद रहा है, यह चिंता का विषय है। खुशी है कि अब हमारे लेखको को इसका एहसास हुआ है और इक्का-दुक्का ही सही गाव की सही कहानिया आ रही है। मेरा विश्वास है कि साहित्य की इस परम शक्तिशाली विधा का अगला गाव म जुडकर ही होगा और निश्चित रूप से होगा।

सहयात्री रचनाकार

☐ **केशव** ग्राम टब्बर (हिमाचल प्रदेश) में जन्म (८ अप्रैल, १९४९ ई०) पाँच कविता संग्रह 'शहर का दुख', 'एक सूनी यात्रा', 'रोशनी की आवाज़ में अलगाव तथा 'ओ पवित्र नदी' और दो कहानी संग्रह 'फासला' तथा अलाव प्रकाशित। संपर्क पाइन हिल कॉटेज, शिमला १७१००२ (हिमाचल प्रदेश)

☐ **नरेंद्र मौर्य** हरदा (मध्य प्रदेश) में जन्म (२२ सितंबर, १९४८) दो कहानी संग्रह कोलंबस जिंदा है तथा 'प्रस्थान' और एक उपन्यास तलाश जारी है प्रकाशित। एक कहानी पर कला फिल्म साथ-साथ बनी और काफी सराही गयी। लघुपत्रिका 'आदमी' का संपादन प्रकाशन। संपर्क गढ़ीपुरा हरदा (म० प्र०)

☐ **नासिरा शर्मा** इलाहाबाद में जन्म (१९४७ ई०) 'शामी कागज', 'पत्थर गली' (कहानी संग्रह) तथा 'सात नदियां एक समुंदर' (उपन्यास) प्रकाशित। ईरानी जीवन साहित्य और संस्कृति की विशेषज्ञ। संपर्क १०८ उत्तराखंड, न्यू कैंपस जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

☐ **राजेश जोशी** नरसिंहगढ़ (म० प्र०) में जन्म (१८ जुलाई १९४६) 'एक दिन बोलेंगे पेड़' (कविता संग्रह), सोमवार तथा अन्य कहानियां' (कहानी संग्रह) 'जादू जंगल (नाटक) तथा मायकोवस्की की कविता पुस्तक का अनुवाद। दूसरा कविता संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। संपर्क एम० आई० जी० ६६ सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल (मध्य प्रदेश)

☐ **सच्चिदानद धूमकेतु** बिहार मे जन्मे, पले, बढे, पढे और वहीं पर प्रशासनिक अधिकारी। बिहार के कथाकारो मे एक चर्चित नाम। 'माटी की महक' आपका बहुचर्चित उपन्यास है। लगभग एक दजन कृतिया प्रकाशित। सपर्क गुरुगोविंदसिंह माग, हजारी बाग (बिहार)

☐ **सुदीप** लायलपुर (अब पाकिस्तान म) मे जन्म (१९४२ ई०) नीड', 'साधूसिंह परचारी' (उपन्यास) तथा 'अतहीन', 'तीए से अठा' (कहानी सग्रह) प्रकाशित। सप्रति 'धमयुग' के सपादकीय विभाग से सबद्ध। सपर्क एन ४/१३, सुदरनगर, एस० वी० रोड, मालाड (वस्ट) बबई ४०००६४

☐ **सजीव** सुलतानपुर मे जन्म (१९४७ ई०) 'किसनगढ के अहेरी', 'सकस' (उपन्यास), तीस साल का सफरनामा', 'आप यहा है' (कहानी सग्रह) प्रकाशित। कोयला खदानो की जिंदगी पर एक उपन्यास सतह के ऊपर, सतह के नीचे' शीघ्र प्रकाश्य। सपर्क मुख्य प्रयोगशाला इस्को, कुलटी-७१३३४३ (पश्चिम बगाल)

☐ **सुनील कौशिक** मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) मे जन्मे सुनील कौशिक ने लिखना बहुत देर से शुरू किया, मगर शुरू हुए तो जमकर लिखा। 'अधेरे का सैलाब' (कहानी सग्रह) तथा ढलती धूप' (उपन्यास) लघुपत्रिका 'कथानक' का सपादन। सपर्क के-७४, न्यू स्कीम, यशोदा नगर, कानपुर-२०८०११ (उत्तर प्रदेश)

☐ **हनुमत मनगटे** मूलत कहानीकार पर व्यग्य रचनाए भी लिखी है। पहला कहानी सग्रह 'सामना' प्रकाशित। इन दिनो एक उपन्यास पर काम कर रहे हैं। सपर्क वदना मुद्रण, बुधवारी, छिंदवाडा (मध्य प्रदेश)

☐ **सुशीलकुमार फुल्ल** हिमाचल प्रदेश के रचनाकारो म एक उभरता हुआ नाम। कई कृतिया प्रकाशित। पहला कहानी सग्रह मेमना' शीघ्र प्रकाश्य। सपर्क हिंदी विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश)

☐ **अवधेश श्रीवास्तव** इगवा (उत्तर प्रदेश) मे जन्म (१० जनवरी, १९५३ ई०) पहला कहानी सग्रह 'आवाज प्रकाशित। पहला उपन्यास 'रक्तभूमि' प्रकाशनाधीन। सपर्क तिरुपति प्रकाशन, प्रेमपुरा, हापुड (उत्तर प्रदेश)

☐ पुन्नी सिंह ग्राम मिलावली (उत्तर प्रदेश) में जन्म (१ अगस्त, १९३९) एक कहानी संग्रह 'काफिर तोता', एक नाटक 'रेजागला' प्रकाशित। संपर्क १७८, तानसेन नगर, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

☐ मालती ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में जन्म (१४ जुलाई, १९५४ ई०) पहला कहानी संग्रह 'सुनो पालनहार' प्रकाशित। लघुकथा संग्रह 'चंद्रमा और लहरें' प्रकाश्य। संपर्क व्याख्याता, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कुरवाई, जिला विदिशा (मध्य प्रदेश)

☐ संतोष तिवारी कानपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्म (१ नवंबर, १९५८) लेखन की शुरुआत कहानियों से की। फिलहाल समाचार साप्ताहिक 'दिनमान' में संबद्ध। पहला कहानी संग्रह 'फंदा' प्रकाश्य। संपर्क दिनमान, १०, दरियागंज नयी दिल्ली ११०००२

☐ हृषीकेश सुलभ बिहार की नयी पीढ़ी के चर्चित कथाकार। रंगमंच और राजनीतिक गतिविधियों से संबद्ध सुलभ की रचनाओं में ग्रामीण भारत का दुख दर्द उभरा है। संपर्क आकाशवाणी केंद्र, पटना (बिहार)

☐ गिरीशचंद्र श्रीवास्तव सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्म। वहीं एक कालेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक। 'काटा' (कहानी संग्रह) प्रकाशित। 'निष्कष' का संपादन। संपर्क ५९ खैराबाद, सुल्तानपुर (उत्तरप्रदेश)

☐ विनय दास बाराबंकी में जन्मे, वहीं पढ़े और अब औरों को पढ़ा रहे हैं। संपर्क ७५३ पीर बटावन, बाराबंकी (उत्तर प्रदेश)

☐ बलराम ग्राम भाऊपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्म (१५ नवंबर, १९५१ ई०) दो कहानी संग्रह 'कलम हुए हाथ' तथा 'मालिक के मित्र', व्यंग्य संग्रह नेताजी की वापसी, रिपोर्ताज संग्रह प्रतिध्वनियां और समीक्षा कृति समकालीन हिंदी कहानी का सफर प्रकाशित। संपर्क - सारिका, १० दरियागंज नयी दिल्ली ११०००२

☐ मनोजराय जामगांव (मध्य प्रदेश) में जन्म (१४ मई, १९४५ ई०) कहानी संग्रह 'शिलान्यास', लघुकथा संग्रह अनावरण' तथा कविता संग्रह 'एक संकल्प और' प्रकाशित। दूसरा कहानी संग्रह 'टर्नपोल' प्रकाश्य। संपर्क अतिरिक्त जिलाधिकारी, छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)

○○○

आठवें दशक की रचनात्मक प्रवृत्ति अधिकाशत अहिंसात्मक साधनो के विपरीत हिंसात्मक रूपो की ओर बढती गयी है, उसकी मूलचेतना मे शाति की बजाय उग्रता, सहिष्णुता की जगह विरोधात्मकता का गुण कमश प्रमुखता पाता गया है। उत्तरोत्तर वे बातें इस हद तक बढती गयी हैं कि कहानियों मे बडबोलापन तथा वाचालता अतिरिक्त रूप से स्थान पाती गयी है। कहना न होगा कि इस बीच व्यक्ति की मानसिक सोच और चरित्र मे भी किसी सीमा तक इन गुणो का सन्निवेश हुआ है और कहानी रचने को कहानीकारो ने अपनी आत्मा की आवाज के रूप मे पहचाना है। उसे एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप मे महसूसा है।

इस पुस्तक मे सकलित कहानिया इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। पाठको ने इन्हें पसद किया तो जल्दी ही ऐसा एक और सकलन प्रकाशित करने का इरादा है। उम्मीद है कि आप और हम, दोनो मिलकर इसे कामयाब करेंगे।